अथ हनुमन्नाटक भाषा का सूचीपत्र।

इति ॥

श्रीमतेनिम्बार्काय नमः ॥

अथ हनुमान्नाटक भाषा
अर्थात्
श्रीवरविलासः प्रारभ्यते ॥

शालिनीछन्द ॥

वन्दे रामं कोटिकामाभिरामं। मेघश्यामं सर्वदापूर्णकामं ॥ गोविन्दोहंसच्चिदानन्दकन्दं। देवाधीशंजानकीशंजनेशं १ ॥ अनुष्टुब्छन्द ॥ श्रीवरस्यविलासोयं ग्रन्थोरामयशोङ्कितः ॥ हनुमन्नाटकच्छायां गृहीत्वा तन्यते मया २॥ अथ ग्रन्थावतरणिका ॥ शतगुनीस बत्तीस सह १६३२ मेचक श्रावणमास ॥ बुधबासर एकादशी, श्रीबरबरत बिलास ३ पाय कछुक परसंग मम, आगमपुर पिपलोद ॥ दूलह नृप दीन्हों हुकुम, सुनि मन भयो प्रमोद ४ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ एक समै पिपलोदपुरी प्रति गौन गोविन्द तुरन्त तहां है । मन्दिर में गणनायकके निज मन्त्रिनयुक्त जनेश जहां है ॥ नाटककी बरचानि चलाय सुनाय दिये बर बैन वहां है। औ नृप दूलहकी उपमा सम पावत सो नृप कौन कहां है ५ श्रीमत रावत साहब दूलह हेरनमें दरशैं नित हाटक । बिप्र गोविन्द दई उन आय सहीय कृपा-

इति ॥

निहारत आसुर ओघ सुबाहु मारीचिसमेत सबै हैं ॥ श्रीरघुनन्दन कन्द कियो क्षण छांड़ि मरीचि सुजान जबै हैं। कारजलीन कलंक यो जिहिते तिहिको तजिदीन तबै हैं ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ सीताको स्वयंवर सुनत श्रौन कियोगौन, मारगमें शिलारूप अहल्या उधारीहै। जनकपुरी में जाय सबै सतकार पाय, महत महीपनमें पाये शोभ भारीहै ॥ गावत गोबिन्दलखि कोशलकिशोर छबि, चित्रसे भये हैं यत्र तत्र नर नारीहैं। इन्द्रहै कि इन्दुहै कि दिपत दिनेन्द्र किधौं, दशरथनन्द रामचन्द्र बलिहारी है ९ ॥ दोहाछन्द ॥ निरखत निमि नृपनन्दनी, उर उमँग्यो आनन्द ॥ निज मनमधि संकलप कछु, करनलगी स्वच्छन्द १० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कच्छप पीठ कठोर यहै शिवचाप है। कोमल मूरति श्रीरघुनन्दन आपहै ॥ इनते होय अधिज्य कौन यह बात है। परहां ! प्रणदारुण अति कीन अहह तुम तातहै ११ ॥ मनोहरछन्द ॥ लक्षमणलाय लक्षमणते कहत राम, पेखहु पृथीप पुञ्ज पुञ्ज प्रकटान है। जम्बूद्वीप आदि द्वीप द्वीप के महीप आये, कन्या अरु कीर्त्तिलाभ मानत महानहै ॥ बङ्कितकियोकाहु टङ्कित महेशचाप, नमितकियो न कियो उत्थापितथानहै। चढ़ी नाकबान कछु कढ़ीना जबानमुख, मेरे जान बीरताबिहीन भो जहान है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ किय अनन्द रघुनन्दहिय, निज भुज बल बरणन्त ॥ प्रौढ़ी बचन प्रत्यक्षपढ़ि, लच्छ लच्छ हुलसन्त १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ बहुत कहनमें कहा, नाथ सच बचन उचारत। दास शबरो खास, लक्षमणाधिप यह धारत ॥ गिनौं न गिरिवर मेरु, प्रमुख धनुकीका गिनती। अतिशय जीर्ण पिनाक, करौं प्रभुते यह बिनती ॥ मुहिंहोय हुकम मम लखहु बल, कौन कौन कौतुक करैं धकिधरैं मरोरौं मूल जिमि, गहि शतयोजन अनसरौं १४ ॥

टनकी उद्घाटक ॥ सोहत नाटक रत्ननमें मणिमाणिक सों हनु- मान सुनाटक । ग्रन्थ नवीन बनै उहि पन्थ न श्रोणपरैं अन ओघ उचाटक ६ ॥ दोहाछन्द ॥ कारक जगमें मतातते, समझैं सकल र- हेश ॥ फाटक हियरेके खुलैं, नाटक पराडनिशेश ७ आयसु पति पिपलोदकी, लीन्हीं शीश चढ़ाय ॥ पुर शोभा पुरपतिप्रभा, कछु बरणत चितचाय ८ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ थानक थानक होत कथा- नक बानक मङ्गल आनक बाजैं । मन्दिर मन्दिर अन्दर सुन्दर से- वन देव महोत्सवछाजैं ॥ गेहन गेह सनेह सने तुलसी थिरथान विशेष बिराजैं । मोद प्रमोद विनोद भरी पिपलोदपुरी सुचि पै भज भ्राजैं ९ ॥ अथ नृपतिवर्णन अमृतध्वनीछन्द ॥ लइजय बल्लि मतल्लिमहँ बंश बल्लिरावल्ल । दुल्लह रावत खुल्लि तित मल्ल बिदल्लीदल्ल ॥ दल्ल- ल्लखि प्रतिमल्लल्लह नहभल्लल्लजजित । फुल्लल्लोक बिफुल्लल्लोयन धुल्लल्लतित ॥ तुल्लल्लगाकि अतुल्लल्लिय जसभुल्लल्लघुरय ॥ दुल्ल- ल्लखत नभुल्लल्लगत प्रबल्लल्लहिजय १० ॥ अथ सिंहआखेटक वर्णन ॥ लखिबे में नरहत्थके, पञ्चानन बड़मत्थ । तत्थ पत्थ लोहन किये, दूलह नृप दुइहत्थ ॥ हत्थिरत्थदिमहँ मत्थत्थितदुइ चित्तत्थिरतुर । बत्थत्तुबक अकत्थत्थिति समत्त्थत्त्थलउर ॥ तत्थत्तित प्रहरत्तत्ताकि तक्किजित्ततसनखि । कत्थत्तवन कबित्तत्थुइ सर्बत्तत्तवलखि ११॥ अथ गजवर्णन ॥ कटकटात अटकत नहीं, सोहत बारन शुद्ध । लखि कुञ्जर गलगुञ्जरत, उर उद्धत अविरुद्ध ॥ रद्धद्धर अतिक्रुद्धत्तुर जुरियुद्धद्धरभट । घद्धद्धिम घद्धद्धिम घद्धद्धरघ ॥ घद्धद्धा- कट घद्धद्धाकट घद्धद्धाकट । धुद्धद्धुधुकट धुद्धद्धुधुकट धुद्धद्धुधु- कट १२ त्वरवच उचरत महावत भुरजचलगलगज्ज । रावतदूलह कगिलक गिरिकज्जल छविकज्ज छज्ज अतिभर गज्जज्जल-

धर कज्जजयकर । झुज्झज्झुकिझुकिखिज्जिझ्झटिति सुखिज्ज-ज्जराधर ॥ भज्जज्जवसुर गज्जज्जवशिर रज्जाजिनधर । लज्जज्ज-लधि निमज्जज्जडधि सलज्जज्जियल्लर १३ ॥ अथ हयशालावर्णन ॥ दिनदुलहा दुलहानृपति, यशजाहिरदशदिश। होतरहतहयशा-लजिहिं, संगीतकअहनिश ॥ निस्ससस्सरिगम धस्सस्सरिगम प-स्ससस्सरिगम । गस्ससस्सरिगम मस्ससस्सरिगम रस्सस्सरिगम ॥ तत्त थइपुनि तत्तथ्यइपुनि तत्तथ्यइतिन । अस्ससस्सकल नृपस्ससस्सपल निलस्ससस्सदिन १४ ॥ राजकुमारवर्णन दोहाछन्द ॥ भावत मनश-वत कुँवर, उपजावत आनन्द॥ तीनिहुँमतु त्रिभुवन तिलक, उपमा अखिल अमन्द १५ कलित केसरी केसरी, सोहत सदुपम शेष ॥ हिम्मतहिय किम्मतकरन, सकुचत सुकबिअशेष १६ ॥ सोरठाछन्द ॥ कुँवरकनीयसाल, राजत अति रघुनाथहरि ॥ तीनहुँ गुणगणमाल, चितचीनहु सब सुरनर ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरङ्गपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थावतरणिका वर्णननामप्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

तद्ग्रंथनाटिकावतारे ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वापि नान्दीद्वादशभिःपदैः । आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापितन्मुखम् ॥ इति नान्दीमङ्गलवचनं दोहाछन्द ॥ रावत नरपति हुकुमगहि, धिय धरि अमित हुलास ॥ टी-कमसुत गोबिन्दद्विज, श्रीवरवरतविलास १ ॥ मनोहरछन्द ॥ मङ्गल निधान कलिकिल्बिषहरनहार, पावन पदार्थनको पावनप्रकामहै। नान्दीसलवर परनपद प्रापतिको प्रस्थितजे, मनुज मुमुक्षु राहखर्चे अभिराम है ॥ कबिबरबैन बिसरामधाम एकवही, सज्जनको जीवन जरूर बसुयाम है । धर्मबृक्ष बीजहोहु सकल बिभूतिप्रद, रावरसदैव

टनकी उद्घाटक॥ सोहत नाटक रत्ननमें मणिमाणिक सों हनुमान सुनाटक। ग्रन्थ नवीन बनै उहि पन्थ न श्रोणपरैं अन ओच उचाटक ६॥ दोहाछन्द॥ कारक जगमें मतानते, समझैं सकल रहेश॥ फाटक हियरेके खुलैं, नाटक पराडनिशेश ७ आयसु पति पिपलोदकी, लीन्हीं शीश चढ़ाय॥ पुर शोभा पुरपतिप्रभा, कछु बरणत चितचाय ८॥ मत्तगजेन्द्रछन्द॥ थानक थानक होत कथानक बानक मङ्गल आनक बाजैं। मन्दिर मन्दिर अन्दर सुन्दर सेवन देव महोत्सवछाजैं॥ गेहन गेह सनेह सनै तुलसी थिरथान विशेष बिराजैं। मोद प्रमोद विनोद भरी पिपलोदपुरी भुवि पै मन भाजैं ६॥ अथ नृपतिवर्णन अमृतध्वनीछन्द॥ लइजय बल्लि मतल्लिमहँ बंश बल्लिरावल्ल। दुल्लह रावत खुल्लि तित मल्ल बिदल्लीदल्ल॥ दल्लक्षिप्रतिमल्लह नहफल्लजजित। फुल्लोक बिफुल्लोयन झुल्लत्ततित॥ तुल्लगाकि अतुलल्लिय जसमुल्लघुनय॥ दुल्लखत नभुल्लगत प्रबल्लहिजय १०॥ अथ सिंहआखेटक वर्णन॥ लखिबे में नवहत्थके, पञ्चानन बड़मत्थ। तत्थ पत्थ लोहन किये, दूलह नृप इइहत्थ॥ हत्थित्थटिमहँ मत्थत्थिनदुइ चित्तत्थिरतुर। बत्थत्तुवक अकत्थत्थिति समत्थत्थलउर॥ तत्थत्तित प्रहरत्तत्तकि तकिजित्तत्तसनाखि। कत्थत्तवन कबित्तत्थुइ सर्वत्तत्तलाखि ११॥ अथ गजवर्णन॥ कटकटात अटकत नहीं, सोहत बारन शुद्ध। लखि कुञ्जर गलगुञ्जरत, उर उद्धत अविरुद्ध॥ रुद्धद्धुर अतिक्रुद्धत्तुर जुरियुद्धद्धरक्कट। घद्धद्धिन्ना घद्धद्धिन्ना घद्धद्धुनरघ॥ घद्धद्धाकट घद्धद्धाकट घद्धद्धाकट। धुद्धुद्धुधुकट धुद्धुद्धुधुकट धुद्धुद्धुधुकट १२ त्वरत्वम उचरत महावत मुरजबोलगलगज्ज। रावतदूलह कनिकर गिरिकज्जल छविछज्ज छज्ज चेत्रातिभर गज्जज्जल-

धर कज्जजयकर । भुज्भङ्गुकिभुकिविज्जिझटिति सुलिज-
जशवर ॥ भज्जजवसुर गज्जवशिर रज्जिजिनधर । लज्जम-
लधि निमज्जजडधि सलज्जजियत्वर १३ ॥ अथ हयशालावर्णन ॥
दिनदुलह दुलहानृपति, यशाजाहिरदशदिश । होतरहतहयशा-
लजिहिं, संगीतकअहनिश ॥ निस्ससरिगम धसस्ससरिगम प-
स्ससरिगम । गस्सस्सरिगम मस्सस्सरिगम रस्सस्सरिगम ॥ तत्त
थ्थइपुनि तत्तथ्थइपुनि तत्तथ्थइतिन । अस्सस्सकज नृपरसस्सबल
सिलस्सस्सदिन १४ ॥ राजकुमारवर्णन दोहाछन्द ॥ भावत मनरा-
वत कुँवर, उपजावत आनन्द ॥ तीनिहुँमनु त्रिभुवन तिलक, उपमा
अखिल अमन्द १५ कलित केसरी केसरी, सोहत सत्रुपम शेष ॥
हिम्मत हिय किम्मतकरन, सकुचत सुकविअशेष १६ ॥ सोरठाछन्द ॥
कुँवरकनीयरसाल, राजत अति रघुनाथहरि ॥ तीनहुँगुणगणमाल,
चितचीनहु सब सुजनर ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपलनाधिपराजरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविशापितरत्नपुरस्थकवि
टीकारामात्मजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासंग्रन्थावतरणिका
वर्णनंनामप्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

तद्धर्मनादिकावतारे ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वापि नान्दीद्वादशाभिःपदैः ।
आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापितन्मुखम् ॥ इति नान्दीमङ्गलवचनं
दोहाछन्द ॥ रावत नरपति हुकुमगहि, धिय धरि अमित हुलास ॥ टी-
कमसुत गोविन्दद्विज, श्रीवरवदताबिलास १ ॥ मनोहरछन्द ॥ मङ्गल
निधान कलिकिल्विषहरनहार, पावन पदार्थनको पावनप्रकाम है ।
नान्दीसत्वर परनपद प्रापतिको प्रास्थितजे, मनुज मुमुक्षु ताहवर्ष
अभिराम है ॥ कविनरबैन बिसरामधाम एकवही, सज्जनको जीवन
जरूर वसुयाम है । धर्मबृक्ष बीजहोहु सकल विभूतिप्रद, रावरसदेव
गुणग्राम रामनाम है २ कमला कुन्दनपत्र रचना वे चित्ररची ,पकरी

की मुद्रामञ्जु अङ्कित हृदय है । देवसर्वजगदीश मधूवधूबक्रकञ्ज, मुद्रित करनहेतु इन्दुसों उदयहै ॥ क्रीड़ाकाज कियो क्रोडकलित कलेवरहै, द्वैजचन्द जैसी श्वेतदंष्ट्र समुदयहै । तापैदिपै भूमिकढ़ी प्रलय पयोधि मुस्ता,थ मसालसत ऐसोराम सोसुदयहै ३ शैवशिव धारे ब्रह्म बदत वेदान्तवारे, बौद्धमतवारे बुद्ध बुद्धि में विचारे हैं । कर्त्ताकहैं नैयायिक जैनी आर्हन्तरटैं, मीमांसक कर्म एक ईश्वर उचारे हैं ॥ गावत गोविन्दहोहु वाञ्छितफलद प्रभु, रैन दिन रावरे सुधारे काज सारे हैं । वह है त्रिलोकीनाथ सीतानाथ रघुनाथ, न्यारे न्यारे लोक न्यारे रूपते निहारे हैं ४ राम वह रावणारि दशरथसूनु लसैं, लक्ष्मण अङ्गजात सुगुन समेत है । पूज्यपृष्ठ पूर्णअब्धि अन्त लौंप्रतापजासु, सकल सुहाग सिद्धि विद्याको निकेतहै ॥ आनँदको कन्द कलि किल्विष पटलध्वंसि, सौम्यदेव सेवातम सर्वको संकेतहै । त्रिभुवन शरण अशरणको शरण सदा, नित्यनिकलङ्कताहि प्रणवौं सहेत है ५ अवधपुरी को भूप दशरथ होतभयो, सूर्यवंश केतुशूर शत्रुन सँहारी है । बली वीर बिक्रमी करीही पुत्रइष्टि ताने, नारायण तबै तासु आश निरधारी है ॥ दुष्ट दैत्य कष्टभूरि भारभयो भूतलपै, तिनके सँहारहेतु चार मूर्त्तिधारी है । जेष्ठ श्रेष्ठ राम लषण भरतरु शत्रुहन, चारों भ्रात मात तात आयसानुसारी है ६ असुरन भूरि भयभीत मुनि बिश्वामित्र, अवध अधीश अङ्गजात युग याचेहैं । औनिप यशस्वी निज चित्तमें दुचित्तहोय, दीन्हे सुत दोय राम लक्ष्मण राचे हैं ॥ सुन्दासुर सुन्दरी प्रहारी ताटकाभिधान, कौशिकहुजानी नृप बालशूर सांचे हैं । बिद्याहद्य दीनीसद्य अति अनवद्यतदा, काढ़िगे समस्त जे मनोरथमन कांचे हैं ७॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥

कौशिकनन्दन आश्रम आप कियो मखतूरन आप अवे हैं धूम

निहारत आसुर ओघ सुबाहु मारीचिसमेत सबै हैं ॥ श्रीरघुनन्दन कन्द कियो क्षण छांड़ि मरीचि सुजान जबै हैं। कारजलैन कछूक रयो जिहिते तिहिको तजिदीन तबै हैं ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ सीताको स्वयंबर सुनत श्रौन कियोगौन, मारगमें शिलारूप अहल्या उधारीहै। जनकपुरी में जाय सबै सतकार पाय, महत महीपनमें पाये शोभ भारीहै ॥ गावत गोविन्दलखि कोशलकिशोर छबि, चित्रसे भये हैं यत्र तत्र नर नारीहैं। इन्दहै कि इन्दुहै कि दिपत दिनेन्द्र किधौं, दशरथनन्द रामचन्द्र बलिहारी है ९ ॥ दोहाछन्द ॥ निरखत निमि नृपनन्दनी, उर उमँग्यो आनन्द ॥ निज मनमधि संकलप कछु, करनलगी स्वच्छन्द १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कच्छप पीठ कठोर यहै शिवचाप है। कोमल मूरति श्रीरघुनन्दन आप है ॥ इनते होय अधिज्य कौन यह बात है। परहां। प्रणदारुण अति कीन अहह तुम तातहै ११ ॥ मनोहरछन्द ॥ लक्षमणलाय लक्षमणते कहत राम, पेखहु पृथीप पुञ्ज पुञ्ज प्रकटान हैं। जम्बूद्वीप आदि द्वीप द्वीप के महीप आये, कन्या अरु कीर्त्तिलाभ मानत महानहै ॥ बङ्कितकियोकाहु टङ्कित महेशचाप, नामितकियो न कियो उत्थापितथानहै। चढ़ी नाकबान कछु कढ़ीना जबानमुख, मेरे जान बीरताविहीन भो जहान है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ किय अनन्द रघुनन्दहिय, निज भुज बल बरणन्त॥सौंढ़ी बचन प्रत्यक्षपढ़ि, लच्छ लच्छ हुलसन्त १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ बहुत कहनमें कहा, नाथ सच बचन उचारत। दास राबरो खास, लक्षमणहिय यह धारत ॥ गिनौं न गिरिवर मेरु, प्रभुत्व धनुकीका गिनती। अतिशय जीर्ण पिनाक, करौं प्रभुते यह बिनती ॥ सुहिंहोय हुकम मम लखहु बल, कौन कौन कौतुक करौं धाकिधरौं मारौं मूल जिमि, गहि शतयोजन अनुसरौं १४ ॥

सोरठाछन्द ॥ सुबचनसुनि श्रीराम, नीति निलय निज अनुजके॥ रघुकुलमणि गुणग्राम, किय निषेध हगसैनकरि ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपावरावलजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामलक्ष्मणसंवादो
नामद्वितीयोल्लासः॥ २ ॥

दोहाछन्द ॥ लाग्यो रावण पुरोहित, बतरावन निमिनाथ ॥ निपति दुहिता रावरी, चितचाहत दशमाथ १ ॥मनोहरछन्द॥ देनी है अवश्य मयदुहिता कहूं न कहूं, लेनी चहै लङ्काधीश चितमें विचारिये । जाके गुणगावें महामुनि मरिच्यादि प्राच्य, धरनीकी रेणुते विशेष धियधारिये ॥ परमप्रचण्ड दोरदण्डन प्रतापनते, त्रिभुवन लोक लोक मच्छरनिहारिये । ऐसे अवलम्ब आहि कीजिये विलम्ब नाहिं, अद्य अविलम्ब आप कारज सुधारिये २ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ असुर पुरोहित पठत राम प्रति बैनहै । धियधारी लङ्काधिराज सिय लैनहै ॥ चितचाहत जो श्रेय निजेच्छा छण्डिये । परहां । त्रिभुवन विजयी संग बैर नहिं मण्डिये ३ बदत बचन बैदेह पुरोहित पेखिये। यह माहेश्वर धनुष दृष्टिदे देखिये ॥ करिहै याहि अधिज्य सुता सो पायहै । परहां । अपर सबै क्षितिनाथ आय जिमि जायहै ४ पढ़त पुरोहित सुनो जनक महराजजू । अवलोकत भुज बीस कितक यह काजजू ॥ क्षणमधि चूरण करत धरत नहिं धीरहै । परहां । निज गुरु शिवधनु हेरि सुबिकल शरीरहै ५ बिहँसि बदत मिथिलेश पुरोहित जू रहो । शम्भु बास कैलास लियोकर किमि कहो ॥ गृह उखेरतो बेर कियो अविवेक है । परहां । अब भय क्यों गुरुभाव गही धनुऐकहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥ जिमि लीनो कैलास करि, तिमि धनु कीजै सज्य ॥ नातर निलय सिधाइये, उर आशय संत्यज्य ७

कहा, समझि परत नाहिं सार ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ क्षुद्र सकल क्षिति-पाल सुअखिल असक्त है ॥ अष्टयाम दशग्रीव ईश अनुरक्त है ॥ धनुषारोपण शुल्क सुलक जाहिर कियो। परहां। कसहू है सिय हाय कहत नृप भरि हियो ९ ॥ श्रीवैदेहीवाक्यं ॥ कोमल मूरति कोशलराज किशोर है। शम्भु शरासन कमठ सुपृष्ठ कठोर है ॥ केहि विधि होय अधिज्य असम्भव बात है। परहां। अति दारुण प्रण कियो अहहु तुम तात है १० ॥ दोहाछन्द ॥ बैदेही बर बचन सुनि, नीर भरे नृप नैन ॥ तबै पुरोहित क्षोभ करि, कहन लग्यो कछु बैन ११ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ संयुत शम्भु शिवागणनायक स्कन्द ननन्दि गिरिन्द्रउठायो। विक्रम बेश पराक्रम पुञ्ज दशाननको क्षितिछोरन छायो ॥ भूप बिदेह बिचार करौ हिय चाप चढ़ावन वाहि बतायो। आवत मोहिं अचम्भ महा इहिमें तुमका पुरुषारथ पायो १२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ उपरोहित आक्षेपकरि, उरउमंग अधिकाय ॥ जनक सुनावत सब नृपन, तब निज भुजाउठाय १३ ॥ जनकउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ शम्भुशरासन मध्य महागुरुतागई। बीस भुजनकी शक्ति जहां कुण्ठितभई ॥ ऐसेको इत आहि याहि सज्जितकरे। परहां। त्रिभुवन बिजय बिभूति सीय ताको बरै १४ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनि बिदेह नृपबोल, श्रीरघुनन्दन उमँगिउर ॥ लखत सुलोचन लोल, जटाजूट ग्रन्थीदई ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजोश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि श्रीकाशीरामाङ्गजगोविन्द्रामविरचितेश्रीवरविलासेपुरोहित विदेहसंवादोनामतृतीयोल्लासः ॥ ३ ॥

तदुक्तंवसन्तराजे ॥ चक्षुर्नामंमृगदृशोजयकारिभूशंलवरा तदेवपुरुष स्यारात्स्फुरितंभयशांसनमिति १ ॥ कविरुवाच ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ पुलकित परमम्मेग सहित मुखारविन्द, सियाके कपोल में बिलोकत

हैं बारबार। कोधाप कदम्बन में होयरह्यो कोलाहल, तिनके प्रपञ्च बोल श्रवणनि धारधार ॥ पञ्चानन तुल्य आप पञ्चानन बैनसुनि, मञ्चते उतारि पञ्चानन को धनुनिहार। आनँद अखूट जोर जटाजूट ग्रन्थिदई, लोगनकी लूटिलई शोभा शुचि सारसार १॥ दोहाछन्द ॥ बामदेव कोदण्ड दृढ़, जब करलीन्हो राम ॥ जामदग्नि जनकात्मजा, तब फरके हगबाम २ करनलागे धनुसज्ज तब, भ्राता लक्ष्मण त्रास ॥ उरगी अहि कमठादिको, देनलगे बिश्वास ३ ॥ रोलाछन्द ॥ थिराहूजिये थिराधराधारिये भुजंगम । महि अहिधारहु कमठ राम कर शिवधनु संगम ॥ दिक्कुञ्जर दृढ़होय त्रितय धारहु इहि अवसर। सज्ज करत हरचाप आप रघुबंश बिभाकर ४ ॥ पट्पदछन्द ॥ भूमी भई बिनम्र, नम्र फणिपति फणमण्डल। भयो मेचाकित भूरि, बुद्धि बिपति आखण्डल ॥ किलमिलात किलकमठ, क्षोभ पायो बरुणालय। दिग्गज दिशिभट सहित, भये कायर करुणालय ॥ बहु बार बार बृंहितकरत, धराधार धूजनलगे। जब सज्ज कियो शिवधनुष, तब इमि लक्ष्मण कूजन लगे ५ ॥ मनोहरछन्द ॥ इतमैं उठायो धनु तितै बिश्वामित्र तनु, पुलकि उठ्यो है अङ्ग अङ्ग प्रेम पाथ है। इतमैं लचायो रघुनन्दन महेशचाप, तितैन में देश देश भूपनके माथ है ॥ इतमें भ्रमायो भूरि कोशलकिशोर यह, संशय गँवायो तितै निमिपुरनाथ है। कारमुक खैंचतमें खैंच्यो मन मैथिली को, जामदग्नि मान औ कमान भञ्जनसाथ है ६ ॥ पट्पदछन्द ॥ जब जारोपण किये कर्णलौं खैंचतशङ्कर। तबै त्रिपुर तिय त्रास भीमभासंत भयङ्कर ॥ कर्णोत्पल ग्रन्थी जुतिनौंकी भ्रष्ट होत है। सदा लगाये रहत सुनत निज श्रोत्रश्रोतहै ॥ जब जा उतारि त्रिपुरारि तित आस्फालन धनु अनुसरैं तब ह्वै निराश निशिचरबधू आस्फोटन

कहूनकरैं ७ ॥ दोहा ॥ उग्रदेव अतुप्रधनु, उत्थापनते काम ॥ किहि
कारण भञ्जन कियो, गुणगाहक श्रीराम ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ ब्रह्मह
पातक समेत मन्मथारि अरु, मात्रवध्कारि क्षत्रियारि जियजानिकै ॥
इन द्वैके संगरयो दोष संसरगलयो, अपर अनेक अघखानि उर
आनिकै ॥ गावत गोविंद गिरा सकल सुजानहुनो, महत महेश
धनु यह मनमानिकै । पापनकी भई हान ताते ताने तजे प्रान,
राम पाणिपद्म पुण्य तीरथ पिछानिकै ९ टूटतहि भीमधनु कीन्हों
है कठोरनाद, विस्मय भयो है ठौरठौर ठामठामहै । रविवर वाजि
राजि ऊतट गमन कियो, शम्भुशिरकम्प छुट्यो धौलधाम है ॥
दिग्गज गिरन तथा चलन कुलाद्रिनको, अर्णव मिलन सबऊधम
तमामहै । मैथिलीमदन मदमन्थन कदन क्रोध, आसुर अदन गुण
सदनाभिरामहै १० जयाके बरिष्ठनर अष्टहू श्रवणरुके, अष्टमूर्त्ति मूर्त्ति
अष्ट कष्टभयो भारी है । मुखरित अष्ट दिशा दलन कुलाद्रि अष्ट, अष्ट
कुली नागपांति बधिर निहारीहै ॥ लक्ष्मण भ्रात अतिस्वच्छ मन
लक्षताय, गोविंद प्रत्यक्ष दक्ष वदें धर्मधारी है । तोर दोरदण्ड जोर
चण्डिकेशको प्रचण्ड, खण्डनकोदण्ड नाद चण्डता प्रचारीहै ११
टूटतधनुष महि मच्यो महाकोलाहल, निठुर निनाद लोक लो
कनमें छायो है । श्रोणसुनि शब्दके अमर्षवश मूर्छितहू, अति
अविलम्ब ध्यान अवंधकि धायो है ॥ जानकी निमित्तजान जान
की रखी न मान, भञ्जि भवचाप आप वीरपद पायो है । क्रूर क्रोध
अग्निप्रलै अग्नि सो निमग्न उर, निष्ठुरता मग्न जामदग्निमुनि
आयो है १२ मस्तक मनोहर बिराजैंटोप कङ्कपत्र, पीठिपै निषङ्ग
युग्म ख्यातखण्डखण्डहै । परमपवित्र भूति भूषितउरस्थलहै, मञ्जु
मृगचर्म मुञ्जमेखला अखण्डहै बसन मजीठाङ्ग रञ्जित ललिततनु,

करमें धनुष अरु सायक धमण्डहै। दण्ड औ कमण्डलु ले उग्रअस्त्र मण्डल ले, फरशा प्रचण्ड दण्ड चारित उद्दण्डहै १३ ॥ दोहाछन्द ॥ अक्षसूत्र वासेंकँधा, दक्षिणदिश अनुसार ॥ धर्मदीधिती सोमसम, जिमि अहि चन्दनडार १४ ॥ मनोहरछन्द ॥ जबते जनमलियो तबहीं ते ब्रह्मचर्य, शिलास्तम्भ जैसे भुजदण्ड भासमानहै। अङ्कित ज्याघात पंक्ति सूचन करत यहै, वसुमति विजय प्रशस्ति कहानहै ॥ वक्षस्थल प्रबल घनास्त्र शस्त्रघात किए, कठिनकठोर पै लुघारे धारवानहै। क्षत्रिय बन वारन विदारन करनहार, आयो जमदग्नि जायो जानत जहान है १५ मुदित समुद्र सस पुनि भति गलकहौ, अर्जुन सहस्रभुज दुष्ट दर्पदाख्यो है ॥ रेवातीर नीर के निरोधको करनहार, दोरदण्ड कुण्ड खण्ड खण्डन उचाख्योहै। गावत गोविन्द ऐसे लक्ष्मण कहत राम, पितृबध पेखत अमर्ष उदगाख्यो है। वही जामदग्नि यह जाने गुरुद्रोही जान, कठिन कुठारते कठोर कण्ठकाख्यो है १६ त्रिगुणित सातबेर क्षत्रिय समस्त केर, चला मांस रुधिर सनान बहुबारहै। निधन विधान बीच परम प्रधान यह, तीय वृद्ध बाल नाहिं निर्दय निहारहै ॥ राजनके कन्धकूट कोटि कोटि काटनमें, साठौं घरी आठौं पैर परम प्रचारहै। बारबार बहत अग्रांक धिर धारधार, क्षत्रि क्षयकार घोरधार ये कुठारहै ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितरतलपुरस्थकविदीका रामात्मजगोविन्दरामविरचितेश्रीरघुविलासेपरशुरामागमनंनामचतुर्थोल्लासः ॥ ४ ॥

सोरठाछन्द ॥ कहत क्रोध करि बैन, परशुराम संशय सहित ॥ तोसो धनुष त्रिनैन, काल कलेवा कौन कहु १ ॥ छप्पयछन्द ॥ निज पति आयुध जानि, पार्वती पूजत जिहिं नित। बासुकि कञ्चु कलाइ, नन्दि सादर आच्छादित ॥ धनुधनञ्जय तुल्य, त्रिपुरतामधि हुव इन्धन मोर्हि अक्षत देहूक, करे क नेक हियेजन जब काहू न

उत्तरदियो तब, उर अमर्ष अतिशयपगो। फुरकन्त ओठपुट रक्त नृप, रामहिंसन इणरनलगे २॥ मत्तगयेन्द्रछन्द॥ फुल्लित गल्ल करौं फुन-कार प्रफुल्लित सापुट कोटर आयो। श्रोत्र अहंकृति पावकपुञ्ज हलाहल धूमतितें प्रकटायो॥ अन्धसमान किये सबलोकन अम्बर लौं क्षितिछोरन छायो। लोयनलाल करालकिये ततकाल महा-बिकराल लखायो ३॥ मनोहरछन्द॥ रे रे रे अरे रे राम तेरे ये समग्र काम, निजकुलकञ्जपै तुषार तोमतैसोहै। मोहिं पहिंचान्यो नाहिं न्हु डर आन्यो नाहिं, जान्यो ना जरूर जामदग्निमुनि जैसो है॥ कीनो है अकाराडमैं प्रचराड दोरदराड बल, खराडनको दराडकारि खराडमान कैसो है। आडम्बर डिम्भते विख्यातभयो खराड खराड, नराडल महीप में उदराड मराड ऐसो है ४॥ चन्द्रायणाछन्द॥ निखिल नरेन्द्रनिकाय कुमुदाजिमि जानिये। तिनको मुद्रितकरन मिहिर मुहिं मानिये॥ कार्तवीर्यप्रति कहे यथा मम बोलहैं। परहां। सो सुनिलीजै राम श्र-वण युग खोलहैं ५॥ दोहाछन्द॥ सहसबाहु नृपसैन्यसह, हौंडिसराहु द्विजएक॥ प्रकटप्रभाकर पेखिहैं, तबमम संगरटेक ६ यथाकही तैसी करी, कार्तवीर्य के साथ॥ सो जानत सारेजगत, ममाविक्रम रघुनाथ ७॥ मनोहरछन्द॥ कठिनस्वभाव मेरो जाहिर जगत बीच, बालवृद्ध तरुण तमाम तूर्ण मारे हैं। छाँड्यो नाहिं छौना नवसू-तिका बिछौनाबीच, तिनके रुधिर सबपितृकाज सारे हैं॥ सत्रय बेर क्षुद्र क्षत्रिय त्रियनकेर, गर्भथित अर्भन निकारि काटिडारे हैं। अहो अहो अहो महा आचरज आवत है, कहो कहो कहो राम तुम क्यों बिसारे हैं ८ कालसा कराल क्रूर कठिन कुठार यह, कार्तवीर्य कराठ भुज छेदनमें दक्ष है। घर्षण केयूर मध्य मणिगण लणत्कार, घोर शोर सुनैं शत्रु त्रसित तनक्षहै तेजकारि तुल्य दैपै द्ध दरा

दिवाकर सों, क्षत्रीगोत्र काज भलै पावक प्रत्यक्षहै। लक्षमण ताय लख लक्षमण अप्रज्ञात, लक्ष लक्ष लक्ष वन्ध भक्षण बिचक्ष है ६॥ षट्पदछन्द॥ सुनि सुनि बचन मुनीश, राम निज चेतसि गुनि गुनि। पुनि पुनि नयननिहारि, बैनबोले हिय गुनि गुनि॥ भुज- बल बिदित न मोहिं, नाहिं शिवधनु प्रतापबल। रावर महिमा महा, कहा हौं जानिसकौं भल॥ करिये न क्रोध नाहक बिभो, धरिये धीरज धूर्वाधिय। अज्ञात बालआचरण लखि, है प्रमुदित गुरुलोग जिय १०॥ दोहाछन्द॥ करकुठार यह कण्ठमम, करहु यथोचित सोय॥ रघुबंशिन को शूरपन, गो द्विजपै नाहिं होय ११॥ मनोहरछन्द॥ लीजै मुनि बिप्रवर्य हमको तिहारे संग, संगरकी बातहु कियेते होत पापहै। सारहीनबल हम तुम बलवाननके, शीशपै लसत यथा पत्रनपै छापहै॥ कैसे करिसकै कहौ रावरी बराबरी जु, भुजते भये हैं भूप ब्रह्ममुख जापहै। एकगुण संयुत धनुप धराधीशनको, नवगुणयुक्त ब्रह्मसूत्र लसै आपहै १२ चित्र भानुबंशजन्म क्षत्रिय कहावतहौं, श्रोत्रिय समस्त इभ्य अर्चन करतहौं। भगवत बिश्वामित्र महत अनुग्रहते, प्राप्त दिव्य अस्त्र पारधिय मैं धरतहौं॥ कोऊजन करौ यश अथवा कुयश करौ, हर्ष शोक नेक नाहिं रसना ररतहौं। धारतहौं शस्त्र शत्रु सवन सँहार काज, कालते डरौं न बिप्रबालते डरतहौं १३॥ दोहाछन्द॥ परशु- राम रघुराम मुख, निकसे सुनि बरबोल॥ तिनको कियो न तोल कछु, उचरनलगे अतोल १४ बिप्र बिप्रकहि बदत मुहिं, रेशठ बारम्बार। जातिबिधिको मैं बिप्रहौं, सो सुनिलीजै सार १५॥ घनाक्षरीछन्द॥ क्रोधकरि जाने निज जननी प्रहारी पेख, क्षत्रिय बिहीन मही कीनी इकबीसबार क्षत्र अश्वमध्या सब स्वादमें

अभिज्ञ अति. कुलिश कठोर घोर कठिन कुठारधार॥ जाको बाण छिद्रमग भासै क्रौंचपर्वतमें, हंसछलगिरें अज्ञौ अस्थि अद्रिके अपार। ऐनो उग्र ओज उग्रदेव सो उदग्र अति, प्रलयअग्नि जैनो जामदग्नि भार्गवनिहार १६॥ षट्पदछन्द॥ क्षुभित निरखि भृगुनन्द, वचन रघुनन्द उचारत। त्रिभुवन तियमधि वीर, जनी जननी तव धारत॥ निज भुजबली बिशाख, निरखि मुख बीड़ापाई। असमुत है मम उदर, उमा उरइच्छाआई। अति धन्य मात अरु तात धन्य, वीर आप अति धन्यहै। तिहुँकाल त्रिलोकी बीच कहुँ, नहिं उपमा कछु अन्यहै १७॥ चन्द्रायणाछन्द॥ हारपरो गरभोर कि कठिन कुठारहै। कज्जल तिय नयनसों कि जलकीधारहै॥ सुखलखिहौं संसार कि यमको मुखलखौं। परहा। बिननपै वीरत्वपनो कबहुँ न रखौं १८॥ दोहाछन्द॥ कहे राम अभिराम अति, अक्षर अखिल अमोल॥ तदपि अभ्यसूयासहित, बोलत भृगुपति बोल १६॥ किरीटछन्द॥ सागुरगह्यो सब शंकरकेकर जीरनचाप पिनाक कहावत। टूटिरह्यो पहिले तिहिं तोरि प्रवीरनमैं नहिं बीररसावत॥ वैष्णवचाप हमारयहै करि सज्ज विकर्षण जो दरशावत। शूरसमग्रनकी गिनतीमधि तौ रघुनन्दन रामगिनावत २०॥ दोहाछन्द॥ भार्गवमुनि के बचनसुनि, भये चकितचित राम॥ इत पर्वत उत कूपहै, मिलत न कित विश्राम २१ धनुषाकर्षन करनमैं, विप्रधर्षणाहोय॥ जो न करौं यह बाततौ, मिलत पराभवमोय २२॥ षट्पदछन्द॥ अद्य प्रभृति समभाव, विप्र नहिं परशुराम है। पुत्र पौत्र रघुबंश, भूप नहिं यहै रामहै॥ वीर कहो अथवा, कुवीर कहियो समग्रजन। अब अवश्य यह बात, धारिलीनी मेरे मन॥ सब सुजन कुजन मिलि भल कहौ, किंवा करिलि जै हँसी द्विजदृष्टप्रबल मददमन, हित पीताम्बर कम्मर

कसी २२ इमिकरि मनसि विचार, चारु रघुवंश बिभूषण पुन
रपि प्रवचन पठत, शान्तिमय विरहित दूषण ॥ अर्णरमित भूमात्र,
जीति इक्कीसबेर यह । गहिगहि पुनिपुनि दियो, नाहिं रवि-
लियो आपवह ॥ हौं डिम्भ बहुरि नव बाहुबल, घोरमहा अति बीर
वृत । विरमिये क्रोध ह्वै मुदित, जाति पूज्य भगवन्तकृत २४ ॥
चन्द्रायणाछन्द ॥ करत नाहिं द्वैबार बाणसंधानहै । आश्रितको द्वै
बार देत नाहिं थानहै ॥ अर्थिनको द्वैबेर न अर्पत दानहै । परहां ।
भाषत नहिं द्वैबेर राम अभिधान है २५ राम लियो वह धनुष
सहेल सुजानहै । गुण योजन करि बाण आकर्षण ठानहै ॥ छवि
मकरध्वज मध्य नमासत भेदहै । परहां । किय भार्गव मुनि स्वर्ग-
गती उच्छेदहै २६ रामबाण संधान निरर्थक नहिं कदा । मुनि
प्रति किये प्रहार ब्रह्मबध ह्वै तदा ॥ किये भूमि पर पतन भूत पीड़ा
यदा । परहां । छेद्यो मुनिको मरण अमर कीनो सदा २७ चापा-
कर्षण ताटकारि आकर्ण है । लखतसीय सासूप नैन आकर्ण है ॥
पहिले भवधनुभाजि राम मोकोलई । परहां । अबै कन्यका अन्य
लैन इच्छाठई २८ ॥ दोहाछन्द ॥ इहिबिधि साशंकित भई, करि कु-
तर्क कमनीय ॥ पुनिपुनि सिय पेखनलगी, रामरूप रमनीय २९
अब उदन्त सुनिलीजिये, परशुराम मुनिकेर ॥ गये गर्वके टेरसब,
रहे रामतनहेर ३० ॥ षट्पदछन्द ॥ कार्त्तवीर्य भुजदण्ड, सहस उच्छे-
दन पण्डित । जामदग्नि युधवीर, उरसिउद्दण्ड अखण्डित ॥ लखत
राम अतिउग्र, बिशिख करधर उहिंअवसर । अविनयगयो बिलाप,
हीय हुलसाय विनयचर ॥ ब्राह्मण्यदैत्य प्रणईभयो, पिशुनभाव
भार्गव भग्यो । श्रीरामचन्द्र अभिनन्दितब, अमलतवन उचरन
लग्यो ३१ अहो रामगुणग्राम, धर्मध्रुवधाम धुरंधर दिनम णिकुल

कल कलश, मधुरपुहबीश पुरंदर ॥ जो न आप अवतार, अमल निरमल महिहोतो। तौ अवलम्बन अवनि, अवनि अधिपन नहिं हो तो ॥ त्रैलोक्य ताप त्रासक तरल, निजनर मुद मंगलकरण। अपराध ओघ क्षमियो विभो, सकल लोक अशरण शरण ३२ ॥ दोहाछन्द ॥ तब सुनि भृगुपति वरवचन, वदत वचन रघुनन्द। जामदग्निमुनि चरणयुग, करि अभिवन्दन वृन्द ३३॥ मनोहरछन्द ॥ जाये जमदग्नि पुनि पायेहो पिनाकी गुरु, वीरज विधानना वखानत वनन्तहै। कर्मकरि मारेहु जहानबीच जाहिरहौ, धरमधुरैया धीर महिमा मनन्तहै ॥ मुद्रित समुद्रसप्त सप्तद्वीपवती मही, दीनिहै त्रिसप्तबेर भूसुर मनन्तहै। सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवन्त आप लोक लोकोत्तर उपमा अनन्तहै ३४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जानि आप अवतार भये रघुनाथहै। परम प्रेममिलि गाढ़ नयनयुग पाथ है ॥ अर्प्यो तेज महरर क्षत्रिनभ छंडिया। परहां। उत्तर दिशि कियगवन तपसिमन मंडिया ३५ ॥ षट्पदछन्द ॥ बहुविधि बाजन बजत, मनहुँ घन गरजत मधुधुनि। गावत मङ्गलगीत, सुवासिनि चेतसि चुनि चुनि ॥ विरदावली बदन्ति, वृन्द वृन्दन बन्दीजन। वेद मन्त्र वर विप्र, उचारत अखिल मुदितमन ॥ श्रीराम सीय पाणिग्रहण, निरखत मुनि नर सुर असुर। आनन्द ओघ वर्त्ततभयो, उहि अवसर सब जनकपुर ३६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूलह दुलहिनि दिपत दुहुँ, रति रतिपती समान। मञ्जुमुहूरत जनकनृप, दीनों दुहिता दान ३७ ॥ हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामश्याम सुकाम अतिअभिराम पीतम पीयके। पाये परसिकर सकल सुखनिधि हीयहरषत सीयके ॥ आनन्द सतचितरूप भासत योगनिद्रगता यथा। कन्दर्प के बड़ दर्पके शर भिन्न भ जत हैं तथा ३८ वाल्मीकि गौतम कुशिक·

कसी २२ इमिकरि मनसि विचार, चारु रघुवंश विभूषण पुन-रपि प्रवचन पठत, शान्तिमय विगहित दूषण ।, अर्णवमित भूमत्र, जीति इक्कीसबेर यह । गहिगहि पुनिपुनि दियो, नाहिं रखि-लियो आपवह ॥ हौं डिम्भ बहुरि नव बाहुबल, घोरसहा अति वीर धृत । बिरमिये क्रोध हूजै मुदित, जाति पूज्य भगवन्तकृत २४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ करत नाहिं द्वैबार बाणसंधानहै । आश्रितको द्वै बार देत नहिं थानहै ॥ अर्थिनको द्वैबार न अर्पत दानहै । परहां । भापत नहिं द्वैबेर राम अभिमान है २५ राम लियो वह धनुष सहेल सुजानहै । गुण योजन करि बाण अकर्षण ठानहै ॥ छवि मकरध्वज मध्य नभासत भेदहै । परहां । किय भार्गव मुनि स्वर्ग-गती उच्छेदहै २६ रामबाण संधान निरर्थक नहिं कदा । मुनि प्रति किये प्रहार ब्रह्मवध है तदा ॥ किये भूमि पर पतन भूत पीड़ा यदा । परहां । छेद्यो मुनिको मरण अमर कीनो सदा २७ चापा-कर्षण ताटकारि आकर्ण है । लखतसीय सारूप नैन आकर्ण है ॥ पहिले भवधनुभांजि राम मोकोलई । परहां । अबै कन्यका अन्य लैन इच्छाठई २८ ॥ दोहाछन्द ॥ इहिविधि साशंकित भई, करि कु-तर्क कमनीय ॥ पुनिपुनि सिय पेखनलगी, रामरूप रमनीय २९ अब उदन्त सुनिलीजिये, परशुराम मुनिकेर ॥ गये गर्वके टेरसब, रहे रामतनहेर ३० ॥ षट्पदछन्द ॥ कार्त्तवीर्य भुजदण्ड, सहस उच्छे-दन पण्डित । जामदग्नि युधवीर,उरसिउद्दण्ड अखण्डित ॥ लखत राम अतिउग्र, बिशिख करधर उहिंअवसर । अविनयगयो बिलाय, हीय हुलसाय बिनयवर ॥ ब्राह्मण्यदैत्य प्रणईभयो, पिशुनभाव भार्गव भग्यो । श्रीरामचन्द्र अभिनन्दतब, अमलतबन उच्चरन लग्यो ३१ अहो रामगुणग्राम, धर्मधुरधाम धुरंधर दिनमणिकुल

कल कलश, मञ्जुरघुबीश पुरंदर ॥ जो न आप अवतार, अमल निरमल महिहोतो। तौ अवलम्बन अवनि, अवनि अधिपन नहिं होतो॥ त्रैलोक्यताप त्रासक तरल, निजनर मुद मंगलकरण। अपराध ओघ क्षमियो विभो, सकल लोक अशरण शरण २२ ॥ दोहाछन्द ॥ तब सुनि भृगुपति मरतवन, बदत बचन रघुनन्द। जामदग्निमुनि चरणयुग, करि अभिवन्दनवृन्द २३॥ मनोहरछन्द ॥ जाये जमदग्नि पुनि पायेहौ पिनाकी गुरु, बीरज विभाननि बखानत अनन्तहै। कर्मकरि सारेहू जहानबीच जाहिरहौ, परमधैर्या धीर महिमा अनन्तहै ॥ मुद्रित समुद्रसत सप्तद्वीपवती मही, दीनिहै त्रिसत्तबेर भूसुर मनन्तहै। सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवन्त आप लोक लोकोत्तर उपमा अनन्तहै २४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ जानि आप अवतार भये रघुनाथहैं। परम प्रेममिलि गाढ़ नयनयुग पाथ हैं॥ अर्प्यो तेज महान क्षत्रिवध छंडिया। परहां। उत्तर दिशि कियगवन तपसिमन मंडिया २५ ॥ पद्धरछन्द ॥ बहुविधि बाजन बजत, मनहुँ घन गरजत मधुधुनि। गावत मङ्गलगीत, सुवासिनि चेतसि चुनि चुनि ॥ बिरदावली बदन्ति, बृन्द बृन्दन बन्दीजन । बेद मन्त्र बर बिप्र, उचारत अखिल मुदितमन ॥ श्रीराम सीय पाणिग्रहण, निरखत मुनि नर सुर असुर। आनन्द ओघ वर्त्ततभयो, उहि अवसर सब जनकपुर २६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूलह दुलहिनि दिपत दुहुँ, रति रतिपती समान। मञ्जुमुहूर्त जनकनृप, दीनों दुहिता दान २७ ॥ हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामश्याम सुकाम अतिअभिराम पीतम पीयके। पाये परसिकर सकल सुखनिधि हीयहरषत सीयके ॥ आनन्द सतचितरूप भासत योगनिद्रगता यथा। कन्दर्प के बहु दर्पके शर भिन्न भ्र जत हैं तथा २८ बाल्मीकि गौतम कुशिक-

नन्दन जामदग्नि वशिष्ठहै। ये व्याह बिबिध विधान बिरच्यो शता-
नन्द बिशिष्ठहै॥ सम्पूर्णक्रिय परिपूर्ण तुरत सीय लक्ष्मण साथ
है। कीनो गमन द्रुत आगमन निजपुरी प्रति रघुनाथ है॥ २६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतास्वय-
म्बरोनामपञ्चमोल्लासः॥ ५॥

अथ श्रीहनुमन्नाटके प्रथमोंकः॥ मनोहरछन्द॥ आवत अवधपुर जा-
नकी लपणयुत, बन्दि गुरुलोक रामचन्द्र प्रेमपाये हैं। परमउछाह
छायरह्यो गेह गेहनमें, दिव्यदेह देहमें सनेह सरसाये हैं॥ पहिलो
पहरबीत्यो मित्रन मिलनमध्य, बाकी तीनयाम अतिदीर्घ दरशाये
हैं। दण्डकरि ताड़त तुरङ्गतत सीताराम, चित्र हयशालामें बिचित्र
छोहछाये हैं १॥ दोहाछन्द॥ पियताड़त हयशालहय, सियताड़त
हयचित्र। उभयभये उन्मादथित, किहिकारण कहु मित्र २॥ तस्यो-
त्तरं॥ घनाक्षरीछन्द॥ परनिपधारे प्रातही ते पुत्र पुत्रबधू, अमित उ-
छाह छायरह्यो औधमें अपार। अफताब गिरि में निहारि रवि
रूपरम्य, दम्पति हृदयभांति जाको पेखिये न पार॥ मङ्गलमनोहर
निहारन न काजआये, अर्क अश्व उनजानि कछु धुनि धारधार।
अस्ताचल ये हैं कम्ब ऐसे उरआन्यो तब, मेदुरमें मन्दुरामें तजैं
तिन्हैं बारबार ३॥ षट्पदछन्द॥ गये अस्तगिरि अर्क, उदय शशि-
धर दरसायो। रंगपक्ष नारिंग, पिंग सुन्दर सरसायो॥ गुरुजन
आयसुपाय, गईं निजमन्दिर अन्दर। सियारम्य रम्भोरु, पतिब्रत
प्रेम धुरन्धर॥ मुख मन्द मन्द मुसकन सहित, रसिकशिरोमणि
स्वामिप्रति। आनन्दकन्द रघुनन्दजित, रामकाम अभिराम अति ४
प्राचीभाग सराग, तरणि बिरहिणि बिस्तारे। नीरजालि निद्रालु,
कुमुदकुल विकसितसारे बिगत बिकार चकोर, शोक सह्द के क

लोकहै भाव काश आकाश, गमित तमनतौ लोकहै कन्दर्पदर्प अर्पित हृदय, प्रबल प्रसर्पण करिस्यो। शर्वरी स्वामि अभिराम अति, सार्वभौम समुदयभयो ५ कैरवकोरक विकसि, तरुण तरणी मनविदलत। मीलत अलि अम्भोज, मान मानिनि उन्मूलत॥ प्रसरि जुन्हाई जाल, तोमतम कवल करतअति। ऊर्ध्वबेल अम्भोधि, आकुलित कोक कुलनतति॥ दिशिविदिश सकल धवलिम धरत, हरत निखिल तनतापहै। बरबस हृदय आनन्दनिधि, उदय सुधाधर आपहै ६ कुचगिरि शिखर उतंग, हीय सीमन्तिनि सरसत। अजौं मान यह मूढ़, तितै निवसत नित दरसत॥ कुपित कलेवर अरुण, रूप रोहिणिपति आन्यो। करपसारि चहुँओर, कुमुदकुञ्ज विकसन ठान्यो॥ तितकी हुती भ्रमरावली, बाँधिपांति निकसी लसी। मनु मान प्रहारण कारने, असित असी निकस्यो शशी ७ अस्तभये दिननाथ, वेप उहिको शशिलीनो। सहितराग अनुराग, कमलिनी सपरसकीनो॥ पायशीतकरपरसि, तथा मुदित मुख ठान्यो। परतियरत निजनाथ, कुमुदिनी कामिनि मान्यो॥ परहां। सकथन कौतुक किये तब, अति लज्जित है स्यो। अरुणिमा गई सब अङ्गकी, इहिकारण पांडुभयो ८ दिक्षामुख शृंगार, मुकुर प्राचीदिशि तियको। कुमुदन कौमुद करन, चकोरन हरषन हियको॥ प्रौढ़भये शीतांशु, रोदसी वपु सरसत है। राम कहत सखि कहहु, तर्क अस कस दरसत है॥ यह किधौं पूर कपूर कन, किंवा मलयज लिप्तकिय॥ पुनि॥ किधौं पवारयो पारदनि, अथवा स्फाटिक मणि खचिय ९॥ दोहाछन्द ॥ सखीकहत करजोरि युग, सुनिये विनय हजूर। भयो सकल संसार मधि, रावर यश परिपूर १०

स्फाटिक न हिं पारद नहीं, न हिं चन्दन न कपूर श्रीरघुनन्दनरावरो,

सुयश जगत परिपूर ११ तदनन्तर निरखतभये, चुगत चकोर अँगार। तिन प्रति रघुवर उच्चरत, शोधहु सारासार १२ सुधा सुधाधर स्वादगहि, पुनि अङ्गारक प्रीति। करत अन्यथा कौन कहु, रची विधाता रीति १३ ॥ षट्पदछंद ॥ तरल तिमिर चय चमू चक्र संहार चक्र यह। चक्रबाक क्रीड़ा कृतान्त निष्क्रान्त कान्तिसह॥ कान्ता कान्त नितान्त वृत्त संयोग साच्छिरह। गगन मानसर राजहंस राजत शशाङ्कमह ॥ पुनि ॥ शुचि संभोगारम्भमधि कुम्भ कुमुद तिय मुदप्रद। गीर्वाण नाहिं नीर्वाणप्रद पञ्चबाण निश्शाणहद १४ ॥ सोरठा छन्द ॥ बदैं सारिका बैन, सहचरि रानि सुनायकै। यह सूचनकरि सैन, अवसर ठहरन कौन अब १५ निज निज गईं निकेत, सकल सहचरी समुझि जिय। शोभा सकल सँकेत, सिय सिय पिय हुलसन्त हिय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालगावतजीश्रीकुलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसहचरीगमनोनामषष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामचन्द्ररु जानकी युग हृदय किय नीशाण है। जे चन्द्रमण्डल शाणतैं उत्तीर्ण रतिपति बाण है॥ ते पञ्चबाणक बाणते निकसे कसे आकर्णलौं। लागे अचानक आयकै युगवक्षथलवर वर्णलौं १ द्वाराग्रभागानि जाय प्रीतम प्रीतियुत गहिअङ्क पै। लीनी निमी नृपनन्दनी आनन्दयुत परयङ्कपै ॥ रोमाञ्चबपु अतिनम्र आनन नाहिं कछुतनु भानकी। संकोचकरि संकुचित हैगइ जानकी प्रियप्रानकी २ संसारसारो कहत स्मरशर पञ्चबानि प्रमानकी। कोशादिकनमें काव्यगणमें व्याकरण अनुमानकी॥ विख्यातहै सब ख्यातमें शरपञ्च इति अभिधानकी। भोगात मैं अगिनन्त किमि रोमाञ्चलखि कह जनकी ३ गाढ़ा

लिङ्गितहोय, स्वपिहि स्वामिनि पिय भाषत। नहिं नहिं नहिं इति वचन, जानकी आनन राखत॥ कोमल कमल समान, स्वामि वक्षस्थलराजैं। मम कुच कठिन कठोर, तुमन संशय मनछाजैं॥ पुनि॥ पवन प्रवेशन होनहित, करतहुत मैथिलि शिथिल। प्रभुप्राणनाथ प्रियप्राण सिय, किय आकर्षण बाहुबल ४ बाहुपाश अन्योन्य, ग्रहण रसभर भलभूपित। जयति युगलकिशोर, सुहृदुहु उपम अदूपित॥ अति अभिमतफल, लेत उभय सुखदेत परस्पर। गर्भसार संसार, भयो नूतनइत रसपर॥ महमञ्जुल मधुरालापकरि, हां हां हां रघुवर रटत। निमिनाथनन्दनी मेरुगिरि, ना ना ना कहिकै नटत ५ खदिरसार घनसार, युगल चूर्णन करि आवृत। नागबेलि दल विमल, बीटिका निज आननभृत॥ कह्यो ललीसों लेउ, लियो सिय चार भागकरि। धर्मादिक फल चार पदारथ तुलित धीर्यधरि॥ पुनि॥ रामचन्द्र सानन्दहुइ, मैथिलिमुख निजमिलत मुख। अतिमधुर पाइ प्रभु अधररस, पाये ब्रह्मानन्दसुख ६॥ चन्द्रायणाछन्द॥ जब कछु निद्रित नयनभये युग सीयके। तबै हृदय पर किये पानिपुट पीयके॥ चित्तस्थित प्रभुरूप विनिर्गम नाहिंचहै। परहां। यह उरआशय अमल निरुन्धितही रहै ७॥ दोहाछन्द॥ वैदेहीबर वक्षथल, यक्ष कर्दमाघ्राय। आयो अलि अवलोकि विभु, उहिंबरणत चितचाय ८॥ पद्धवछन्द॥ कान्ताकान्त नितान्त, कुचान्तर चन्दन चर्चित। मदन दहन तप शमन, हेत घनसार समर्चित॥ सिया उरस्थल मध्य, मधुप निर्मग्न भयो जिहिं। चञ्चल रहै बाहरे, करतउतप्रेक्ष पेखितिहिं। मनुभयो पञ्चशर विशिख हिय, रहे पुंख अवशिष्ट है। सो सुनत व्याज निद्रित प्रिया, श्रवण सुधासम मिष्टई ६ प्रथुल जघन घनसार, मन्द आंदोलन

आनै मृदुनवल अलिकाय, आलि अलि आभाभानै प्रक-
टितकृत भुजमूल, फुरत श्रुति कर्णपूर है स्तनलीला लालित्य,
बसत नपुपूरनूरहै ॥ जानकी व्याज निद्रा गहै, प्रमुदित मानस पीय
को। हीयको हरन हुलसन्तहै, जीवन जानहु जीयको १० लखि
नारी निद्रालु, बसन पियहरिबे लागो। काञ्चीरव सुनि काम, तत-
क्षण आवत भागो ॥ तस्कर लुकिबे लग्यो, ताहि मणि गणनि
बतायो। काम चलाये बान, चोर अतिशय सतरायो ॥ घनजघन
जानि गिरिवर गुहा, तित तूरन कीनो सदन। लखि शम्भु युगल
उर ऊपरै, ह्वै सभीत थकिगो मदन ११॥ सोरठाछन्द ॥ प्रकट पद्मिनी
प्रीति, जिमि बरणत रसग्रन्थ मधि ॥ सो कीनी सब रीति, अन्त-
र्यामी रसिकप्रिय १२ जनक जनकजामात, जगजननी जनका-
त्मजा। शुचि शृंगारकी बात, उचित नहीं बहुबरणिबो १३ तद-
नन्तर सुचरित्र, सुनि लीजै सज्जन सकल। पूरणपरम पवित्र, जब
जागी जनकात्मजा १४ ॥ षट्पदछन्द ॥ करतप्रेम करि स्पृहा, बाल
भावन करि भीती। आकुञ्चत निज अङ्ग, सुरत संगमपर प्रीती ॥
अहह नाह नहिं नहीं, व्याजसह बत्र सरसावत। मधु रसमेर कटाक्ष
आदि भावन दरशावत ॥ पुनि ॥ निधुबन घनकेलि करि म्लान
मात्र जिय भाजत है। अरु शङ्कातंकित चारु चितरमण रससमय
छाजतहै १५॥ दोहाछन्द ॥ अधर दशन सीत्कार करि, कहत युगल
करजोर। निर्विशङ्क मनहोय पिय, पिव पिव रसना मोर १६ ल-
लितशालि आलाप करि, बिलसत बाकबिलास। अविरत निमि
नृपनन्दनी, पिय हिय करतहुलास १७ रम्भा वीणानादते, मधुरस-
रस सुखबास। सुरभित सुरद्रुम सुमनसम, दरसिय वचन बिलास १८
रसिक शिरोमणि सांवरो, श्रीरघुवर रमनीय। सुनि वैदेही वचन

वर, कहत बचन कमनीय १९ ॥ षट्पदछन्द ॥ कानन गये कुरङ्ग, कुहरगिरि केहरिगयऊ। दिग्गजगये दिशान, कमल जल आश्रित भयऊ ॥ चप कटि कुच वर बदन, विनिर्जित पेखहु प्यारी। पायपराभव परम, भये अति लज्जित भारी ॥ यह रीति सदा सतपुरुषकी, मानमलान जहरहै। तव मान ततक्षण मरन मन, अथवा जावत दूर है २० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ जल अन्दर जपकरत कमलकुल जापकै। अच्छमाल अलि अवलि परमपटु पायकै ॥ चहत चित्त चपतोर तुल्यते हौनहैं। परहां। धारण कृत इहहेत बनज मुख मौनहै २१ ॥ सोरठाछन्द ॥ एणी श्रेणी भूर, बन बसि तृण भक्षण करत। चपसम हौंनिजरूर, मृगनयनी तपकरतते २२ अयि एणी चप ओर, अहिश्रेणी बेणीलखत। तुलित होत नाहिं तोर, इहिकारण छिपिरहत नित २३ चहत वतुनुसम तौन, अये चारु चम्पक तनी। सुबरण सुबरणहौन, दहनदेह किय दहनमधि २४ दाड़िम हीयदरार, दरकि दरकि दरशातहग। दन्तपंक्ति मणिमार, तव निहारि निमिनन्दनी २५ ॥ षट्पदछन्द ॥ क्षीरसिन्धु अरु पुहुमि, युगल जिहिं पलुवाकीने। ओषधीश अरु बदन, तोर तिनमें रखि दीने ॥ अनिलदण्ड करि तुला, विधाता तिनको तोलत। यहै भूमिको भूमि, यहै गगनाङ्गन डोलत ॥ तव तोल बराबर हौनहित, तारागण तिनमें रखत। तउरह्यो ऊर्ध्वको ऊर्ध्व वह, गुरुताई मुख में लखत २६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कह सीता करजोरि नाथ चित चहतहौं। चरण भावनाधारि गिरामुख कहतहौं ॥ गुरुता भये न स्वाद स्वाद मधुराइमें। हरिहां। करि निरशेष अधिकगुण जाइमें २७ ॥ दोहाछन्द ॥ गिरा मनोहर सुनिसिया, पूर्णकाम प्रभु तूर्ण। अभिमत आलिङ्गन कियो, कृत मनोर्थसम्पूर्ण २८ शुचितन शोभा

सीयकी, हरत रमण हियताप । अवचछैलआभा सियहि, आनँद देत अमाप २६ ॥ मनोहरछन्द ॥ कविरुवाच ॥ कैसे वे जलज नील अतसी कुसुम जैसे, कैसे वे कुसुम जैसे नीलमणि धामहै । नीलमणि धाम कैसे शोभित तमालजैसे, कैसे वे तमाल जैसे दूबदल श्याम है ॥ दूबदल श्यामकैसे यमुना प्रवाह जैसे, यमुना प्रवाह कैसे जैसे तनुरामहै । रामतनु श्यामकैसे नवघनश्याम जैसे, नवघनश्याम कैसे जैसे श्याम रामहै ३० पीतमणिमाल कैसी लतिका सुवर्ण जैसी, कैसी लता जैसी रङ्ग केसर असुन्दरी । केसर सुकैसी जैसी सोनजुही कैसी जुही, जैसी गिरा धारिवृष्टि वृन्दवर सुन्दरी ॥ कैसी ओप अम्बुकी सुजैसी यज्ञज्वालज्योति, कैसी ज्वाल जैसी पीत-पट छबि छन्दरी । कैसी पटज्योति जैसी सीयछबि कैसी सीय, जैसी बिज्जु कैसी बिज्जु जैसी सिय सुन्दरी ३१ कैसे नीलपीतपट पावन प्रकाशवान, जैसी श्रीतमाल स्वर्णमाल छविधामिनी । कैसी बेस-माल जैसी नील पीत पङ्कजकी, मञ्जुल सुगन्ध प्रभा पूरित सुना-मिनी ॥ कैसे नीलपीत कञ्ज जैसी नीलपीतमणि, कैसी मणि जैसी गिरा कृष्णा अभिरामिनी । कैसी नदी जैसे घन बिज्जु घन बिज्जु कैसे, जैसे युग कैसे युग जैसे घनदामिनी ३२ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बिरह दीर्घ आगामि जानिजिय जानकी । चरणायुध धुनि सुनत भोर भई मानकी ॥ पति बियोग जिनहोउ धारि जिय कञ्जरी । आरिहां । तासु शान्तिके हेत प्रपूजत मञ्जरी ॥ ३२ ॥

इति श्रीपिपलोदप्रस्थानाधिपालरावतश्रीदूलहसिहजीविज्ञापितकविटीकारामात्मज-गोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीजानकीविलासोनामसप्तमोल्लासः ॥ ७ ॥

-केद्वितीयोंक ॥ श्रीरघुनन्दन आप,सँ य संयुत

प्रेमको नेम, निरन्तर हृदय लखावत। निरखि निरखि आनन्द, परस्पर परम पिखावत॥ अहुराते पै अविलम्बअति, वहअवसर आवतभयो। जोदशरथनृप मृगयाकरत,मुनीशाप पावतभयो १ वैश्य तपस्वी यज्ञदत्तमुनि श्रवण तातहो। वह निज तियासमेत, जरठ जात्यन्ध गातहो॥ दशरथनृपके हाथ, मस्यो तिहिं सुत गजभ्रमते। शापदियो ऋषि अन्ध, तुमहुँ मरिहौ या क्रमते॥ अतिवृद्ध अवस्था बीचतुम, सुत वियोग दुखपाइहौ। वह तरलताप संतापसहि, आपहु सुरपुर जाइहौ २ मलिनकिरण दिनमणी, भूमिभूकम्पहोतहै। उल्का दण्ड प्रचण्ड, पतन अम्बर उद्योतहै॥ धूसरसो दिगभाग, ग्रहण रवि शशि बहुदरशात। शारमेयरुत अमित, फेरुपरचार प्रकरशात॥ बहु रुधिरबिन्दु बरसन्त नभ;तमतारा दरशान्तदिन। उत्पात अमितचित कारख, प्रलयसरिस सरसात छिन ३॥ दोहाछन्द॥ तितलखि सब उत्पात अति, केकयि करत विचार। आइगयो अवसर अबै, कीजै वर निरधार ४॥ कविरुवाच॥ षट्पदछन्द॥ पहिले भो संग्राम, अमर असुरन अतिभारी। सुरसहायता काज, गयउ नृपसंयुत नारी॥ कटी चक्रकी कील, सुरत तिहिं नरपति नाहीं। तबै अँगुरिया आप, दई केकयि तामाहीं॥ गहि विजयलखी तिय अंगुली, है प्रसन्न द्वैवरदिये। ते थाप रखे नरनाथ महँ, जे चितचाहत अबलिये ५॥ दोहाछन्द॥ इकवर भरतहि नृपतिलक, द्वितिय रामबनबास। यह उर आशय आनिकै,गई पुहुमिपति पास ६ कहनलगी केकयसुता, सुनहु नाथ ममबात। जबते आगम सुतबधू, तबते अतिउतपात७॥ षट्पदछन्द॥ बधू अमङ्गलरूप, भूपइहि जानहु जीमें। होत अमित उत्पात, अहर्निश अवधपुरीमें॥ शान्तिहेत सह सीय, रामबासिहैं सुगहनबन भरतराज अभिषेक,कीजिये जो म नतमन दीजिये

थाप बरदान हुहुँ, जगत महायशलीजिये । अति आपहोय निश्चिन्त अब, सुखीहोय इतरीजिये ८ सुनत बचन केकयी, महिप मूर्च्छाभइ भारी । पुनि कछुहोय सचेत,धीय निज यह निर्धारी॥ मुसनकार जो कहै, घटै मिथ्या महपातक । सुत बिछुरनहु यहै, घोर मम बपुको घातक ॥ मन मरण श्रेय मान्यो महिप, नाहिं भलो मिथ्यावचन । तियते तथास्तु कहिदियो तब, तिहि बिरची बिधि बिधि रचन ६ शीशजटा बिलसन्त, बसन बलकल तन रामजु । छत्र चमरढिग भरत, बिमन मन नहिं बिसरामजु ॥ तात चरणयुग नमत, भ्रातयुग मनबचकायक। अहह तात हा मात, भरत बद बिह्वलदायक ॥ सहिसकौं और संकट सब,कछुहु न मुखते कहिसकौं । गहिसकौं सिंह अहि अगनिबैं, रामबिरह नहिं रहिसकौं १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कहत राम मोहिं पीर नाहिं बनबासहै । कोमलपद सियगमन तथा नहिं त्रास है ॥ भरतभ्रात उर अरुचि राजपर रहत है। परहां । यह अति दारुणदाह देहको दहत है ११ सुनि सुमन्त्र बच भूप सुसुबन पयान है । शापसमयभो प्राप आप जियजानहै॥ राम राम रघुनन्द रामरट जासहै । परहां । फेर न लियो नरेश दूसगे श्वासहै १२ ॥ दोहाछन्द ॥ अति आतुर भरत है, बूझतहैं निज माय। कैकेयी कर्कश हृदय,दिय उत्तर समभाय १३॥ षट्पदछन्द ॥ मात तात कितजात, भवन सुरपति के भ्राजत । किहिकारण सुत शोक, कस्य तव अग्रज छाजत ॥ कहा भयो है वाहि, कियो बन बीच गवन तिहिं । कानन मधि क्यों गये, हुई अवनिप आयसु जिहिं ॥ कहु काहि भूप आज्ञादई, नृप मम बाचाबद्ध हुवे । फल तोहिकहा तव राज्यपद, सुनि करि हाहा गिरोभुवि ॥ १४ ॥

इति श्रीकृ। बैरचितेऽष्टी रघुनृप स्वर्गसम्प्राप्तिवर्णनानाम षष्ठोल्लासः ॥ ८ ॥

षट्पदछन्द ॥ रघुवर गौहि गुहगिरा, राज्यपद तृणइव तजिया। वन प्रति जावत भये, वसन वपु वलकल सजिया ॥ सुरभि संग जिमि बाल वच्छ तिमि लक्ष्मण सोहत। धारि धनुषशर तूण युगल सब जनमन मोहत ॥ जानकी पेखि शुकसारिका सासु चरणलगि हुकुमगाहि। प्रिय प्राणनाथ श्रीनाथके साथ चली निज चित्तचाहि १ रामगवन वनकिये भरतमूर्च्छा भइभारी। पाय चेतना कछुक गिरा मुनिजन थिरधारी ॥ कीन्हों उत्तर कर्म निखिल निगमागम गायो। दशरथनृप निज जनक पुरन्दरपुरी पठायो ॥ पुनि भ्रात शोक परिपूर्णहिय नन्दीग्राम निवासकिय। शिरजटा मुकुट वल- कल वसन वसत सदा रघुनन्दजिय २ ॥ दोहाछन्द ॥ तिते निवासि पालत प्रजा, उर अन्दर असइच्छ। वनते प्रभु पगुधारिकै, पैहैं प्रीति प्रतिच्छ ३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ त्रिचलु चरण चलि सीय पीय सों यों कहै। कानन कितनी दूर श्रवण सुनिबो चहै ॥ देखि दशा मृदुअंगि नयन जलधार है। परहां। रामविलोचन प्रथम अश्रु अवतारहै ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ कहत रामसुनु सिया, कृशोदरि प्रथम कहावत। पुनि कुच कचकेभार, निरन्तर नम्रलखावत ॥ चारुचरण चंक्रमण, चैत्यकरि श्रम सरसावत। दोलांदोलन समय, स्वेद बहु बुंद बहावत ॥ अति सरितस्रोत निर्झर निकर, भूमिगर्त गिरिमूर है। मृग सिंह भूत भैरवसहित, वन चलि हो किमि दूर है ५ ॥ चन्द्रा- यणाछन्द ॥ पुनि पुहुमी प्रति पठत राम रमनीयहै। नवनलिनीदल अरुण चरण कमनीयहै ॥ पदपदपर प्रसखलित ललितगति तीय है। अरिहां। तव दुहिता वनगहन सिधावत सीयहै ६ ॥ दोहाछन्द॥ काश्यपि तव यह कन्यका, कोमलतन सुकुमार। तजियै तुम्हरी कठिनई, भूत्र कोमलताधार ७ इमिकै हैं कछु कान्हों गमन, त्रिभु-

ननातिलक ततक्ष । पथिकवधू बूझनलगी, पथि पथि सीय मृत्यबश-बन्द्रायणाछन्द ॥ सखि कुवलय दलनील सांवरे कौन है । यह मुनि स्मितकरि तितै गहत मुख मौनहै ॥ लखि लक्षण पहिचानिलेत ते बाम हैं । परहां । पीतम परमसुजान सकलगुणग्राम हैं ९ कमल-कोश नवनीत सुकोमल चरण है । दर्भसहित अति कठिन क्रूर यह धरण है ॥ शीरात्राण पदत्राण सुबलकल कीजिये । हरिहां । सीख देत पथवधू सुमुखि सुनिलीजिये १० ॥ दोहाछन्द ॥ इमि सिखवत निजनयन भरि, नीर पथिकजन बाम ॥ क्रम क्रमकरि प्रापतभये, चित्रकूट अभिराम ॥ ११ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावत जीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-रामानुजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे श्रीरामचन्द्रचित्रकूटा-गमनोनामनवमोल्लासः ॥ ९ ॥

दोहाछन्द ॥ तितआये सानुज भरत,सहित सैनरनिवास । उमँगि उमँगि अकुलाय उर, सहत न बिछुरनत्रास १ मरन भलो बिछुरन बुरो, सब जानत संसार । वहे दुःख इकबारहै, यह दुख बारम्बार २॥ षट्पदछन्द ॥ जटाजूट शिरसोह, बसन बलकल बपु बिलसत । प्रणमत भरत परेखि, प्रेम पुलकावलि उलसत ॥ तारसुरनकरि रुदित, सकल कल बिकलभये हैं । मन बिहंग मृगदीन, नैन तितनीर छये हैं ॥ मनु आय बस्यो करुणाकटक, चित्रकूट कीनो फिकर । तिहि अश्रुओघ निकसन्त यह, नाहिं भरत निर्झरनिकर ३ ॥ दोहाछन्द ॥ देत सुमित्रा शिक्षसुत, स्वच्छ लच्छ मनलेख ॥ शुचिसेवन अव-सर मिल्यो, उरअशेष अवरेख ४ मोहिं जान जनकात्मजा, जनक जनकजामात ॥ अवधसरिस अटवी लखहु, जाउ यथासुख तात ५ शिरधरि आयसु भ्रातकिय, भरत अवध प्रतिगौन । सीय ल-क्ष्मण सहित विभु, बेहरत गिरिवर तौन ६ ॥बैदेही

वन बदत सुनहु मम पीयहै। शिलाएक हुइ प्रथम सुगौतम तीय हईै॥ विन्ध्यअद्रि पर अमित उपलपद परसहै। परहां। करि है सुनि निसवन्त। तिनक पियतास है ७॥ षट्पदछन्द॥ नौकारोहण कियो लियो सुख अमित जानकी। अरजकरी करजोर, कन्त करुणानिधानकी॥ गौतम मुनिकेशाप, आप अहल्या उद्धारी। यहकाष्ठ मुनिसम, पोत पुत्री भइ प्यारी॥ कीजिये भंग याको अवशि, चरणपरश लितदीजिये। उद्धारहोय तवलौं विनै, मम आज्ञमनन कीजिये ८॥ दोहाछन्द॥ जलयानहु थलयान मैं, जानत नाहिं अयान॥ एक रही रनिवास मैं, दूजे शिशुता जान ९ देखि दैन्यता सीयकी, रघुवर दीनदयाल॥ गोदावरितट विपिन मधि, पद्मकीनी पतिशाल १०॥ लक्ष्मणउवाच॥ षट्पदछन्द॥ जितै रघूतम कुटी, तितै वह पञ्चवटी है। पञ्चावटी परेख, पाथ सुख एक घटी है॥ तरल सुरस्कृत तटी, भीति संश्लेप बटी है। गोदा यत्र नदी, युतरङ्गित सरल तटी है॥ कल्लोल लोल चञ्चत्पुटी, दिव्या मोद कुटीरटी। संसारसिन्धु शकटी सहश, स्वल्प धर्म नरहुब्कटी ११॥ जानक्युवाच॥ मनोहरछन्द॥ क्रीड़ाअवतार कल्पवटसे विराजमान, प्रकटीकृत विश्वबट पिष्ठ अघटघट है। विश्व अन्तुजन्मघट भञ्जन शकट धरत, संकट छमी के क्रांति धोवत कपटहै॥ लंपट अथरसीय भिन्न शत्रु कुम्भोघट, खरहन शकटबन्दौ राम दुरवटहै। शीश जटाजूट पट वल्कल राजमान, कोटि कोटि कटैं वेग विपदा विकटहै १२॥ दोहाछन्द॥ विगत परिश्रम होय सिय, पिय अभिनन्दनकीन॥ पेखिकुटी प्रमुदित भई, गईताप विधि तीन १३॥ षट्पदछन्द॥ कीस नयन मदनान्ध, सदन मारीच सिधायो। है विनीत युत प्रीति, विदित यह वचन सुनायो॥ तुम मञ्जुल मृगरूप, धारि दण्डकवन विचरहु। जित

मृगनैनी जनकसुता सोहत तित प्रचरहु ॥ अति अद्भुत अङ्ग बिलोकि मृग, सिय पिय प्रति याचन कराहिं । अभिलाष अङ्गना पूरि वे, रामतोर सँग अनुसरहिं १४ हौं यह अन्तर पाय, सीय गहि लैहौं निजपुर । तव अधीनहै काज, करहु ममआनि विनय उर ॥ जो यह इच्छित मोर, सुनहु मारीच न करिहौ । तौ इतमें बिन मीत, तुरत मेरे कर मरिहौ ॥ है रावणते मरतव्य इत, रामहाथ मरतव्य तित । मरतव्य अवशि मारीच लखि, श्रीरघुवरकर होहिं हित १५ ॥ दोहाछन्द ॥ यह विचार चितचारु चुनि, मृगतनु गहि मारीच ॥ हरित दूब चुनि चुनि चरत, बिचरत बन २ बीच १६ ॥ षट्पदछन्द ॥ दशरथनृप कुलदीप, पर्णशाला मधि सोहत । सह-सौमित्री सीय, महामुनिजनमन मोहत ॥ स्वच्छ सलिल पटु पान, करत सुन्दर सरितासर । ललित कन्दफल मूल, गहतबीते बहु बासर ॥ अब ये ते पै आयो उतै, मृगवपु बनिमारीच है । पठयो जुनीच दशकण्ठको, बिचरत कुटी नगीचहै १७ सुवरण सकलश-रीर, हरित मणिमय शृङ्गद्वय । बिद्रुममय खुरचार, रदच्छद माणिक मणिमय ॥ नील तारका नयन, पटुल पेखन अति चञ्चल । सर्व रत्नमय रम्य, रूप सिय लख्यो दृगञ्चल ॥ मृग महामनोहर मञ्जु लखि, मैथिलि मन प्रमुदित भई । उर साभिलाष अति होयकै, पिय बिनती करती भई १८ निशाचार मारीच, सांग मायाकुरङ्ग वह । निकट निभृत जिहिं के, रस चारत धावत छिनमह ॥ गहन गहन मधि फिरत, ताहि चह गहन जानकी । कोटिकाम अभि-राम, रामप्रति गिरा मानकी ॥ शरन्निशित धनुष धारण किये, मृगपाछे प्रभु अनुसरे । बहुबेर भई जियजानिकै, तदनु लक्षण टेरे १९ ॥ सोरठाछन्द ॥ सियसंरक्षण हेत, लक्षमण धनुरेखा

रची। हियहुलसत विभु हेत, तदनन्तर तित संचरे ॥ २० ॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिपाखरावतश्रीमद्दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे मणिमयमृगमारीच-
गमनोनामदशमोल्लासः ॥ १० ॥

श्रीहनुमन्नाटकेतृतीयोङ्कः ॥ षट्पदछन्द ॥ आंदोलत शर एक, अपर कर धनुष धुनावत। पुहुपलता लखि ललित, जटाग्रन्थी सरसावत॥ कोटिकाम अभिराम, राम शुभ उपमालायक। विपिन वीथिकावीच, श्यामसुन्दर सुखदायक॥ अति अद्भुतगति मृगरूप, वह इत उत तित चितवत फिरत। मायाधिराज रघुराजमणि, इकक्षण नहिं कित थित थिरत १ कबहुंक धरपद धरत, कबहुं रसना तृण चाटत। कबहुँ होत अस्पर्श, कबहुं गुल्मन उद्घाटत॥ कबहुँक किसलय सूँघि, कबहुं तनु त्रासित तापते। देखत दिशि दिशि कबहुं, करत कण्डूति आपते॥ इमि कबहुँक धावत वेगते, कबहुँक थिरता गहत है। वह मायामृग मारीच इमि, अद्भुतगति चितचहत है २ रामकहतभो लक्ष, आप अवलोकहु आछे। ग्रीवभङ्ग अभिराम, मुहुरमुहु हेरत पाछे॥ धावनते थियध्यान, चपलचित चितवत चमकत। पर तनु बीच प्रविष्ट, पूर्ववपु धारत धमकत॥ मनमानि मोर शरपतन डर, प्रासदर्भ मुख ते गिरत। कृत बहुतर बिथति प्रचार है, किंचित पुहुमी पै फिरत ३ ॥चन्द्रायणाछन्द॥ मृगवक्षःस्थल लक्ष कियो प्रभु आप है। दिव्य बाण सन्धान ठान दृढ़चाप है। परमप्रचण्ड प्रहारक्यो जब इहिं इतै। परहां। होय तपस्वी गयो दशानन तब तितै ४ चुनि मृगया मारीच गये युगभ्रात है। इत आयो दशकन्ध तपस्वी गात है॥ भयसंयुत जिमि मृगी तथा सियनैन है। परहां। ते लखि हौं यह ठानि कहत मुख वैन है ५ धार्मिणि भिक्षा देउ अहो इत आइकै लक्षण लक्षण लंघिदेन सियज यकै। धूरत धुत्र भेष धारि

धरी धरणीसुता। परहां। परम पतिव्रततीय तोमतातीनितनुता ६ जब गहि चलयो जहर जानिजिय जानकी। तब रघुनन्दन पीउगिरा गुणगान की॥ अहह राम हा लक्ष हुष्टलेजात है। परहां। सिंहभाग शृगा गहत यहै का बात है ७॥ पदम्दछन्द॥ अति आतुर सियबोल, सपदि सुनि युगल श्रवणते। जरठ जटायू गृद्ध, क्रुद्धकह बीस श्रवणते॥ रे तस्कर परदार, अरे अतिद्रुत कयों जावत। तिउ तिष्ठ मतिमन्द, तोर त्रासक हौं आवत॥ तज सीय परम पतिदेवता, नातर जैहौ शमनपुर। मम चण्ड तुण्ड करि खण्ड तब, गिद्धापेंगे रुधिर उर ८ जनम ब्रह्मकुल बीच, कण्ठ कृन्तन करि करिकै। कियो सम-र्चन शम्भु, शीश आगे धरि धरिकै। शक्रहु पै है शक्ति, चण्ड उद्-गडन दण्डन। कन्दुकइव कैलास, धारि कीन्हें करमण्डन॥ है परम पराक्रम पुञ्जसुत, यहै कर्म अनुचित करत। हरिधर्मपत्नि रघुवीर की, तनक न मन लज्जा धरत ६ रावण सुनि वह बचन, धीयलागो निर-धारन। यहै किधौं मैनाक, करत ममसार्ग निवारन॥ शक्र वज्रते डरत, काहि मम सनमुखआवत। नाहिं गरुड़ निजनाथ, सहित मोहिं न बिसरावत॥ अब जानि लियोशठ जरठ यह, गृद्धजटायू नाम है। इत आवत निजवधकाज जड़, जैहै द्रुत यमधाम है १० पुत्रिसीय जनि डरहु, दुष्टजैहै नाहिं आगे। रे रे निशिचर नीच, काहि मम भयकरि भागे॥ गहिरघुकुलमणिदार, कितै जैहै रे तस-कर। करिकै चञ्चु प्रवेश, तोरिहौं धमनी धसकर॥ द्रुत दशहुदिशा दिग देवदश, करौं सद्य संतृप्त सब। दशमस्थ करि दशमस्थ तब, ऊन नृपदशरत्थ अब ११ करत अस्त्र विशेष, दलत भुज चक्रचूर्ण कृत। मर्दत युगहय हनत, रक्षपति किय व्रण आवृत॥ गर्जत तर्जत संधि-तिरस्कृत करत त ि अति मग रोकत क्षणमध्य

श्रणु कपोत गिद्धनपति । डनि रुण्ड र कण्टकगाळ्ड निरि, श्रण अनुमंत वज्रसर । पुनि प्रबलतनमतह ऊर्ध्वगत, अति अद्भुत कीन्हों समर १२ गृद्धराज जब युद्ध, निरखि सह क्रुद्ध निशाचर । पुनि चपेट शिलसदृश, गहन पीस्यो पक्षीश्वर ॥ कछुक प्राण अवशिष्ट, परि परिगो उर्वीतर । राम राम श्रीराम, होत धुनि गिरि गुर्वीधर ॥ चितचहत चारु रघुबर दरश, तिहिते तजत न प्रानहैं । सुर ध्यान धरत प्रभु चरणयुग, नहिं अभिलाषा आन है १३ जिय क्रिय शोच जटायु, कछु न मोते बनिआई । मुधा गयो मम जनम, प्रथिर प्रीती न निभाई ॥ नहिं रक्षन वैदेहि, बीसभुज भुजा न तोड़ी । एकहु मुड़यो न मस्थ, सातती पांखहु जोड़ी ॥ निरख्यों न नयन भरि रामसुख, नाहीं कछु कीन्हों सुकृत । हौं आयुरहित का करि सकौं, को मन गिनिसकैहै कुकृत १४ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि मूर्छित करि गृद्धको, कियो गौन लङ्केश । बिबिध भांति बिलपत सिया, व्याकुल हृदय विशेश ॥ १५ ॥

इति श्रीदिपलोद्भवपत्तनाधिपालवान श्रीश्रीठकुरसिंहजीविज्ञापित कविटीका-
रामानुजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे जटायुमूर्छावर्णनं
नामैकादशोल्लासः ॥ ११ ॥

षट्पदछन्द ॥ अहह राम हा रमण, नाथ हा रघुपति सुन्दर । हा जगबीर सुजान, प्रभुर पुहमीश पुरन्दर ॥ हा दशरथ नृप नन्द, सच्चिदानन्द वृन्दनिधि । हा प्रिय प्रीतम परम, रम्य विपरीत भयो विधि ॥ हा कृपासिन्धु संकटहरण, दीनबन्धु अशरण शरण । अब निदित बिमल वारिज चरण, चरण चारु मङ्गलकरण १ ॥ दोहाछन्द ॥ क्रन्दत निमिनृपनन्दिनी, जगत वन्दनी सीय । कुररी इव कूकन करत, धरत न धीरज धीय २ अति अविलम्बित गगन मग, लिये जात लङ्केश लखि बानर गिरि शिखरपर, निज अभरण अशेश ३

सैरध्वजी उतारि हुत, अलंकार निजअङ्ग। डारिदिये गिरि शिखर पर, उत्तरत गिरा अनङ्ग ४ मारुति प्रति इमि उच्चरत, ये आभूषण लेउ। राम पीउ देवर लषण, तिन्हैं तात तुम देउ ५ ॥ कविरुवाच ॥ मायामृग मारीचहो, तिहिं मनाकमधि मारि। पुनरागमनकरन्त तब, कछुक कुचिह्न निहारि ६ दाहिनिदिशि द्रुमडिस्थ पर, करटरटत रवक्रूर। प्राणप्रयाण समान कछु, है संकष्ट जरूर ७लषणभ्रात अनुजात युद्ध, लखि अपलपनकरूर। करत अमित अनुमान मन, हरणहार मुदमूर ८ क्षण क्षण क्षण मधि विश्रमत, धरत धीय नहिं धीर। पर्णशालमधि भ्रातयुत, पहुँचे श्रीरघुबीर ६ सिय न लखत बिलखत हिया, किया कोणत्रय शोध। सूर्यकोण तिन तजिदिया, किया हृदय अवरोध १०शोकभीति धूजत हृदय,सदय सदा रघुबीर। कोण चतुर्थहुजौन सिय, ताकस धरिहौं धीर ११ ॥ अत्र श्रीहनुमन्नाटके चतुर्थोङ्कः ॥ षट्पदछन्द ॥ महाघोरतर समय, प्राण उत्क्रमण अधिक है। सिय बियोग अधिगम्य, असत्रतनु तजत न धिकहै ॥ पर्णशाल सब अन्त, राम आलोकन कीन्हो। कतहुँ न पतिव्रत सहित, सीय अवलोकन लीन्हो ॥ हा हृदय बिदीरण होतहै, इहिं अधा अशु करत किन। मम प्राणनते प्यारी प्रिया, तिहिबिन नहिं रहिसकत छिन १२ ॥ दोहाछन्द ॥ एतेपै अवलोकि उत, उत्तरीय शुचि सीय। सुधि रमणी रमणीयमन, करि करि प्रिय कमनीय १३ पुनि पुनि पट जोवनलगे, रोवनलगे अधीर। नयननीर धोवन लगे, लगे निचोवन चीर १४ ॥ षट्पदछन्द ॥ द्यूतसमय उद्योत, होत इहिंको पण कीन्हो। प्रणय केलिमधि कण्ठ, पाशइहिं करि करि लीन्हो ॥ वरव्यञ्जन सुरतान्त, समय श्रमहर शुभ सरसत। शय्या मरम निशीथ, समय याहीदृग दरशत इत वेधि वशते प्राणप्यो

उत्तरीय रमनीय अति । कमनीय कलेवर सीयके, नखधामानि मुहु मुहुगहति १५॥ चन्द्रायणछन्द ॥ नहिं अन्दर पद चिह्न बाहरधारिये । पर्णशाल यह मोर कि अन्य निहारिये ॥ मैं यह वहहौं राम कि अथवा औरहै । परहां । सिय बिन जिय नहिं सकत जु अनयाकि-धोरहै १६ ॥ पद्धरछन्द ॥ केहरि हरिले गये, कटीस्मित हिमरुचि लीन्हो । हगहरिगये कुरङ्ग, कान्तिदुति चम्पक चीन्हो ॥ कलरव कोकिल गह्यो, गमन युगभाग कियो है । अर्द्ध गह्यो मातङ्ग, अर्द्ध हरि हंस लियो है ॥ कांतारसीत्र पशु हनि पथ, सब बिभागकरि लेतहैं । कान्ता तथैव सबमैथिली, लई हाय दुख देतहैं ॥ १७ ॥

इति श्रीचरविजासेरामविलापवर्ननोनामद्वादशोल्लासः ॥ १२ ॥

दोहाछन्द ॥ मुक्त यही केकयसुता, मुहिं पठ्यो बनबीच । यह मम मति कित कनकमृग, श्रवणन नयन नगीच १॥ पद्धरछन्द ॥ अत्रालिङ्गित ललित, कमल कोरकवपधारी । पीताधर अति मधुर,सुधाकर समसुखकारी ॥ कलक्रीडाविरमाव, मञ्जु मकरन्द बिमर्दित । शुचि यह सुमनसमूह, देवदयिता बिन दर्दित ॥ कितगई बचन बदरसमयी, गजगमनी मृगलोचनी । हा सिये प्रिये मम वल्लभे, संतत शोचबिमोचनी २ गाहि गाहि कान्तार, बनांतर बिपुल बिलोके । बलीदर्पक माहि, सहसा सब चप अवलोके ॥ स्मारस्मार गइहूर, प्रिया बहुवारबारहै । गिरिवर ऊपर अटत, बिलोचन वारिधार है ॥ हा सिये प्रिये कितमें गई, कछुहु न मुखते कहिगई । ममसर्वसदुख सँग लेगई, अति दारुणदुख देगई ३ भूरज रञ्जित सर्व, वपुष बिधु बिलसत कैसे । दह्यमान विरहागि, धराविङ्क्तिकिय जैसे ॥ मन्यु बिदारित चित्त, ध्वनित है उचरत बानी । हा सीते हा जनक, नान्दिनी सिय सुखद नी लसतेरे आनन चन्द्रमा, मेरे

नयन चकोर है। पुनि मेरो हृदय पपीहरा, स्वाति सलिलवपु तोर है ४ इहि बिधि बिलपत विविध, पर्णशाला चहुँओरन। फिरत धरत धुरधीर, वीर श्रीअवधकिशोरन॥ हा जानकि कलकमल, नयनि सीते सुखदेनी। मम मनबारिज बिपिन, राजहंसिनि अहि बेनी॥ बहु बिरह वह्निअति दग्ध उर, दीनभयों दृग जलभरौं। किहिठौर जाय कासोंकहौं, किहिदिशि अवलोकन करौं ५ गिरि शिखरस्थित वृक्ष, लतातरबायु न बीजित। कौनगयो गहि सीय, लखी काहु कहु तुम इत॥ चारुत्रपी बिम्बोष्ठि, त्रिपुल जघनारसना रटि। सीता नीता केन, बद्धनागेन्द्र कात्रिकटि॥ तेतरु बूझत तुम कौनहौ, आपकहतहौं रामहौं। नृपअवध ईश दशरथतनय, शोक अनलधिय धामहौं ६ हे गोदावरि पुण्य,नारि पुलिनेते देखी। कम-ललैन मृगनैनि, इतै आवत न बिशेखी॥ बरबिनोद कछु करन, बि-मल बारीबिच बिलसी। ऐसे बूझत फिरत, रई मृगति हिय खिलसी॥ इमि प्रतिपादप प्रतिनग पठत, प्रत्यापग प्रत्यग रटत। पुनि प्रति बगहिण प्रत्येण प्रति, जानकियाचततित अटत ७॥ दोहाछन्द॥ पुनि लक्ष्मण प्रति प्राप्तहै, विह्वल बचन बदन्त॥ बिपुल बिरह उन्माद बश, बावरसम बिलसन्त ८॥ षट्पदछन्द॥ कोहो तुम कहु कहा, यहे हे नाथ नाथतर। दासलक्ष्मण नाम, आप मैं कौनआर्यबर॥ आर्य कौन श्रीराम, बिजनबन कहाकरतइत। देखत देवी दिव्य, कौन देवी सियसंभ्रित॥ सियनाम श्रवणसुनि बिकलहै, बिबिध भांति बिलपन लगे। हा जनकराजतनये प्रिये, बिरहपयोनिधि मधि पगे ९॥ दोहाछन्द॥ इमि बन बन ढूंढ़त फिरत, सह सौमित्री राम॥ बिलखत बिलपत चकितचित, नाहिं जिततित बिश्राम १० यते पै निरखत भये, गृद्धजटायु अचेत अरु रावणरथ भग्न लखि,

वचरत रामसचेत ११ दशरथ नृपको मित्रवर, शत्रुनिपूदनहार॥ तामति प्रभुउचरनलगे, मूर्छित नयन निहारि १२ बूझतप्रभु पक्षीन्द्र प्रति, कहीं घोर घन गात॥ कौन कुटिल वृत्तान्त सब, मोहिं सुनावहु तात १३ तब बिलोकि विधुवदनवर, वदत जटायू बैन॥ वरणन श्रम ऊर्दन सो, सुनिये नीरजनैन १४ निशिदिन शशि रवि अर्द्ध सब, रावण निज चितचीन॥ सामलपक्ष सिताष्टमी, वैदेही हरि लीन १५॥ किरीटछन्द॥ देवनको दिन अर्धलखो यह लेख किये चितचेत चितावत। पितृनकी निशि अर्द्ध कहैं जिहिते अघपक्ष भतक्ष पिलावत॥ आठकला सुत अर्द्धशशी पुनि मध्यदिने रवि अर्द्ध लखावत। निर्मलपक्ष भये भृगुवासर अष्टमिचोस हरी सिय गावत १६॥ दोहाछन्द॥ चैतशुक्ल तिथि अष्टमी, भृगुवासर बरतन्त॥ मध्यदिवस मधि मैथिली, रावणहरी अमन्त १७॥ पदपरछन्द॥ यह सुनि बोले राम, भग्न किमिकियो महारथ। वज्रांकुर इव क्रूर, तुराड धनुखड़े गिरेपथ॥ हे सीरध्वजराज, पुत्रि तू धन्य लखावत। पञ्चानन पक्षीन्द्र, दशानन कुञ्जरयावत॥ अतिभयो भूरि संग्राम इन, सो तैं निरख्यो नयनभरि। संचार दशानन मत्थपर, भोजटायु समस्थकरि १८ पुनि जटायुप्रति कहत, रामभो तात सुनहु मम। तुम्हरे तेज प्रताप, स्वर्गपद पावतहौ तुम॥ भले सिधावहु स्वस्ति, सहित पै एक कहतहौं। कान्ताहरण वृत्तान्त, तातढिग न कछु वहतहौं॥ है रामनाम जो मोरतो, कछु थोड़ेसे दिननमें। तित रावण समुत सबंधुजन, ऐहैं कहि हैं छिननमें॥ १९॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीरघुविलासेजटायुस्वर्ग संप्रातिवर्णनंनामत्रयोदशोल्लासः॥ १३॥

तदनन्तर श्रीराम, विपिन बिचरत मृग देखे इन

दृष्टन के बधु, प्रपञ्च मारीच बिशेखे ॥ प्राणबल्लभाश्लेष, बिपुल बिश्लेप कियो है। मृगी चक्रबध ठानि, चहतमृग बिरह दियो है। अतिमद अमोच नालीक सब, दूरघात नित करतहै। पै प्रिया सदृश मोहत नयन, इहिकारण जिय डरतहै १॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ एते पै गिरि अस्त, गये रबि आपहै। उदय भयो शशितस्य, सहशापपु थापहै ॥ देनलगे संताप, कमलदल नैन है। अरिहां। उचरत है श्रीरामलल मतिबैन है २॥ षट्पदछन्द ॥ चलतरलतब सौमित्रि, तरणि ते तनुतापत अस। लक्ष कहतभो नाथ, निशामधि मिहिरकथा कस ॥ चन्द्रोदयहै यहै, सुनत प्रभु पुनि बचबोले। बच्छलश्मन ललित, कथं वक्षःस्थल तोले ॥ सौमित्रि बदत सुनिये बिभो, लखि कुरङ्ग लसन लसत। हाहा कुरङ्गलोचनि सिये, चन्द्राननि तव बिन त्रसत ३॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ मन्दरगिरि करि मथितभयो नाहिं पातकी। जात्यो नाहिं तम तुच्छ तोहिं घनत्रातकी ॥ हौं तेरे शत टूक करौं इकछनकमें। परहां। जो होतौ नाहिं बदन बिदेही बनकमें ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ दाव दहनतरु शिखर, निवारहु निर्झर जलकर। नाहिं दवानलनाथ, उदयागिरि समुदय हिमकर ॥ बच्छ सुधाकर स्वच्छ, धूमधारन किमि कीन्हो। नाथ नाहिं यह धूम, छौनि छाया चित चीन्हो ॥ हा धराणिसुते सीते प्रिये, कान्ते कुत्र गता असी। तव बिरहानल संदग्ध हिय, तदुपरि जारत यह शशी ५ ॥ दोहाछन्द ॥ रामचन्द्रकरुणासहित, बदत बचन अति रम्य। प्राणप्रिया पद्मप्रेयसी, परमप्रेम आश्रिगम्य ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द॥ अङ्क कहत कबिकेपि, कहत केउपङ्कहै। कित नेकहृत कुरङ्ग, बिंब निश्शङ्क है ॥ मनदत बिबुध कितेक, छाय यह भूम है। परहां। हौं जानत जिय बिरह, दहन धुवधूम है ७ षट्पदछन्द रे रे

निर्दर अनिवार, कन्दर्प मनोभव पङ्केरुह प्रे कुसुम चापसंयुत संयुक्त ॥ तजहु धनुपधरि धीय, कहा पुष्पशरसमोधति । कान्ता संग वियोग, जात हुतभुक ज्वालाअति ॥ वपुहोयरह्यो संदग्ध अति, ताहि प्रहारतहै कहा । सब शूरपुरुष पावत नहीं, मृतक मारिकै यशमहा ८ आपुंसाग्र निमग्न, तोरशर पंचपंचशर । मद्नाग्नी निर्दग्ध, यहै वपुहोहु निरन्तर॥निपट निरायुध काम, जीति तकिहै न अपरजन । सुखी हूजियो सबै, दुखी इकहौंहिं रहहुमन ॥ अति उत्तमते उतम सब, यहै बात अवलोकिये । इत एक आपसं-कष्टसहि, इस त्रिलोकको रोकिये ९ ॥ दोहाछन्द ॥ तरु अशोक वि-कसित विमल,तिहिंतल गहि विश्राम । उपरहि कछु किंचितसमय, वदत वचन श्रीराम १० ॥ षट्पदछन्द ॥ तू नवपल्लव रक्त, रक्तमैं प्रिया गुननकर । आवत अनिश अभङ्ग, शिलीमुखगन तो ऊपर ॥ तथा कामधनु मुक्त, शिलीमुख मोप्रतिआवत । कान्ता पदतल हती, हीय उभयन हरसावत ॥ समभाव मोर तव लक्ख है, भिन्नभाव इक यह वसत । लख मुहिं सशोक विधिने कियो, तव अशोक अभिधा लसत ११ ॥ सोरठाछन्द ॥ हियपर धरयो न हार, सिय वियोग भय मानि जिय ॥ तरुवर सरित पहार, अब अनन्त अन्तर बसत १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ चन्द्रखण्डकर सदृश, पवनहू गति पवि ओपम । मलयजलेप कुलिंग, सुमन मनलूति अग्रसम ॥ रात्रि कल्पशत तुल्य, प्राण प्रालन्तमारइन । यहै वैदेही विरह, समय संहार कालमिव ॥ हाहन्त कितक संकटसहौं, कौनसुनै कासों कहौं । हिय हटकत हटकत फटत है, अटत रटत जाकि थकिरहौं १३ वपुभूषा कृशता पाय, मोस बिलाय गयो है । नैननिरन्तर नीर, स्रवैं वारी नरयो है । दीर्घ दीर्घ निस्स्वांसालिये, सब श्वसन मरयो है हरण

होतही तीय,तेज तरतोमघट्यो है॥ इमि चारतत्त्व भोगवन तनु, रह्यो शून्य अवशिष्ट है। यह कहा राम जीवन तजउ, कुलिश कठिन अतिक्लिष्ट है॥ १४॥

इति श्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रविरहवर्णनंनामचतुर्दशोल्लासः॥ १४॥

षट्पदछन्द॥ लक्षसहित श्रीराम, महावन विच विचरत उत। गौर गवय मातंग, शरभशार्दूल कोलरुत॥ कोलाहल आहूत, भूत वैतालपाल है। समुत्ताल कङ्काल, काल बिकराल जालहै॥ चय-चक्र बालनालकृत, तुमुल घोर विकारमिल। वहलान्धकार करि-कलितगुह, अन्तराल विलसन्तकिल १ अबिरल परिमलबहल, सरल चञ्चल वहु बिगलित। वृन्दबिमल मकरन्द, बिन्दुकीलाल जालजित॥ आलबाल बरवृक्ष, सुपिच्छिल लसत ललिततित। प्रमत्तालि गणमाल, लुलित मारुत आन्दोलित॥ बाचाल विपुल फुल्लित लसत, वकुल मुकुल कुलजाल है। धूसरितधूलि कोकिल बधू, कूकमाधुरी मालहै २॥ चन्द्रायणाछन्द॥ तरल शिलोच्चय शिखर शिखी समुदाय हैं। नर्तनलीला सानुकूल मुदपाय हैं॥ प्रचलत चक्रचकोर पक्षिगण लक्ष हैं। परहां। गुञ्जत मञ्जुलशब्द बिपुल प्रतिवृक्ष हैं ३॥ षट्पदछन्द॥ अम्बर चुम्बनललित, लक्ष उर अन्दर दरसत। आलम्बनफल बिपुल, भार आलम्बित सरसत॥ सकल जन्तु संतोष, पोष निर्दोष बिभूषित। सुधास्पर्द्धि वर्द्धिष्णु, सरस रसमय निरदूषित॥ हिंताल तमाल रसालतरु, ताल प्रियाल बि-शालफल। मालूरशाल मलशल्लकी, पुनि शिरीष कृतमालभल ४ असन शमी शिंशपा, शाक चम्पक अशोकचुन। कर्णिकार सुरदारु, अवर बहुसार अवणसुन॥ कोबिदार जम्बू कदम्ब, अरु निम्ब उदुम्बर। सो भोजनरु करञ्ज, बकुल निचुलक खजूरवर॥

पुनि बीजपूर जम्बीर, भाण्डार बहुरि वानीरहै। अरु कर्मरङ्गनारङ्ग, चन्दन कदली काश्मीरहै ५ धात्री पाटल कुटज, चीत कङ्कोल बिभीतक। बटअङ्कोल मधुक, हरीतकि अरु भल्लातक॥ आम्रा- तक केतक, जयन्ति वैकङ्कत कङ्कत। अरु अश्वत्थ कपित्थ, तिं- त्तिणी जपा अलंकृत॥ बन्धूक नागकेसर प्रमुख, अरण्यानि दुस्तर अटत। वाराहकन्ध आरूढ़ उत, वास करत उत्कट रटत ६ पुनि दक्षिणदिशि पेखि, दक्षिणाचलपर प्रचलित। मलय मा- लती तगर, जाति दमनक लवङ्गातित॥ मरुवक अरु कंकोल, कमल कुलमुकुल कुमुदिनी। शतपत्रादिक ललित, कलित कह्लार प्रमुदिनी॥ तिनमञ्जु परमपरिमल मिलित, चुंबित चारु अपार है। कावेरी ताम्रपर्णी सरित, तुङ्गभद्र जलधारहै ७ नीरधार गम्भीर, सान्द्र परिपीत तरङ्गन। मैत्रावरुण सुतीय, ललित लङ्का शशाङ्क भन॥ रम्यरुद्र पादाद्रि, सरल सिंहल सालकजन। श्रीगोपालक पाण्ड्य, अचल विद्रुम मण्डलवन॥ पुन्नाटककेरल चोलकुन, कु- न्तल कर्नाटक कलित। करहाट आंध्रकल कामिनी, कृतसनान जित अति ललित ८ पीनस्तन बरवदन, जघनतन मल भुज मूलन। तिष्ठित धुत धम्मिल्ल, भार अन्तर्गत फूलन॥ मृगमद अगरु कपूर, कलित कुंकुम श्रीखण्डन। रचित यक्ष कर्दम, विमर्द वर्द्धित वपुमण्डन॥ वह विविध गन्ध परिमल बहुल, कुसुम मि- लित मारुतचरत। प्रोत्थित भुजंग प्रफुलित फणन, खंजरीट क्रीड़ा करत ९ स्वच्छ क्षीर नीहार, कलित कास्मीर फटिकासित। शुद्ध शंख कर्पूर, कुन्द अवदात अपरिमित॥ महाभुजंगम परम, स्फीत फुत्कार प्रफुल्लित। फणामणिन मधि खंजरीट क्रीड़न्त बिलोकित॥ हुव वाम नयन सकरुण सजल, इतरस विस्मय मोदमय[1] उभचिह्न

होतही तीय, तेज तरतोमग्रस्यो है ॥ इमि चारतरय भोगवन तनु, रह्यो शून्य अवशिष्ट है । यह कहा राम जीवन तजउ, कुलिश कठिन अतिक्लिष्ट है ॥ १४ ॥

इति श्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रविरहदशावर्णनंनामचतुर्दशोल्लासः ॥ १४ ॥

षट्पदछन्द ॥ लक्ष्मसहित श्रीराम, महावन विच विचरत उत । गौर गवय मातंग, शरभशार्दूल कोलरुत ॥ कोलाहल आहूत, भूत बैतालपाल है । समुत्ताल कङ्काल, काल विकराल जालहै ॥ चय-चक्र बालनालकृत, तुमुल घोर चिकारमिल । बहलान्धकार करि-कलितगुह, अन्तराल बिलसन्तकिल १ अविरल परिमलबहल, सरल चञ्चल बहु विगलित । बृन्दविमल मकरन्द, बिन्दुकीलाल जालजित ॥ आलबाल वरवृक्ष, सुपिच्छिल लसत ललिततित । प्रमत्तालि गणमाल, लुलित मारुत आन्दोलित ॥ बाचाल विपुल फुल्लित लसत, वकुल मुकुल कुलजाल है । धूसरितधूलि कोकिल बधू, कूकमाधुरीमालहै २ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ तरल शिलोच्चय शिखर शिखी समुदाय हैं । नर्तनलीला सानुकूल मुदपाय हैं ॥ प्रचलत चक्रचकोर पक्षिगण लक्ष हैं । परहां । गुञ्जत मञ्जुलशब्द विपुल प्रतिवृक्ष हैं ३ ॥ षट्पदछन्द ॥ अम्बर चुम्बनललित, लक्ष उर अन्दर दरसत । आलम्बनफल विपुल, भार आलम्बित सरसत ॥ सकल जन्तु संतोष, पोष निर्दोष विभूषित । सुधास्पर्द्धि वर्द्धिष्णु, सरस रसमय निरदूषित ॥ हिंताल तमाल रसालतरु, ताल प्रियाल सि-शालफल । मालूरशाल मलशल्लकी, पुनि शिरीष कृतमालभल ४ अशन शमी शिंशपा, शाक चम्पक अशोकचुन । कर्णिकार सुरदारु, अवर बहुसार श्रवणार्जुन ॥ कोविदार जम्बू कदम्ब, अरु निम्ब उदुम्बर सो भ जनरु करञ्ज, वकुल निचुलक खजूरवर ॥

पुनि बीजपूर जम्बीर, भाण्डार बहुरि बानीरहै । अरु कर्मरङ्गनारङ्ग, चन्दन कदली काश्मीरहै ५ धात्री पाटल कुटज, नील कङ्कोल बिभीतक । बटअङ्कोल मधुक, हरीतकि अरु भल्लातक ॥ आम्रातक केतक, जयन्ति बैकङ्कत कङ्कत । अरु अश्वत्थ कपित्थ, तिंत्तिणी जपा अलंकृत ॥ बन्धूक नागकेसर प्रमुख, अरण्यानि दुस्तर अहत । बाराहकन्द आरूढ़ उत, बास करत उत्कट रहत ६ पुनि दक्षिणदिशि पेखि, दक्षिणाचलपर प्रचलित । मलय मालती तगर, जाति दमनक लवङ्गतित ॥ मरुबक अरु कंकोल, कमल कुलमुकुल कुमुदिनी । शतपत्रादिक ललित, कलित कल्हार प्रमुदिनी ॥ तिनमञ्जु परमपरिमल मिलित, चुंबित चारु अपार है । कावेरी ताम्रपर्णी सरित, तुङ्गभद्र जलधारहै ७ नीरधार गम्भीर, सान्द्र परिपीत तरङ्गन । मैत्रावरुण सुतीय, ललित लङ्का शशाङ्क भन ॥ रम्यरुद्र पादाद्रि, सरल सिंहल सालकजन । श्रीगोपालक पाण्ड्य, अचल विद्रुम मण्डलवन ॥ पुन्नाटककेरल चोलजन, कुन्तल कर्नाटक कलित । काहाट आंध्रकुल कामिनी, कृतसनान जित अति ललित ८ पीनस्तन बरबदन, जघनघन भल भुज मूलन । तिष्ठित धुव धम्मिल्ल, भार अन्तर्गत फूलन ॥ मृगमद अगरु कपूर, कलित कुंकुम श्रीखण्डन । रचित यक्ष कर्दम, बिमर्द बर्द्धित बपुमण्डन ॥ वह बिबिध गन्ध परिमल बहुल, कुसुम मिलित मारुतचरत । प्रोत्थित भुजंग प्रफुलित फणन, खंजरीट क्रीड़ा करत ९ स्वच्छ क्षीर नीहार, कलित काश्मीर फटिकसित । शुद्ध शंख कर्पूर, कुन्द अवदात अपरिमित ॥ महाभुजंगम परम, स्फीत फुत्कार प्रफुलित । फणामणिन मधि खंजरीट क्रीड़न्त बिलोकित ॥

हुव बाम नयन सकरुण सजल, इतरम बिस्मय मे दमय । उभचिह्न

अशुभ शुभ सूचना, भये संगमन प्रीतिभय १० संस्थितकोल कपोल, काकरव बामभाग हुव। कहत व्यसन अति दुखित, उचित संतत सब जनभुव ॥ बरतवहै दिन रैन, कहा अब अग्र दिखावहि। पुनि दक्षिणदिशि, खंजरीट शुभलक्ष लखावहि॥ अविरुद्ध भुजंगम फणनपर, क्रीड़त यहहै राज्यमद। मम एकसंग दोनौभये, हैं यह अति आचरजपद ११ ॥ सोरठाछन्द ॥ भरेनयन युग नीर, भया विश्रामकरि चिन्तवन ॥ सकरुण श्रीरघुबीर, बूझन लगे भुजंगसों १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ तरुणबिम्बइव लोल, जिह्व बन्धूक सुमनसम। तेरे नीरजनयन, भूरि भ्राजन्त भुजंगम ॥ हौं बूझत हौं तोहिं, पवनभुक कछु करुणाकरि। कोमलांगि शरदेंदु, सुखी देखी कोउ सुन्दरि ॥ इमि सुनत बचन रघुबीरकर, रचनरम्य सुकुलपसने। बोल्यो विनीतह्वै बैन शुभ, भुजंगराजहियाहित घने १३॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ गई गई वपु चम्पवर्ण पीनस्तनी। कुंकुम चर्चित अङ्ग करुणारसमें सनी ॥ शीतलांगिका आश गङ्गइव भ्राजिता। हरिहां। तारागण मधि चन्द्ररेख समराजिता १४ कहत राम इहिं व्यसन अधिकका औरहै। कहाहोयगो अग्र अभ्युदय मोरहै ॥ मरण शरण बरमोहिं नाहिं यह राज है। परहां। वह लक्ष्मण को होउ सुसुखद समाज है ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविद्यापितरत्नपुरस्थकवि दीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेशुभाशुभशकुना ऽवलोकनोनामपञ्चदशोल्लासः ॥ १५ ॥

षट्पदछन्द ॥ बाम तिरस्कृत कियो, कियो दाहिनो पुरस्कृत। धन्य सुवन्यशरन्य, अरन्यानी गाहनधृत ॥ किष्किन्धाद्री रौद्र,रुद्र अवतारमारुती। दीनी सकल सुनाय, ताहि निज उरसि आरती ॥ लेगयो सीयहरि कोउ कित, तुम ताको देखी सुनी। कपि हृष्टहोय

संकट हर, बदवानी चेतासिन्धुनी १ सुनिये कृपानिधान, कपिरामा अम्बर मग । हौंथित हौं तिहि समय, अहो इतमें याही नग ॥ पाप रजनिचर प्रबल, किये आकर्षण अतिद्रुत । जावतहो जिहिं बेर, श्रवणधुनि आई अद्भुत ॥ हाराम प्राणपति जेहिरिपु,भुखउचरत हारत भई । मणिभूषित भूषण मध्यते,अवलोकन करिये सई २ ॥ दोहाछन्द ॥ आञ्जनेय इमि कहि गिरा, भूषण भव्य समग्र । अविलम्बित उत आनिकै, रखे रामके अग्र ३ रामसजल चप सह करुण, गदगदगिरा गँभीर । भूषण निरखे नयनभरि, बाढ़े पुलक शरीर ४ ये भूषण वैदेहिके, निश्चय मेरे जान । तुमहूँ लक्ष्मण निरखिये, करिलीजै पहिंचान ५ ॥ लक्ष्मणउवाच ॥ नाथ न जानत और मैं, कुण्डल कङ्कन आदि । पहिंचानत नूपुरनको, अनिश अंघ्रिअभिवादि ६ ॥ कविरुवाच षट्पदछन्द ॥ सियआभूषण अखिल, राम निज हृदय लगाये । युगल नयन भरिनीर, वचन गद्गदगिर गाये ॥ इतर आभरण धरत,हुती नहिं हार हीयपर । इतकहुँ अन्तर सहि न, सकत जानकीजीय पर ॥ फल पंक्ति भेदको प्रापभो, यह कीन्हो निरधारहै । अब हारन की गिनती कहा, अगणित परे पहारहै ७ मुद्रा मुख मैथिली, लखे विन गमन चहतचित । परमहंस यह जीव, तदपि नहिं जायसकत कित ॥ वैदेही वहुविरह, बह्निज्वाला बिदग्धतनु । तेहिते भो पर बस्य, पंगु प्रचरत न बनतजनु ॥ पुनि पवनपुत्र प्रापत किये, आभूषण अवलोक उन । थुबिगये प्राणन पाय न किय, आंजनेय आलाप सुन ८ अनुनय सहहनुमान, विनयवर वचन उचारत । पुहुमिपाल श्रीराम, हीय नाहिं हूजै आरत ॥ त्यज निज दयिता शोक,एकलंकेश लोकसह । जीतनको समरत्थ, कछू संशय नहिं यामह ॥ यह गिरि सुग्रीव निवासथल, तितमें प्रभु पगुधारिये

रघुवंशनाथ नरनाथ उत, वानरनाथ निहारिये ६ ॥ कविरुवाच ॥ तदनन्तर हनुमान, लक्ष्मण रामसहित तित । गवनकियो अवि- लम्ब, मभय सुग्रीव हुते जित ॥ तीनहुँको कपिनाथ, लखतभो उत में कैसे । मूर्तिमन्त मनु अग्नि, अङ्गधरि आवत ऐसे ॥ है गार्हपत्य इक अनल अरु, दक्षिण दहन द्वितीयहै । अभिधान अमल विल- सन्त, उहिं आहवनीय तृतीयहै १० अनिलज आनन अग्नि, राम कान्ताहाति वृत्तं । वानरेंद्र वरनन्त, प्रबल बाली कृतकृत्तं ॥ विद्य- मान पतिहोत, यहै अति अकृत कियो है । मारणकारण ताहि, राम- पन तुरत लियो है ॥ श्रीरघुवर कियो अधिज्य धनु, सुबहुल रोषा- नल प्रबल । कान्तापहरणकी ताप अति, हुती अनुभवित भांति भल ११ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नमन ससंभ्रमकियो अवधके इन्दको । आलिङ्गनकरि प्रचुर प्रेम सुकपीन्द्रको ॥ द्रुतभाविनि कन्दर्पकेलि सविलासहै । परहां । विस्मृत पुनरभ्यास करत मनुतासहै १२ ॥ दोहाछन्द ॥ कपिपति बूझत मारुती, दशरथनृप सुतचार । ताटक अन्तक कौन कहु, बोले पवनकुमार १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ राम भरत अरु लषण, शत्रुहन सुवन चारसुन । दशरथनृपके विदित, विश्व कपिराज श्रवणसुन ॥ दिनकरकुल सन्तान, वल्लिवर गुच्छ सुमधु- कर । राजपुत्र सुविराज, मान तिन मध्य धीयधर ॥ ताटका काल रात्री हुती, रामचन्द्र प्रत्यूष यह । जिहिं चरित कथा कल कन्दली, मूलकन्दसम स्वादगह ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूल्हासिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीराम
सुग्रीवसमागमोनामषोडशोल्लासः ॥ १६ ॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ सुनत प्रतिज्ञा परम, राममुख वारिज विकसी । बालीपठये सप्त, ताल अवलोकन निकसी । दैत्य सात

तरु ताल, सात अन्तर्गत अतिद्रुत । प्रकृति कुटिल करि क्रुद्ध युद्ध कारण आये उत ॥ सौमित्रि किये ते सरल जिन, शेषपृष्ठ थिर मूलकिय । निज चरणभार करि लक्षमण, दिव्यअस्त्र रघुराजलिय १ सोरठाछन्द ॥ सुनिये कृपानिधान, वदत लषण साशंकवच । इनपै शरसन्धान, सावधान है कीजिये २ कीजै सात निपात, एकसाथ इक विशिखकरि । करत महारक वात, यामें है जो अन्यथा ३ जानि राखिये सुजान, रामकहत सांचयहै । हरत असज्जन मान, सज्ज भये सज्जन रहत ४ ॥ कविरुवाच । छप्पयछन्द ॥ राम लियो कर बाण, वानि मुखलगे उचारण । कियोहोय दृढ़भाव, कुशिकनन्दन पद धारण ॥ अरु पुनि जो मैं होउँ, तिरस्कृत विशेष विन । अन्य अङ्गना मध्य, गयो ममन न एकछिन ॥ तौ सप्ततालको भेदिकै, प्रविशहु शर पातालमहँ । इमि कहि करि धनुषहि सज्जकरि, कियो बाणसन्धान तहँ ५ कदली बाल प्रकाशद, भङ्गसम सत्वर कीन्हो । एक बाणमधि सप्त, ताल तरु बेधन चीन्हो ॥ सप्तसाि गज सप्त,सप्त मुनि सप्त सरित्पति । सप्तदीप अरु मातृ, सप्त भयभीतभये अति ॥ संख्यान साम्यता तालसम, हनि तिनको हमकोहने । जे सात सात जितने हुते,ते सब घबराने वने ६ छूट्यो बाण कमान,ताल तरु सात फोरिकै । धँस्यो धरातलको प्रमाण, तिहिं तुरत दौरिकै ॥ भङ्ग भुजङ्गम भूरि, भीत अम्बरु पुनि आयो । पुंप धुनाय धुनाय, भाव विधि को दरशायो ॥ कीन्हों न पराक्रम प्रबल कछु, रह्यो शेष अवशेष है । निरशेष बसुन्धर राखिवो, यामें कहा विशेषहै ७ सुनतश्रवण संग्राम, रामहत सप्तताल सब । निरपराध बधकियो, तरुन अस जियजान्यो जब ॥ कोपानल प्रज्वलित, हृदय निकस्यो मह बाली । गिरिन्नखर बिनचल्यो, निरन्तर संगरशाली ॥ फटकारी पुच्छ अति

उच्छलत,कटकटात किलकिल करत । उच्छाह छक्यो बहु बक्षथल, अति अधीर धीर न धरत ८ ॥ कविरुवाच ॥ ताराभई सहर्ष,मोद मनमें नहिं मावत । पुरुषोत्तम श्रीराम, परम कृपया पुनि पावत ॥ चिर बिरही सुग्रीव, बक्षथल लुठिहों तूरन । प्रियतम प्राणसुजान, काज सिधिहै सम्पूरन ॥ इति मन्यमान गिरिशिखरपर, आरोहन कीन्हों कलित । संग्राम राम अरु बालिको, लोचनभरि लखिबे ललित ६ शैलशिखर संचरत, मनोरथ बितरत तारा । पारागत शोकाब्धि,बीर सुग्रीवसुदारा ॥ प्रसुनाश नाराच, प्रबल धाराधिपधारा । हारावलि संत्यक्त,स्रस्त धम्मिल्लनभारा ॥ किलकिला शालि बालीमहा,कुटिल कुचाली क्रूरहै । प्रियसन्तापी पापी परम,यमपुर जलदि जरूरहै १० गिरीगरिम गम्भीर, महा महिमालखि बाली । कहत लक्षमन राम-बन्धु निरखहु बलशाली ॥ बहल कलकला करत, बानराली प्रति-पाली । शिव शिव तुमुलोत्काल, चालित अति कृतघ्नणिमाली ॥ लांगूलवल्लि प्रोद्यत शिखर, कवलित कौशिक कुलिशाकिय । दो-र्दण्डशैल प्रहरण निपुण, किहिं करिकै योद्धव्यजिय ११ ॥ दोहा छन्द ॥ रामधीरता धारिधिय, नारायणनाराच । सज्ज कलित को-दण्डकरि, सुरचन वचन उवाच १२ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ पुरामूर्द्ध अभि-सिक्त सगुणबर विग्रहै । वेदमन्त्रकरि कियो कलित तब छिग्रहै ॥ तिनके तेज प्रताप करहु उच्छिन्नहै । परहां । दारुण परतिय हारि प्राणवपु भिन्नहै १३ ॥ दोहाछन्द ॥ पौरन्दरि परदारको, हरण पराभव शाप ॥ ब्रह्मतेज परिपूर्ण पटु, लसत रामशर आप १४ ॥ षट्पदछन्द ॥ पायो बीर प्रमाण, बाणरघुपति बर बिलसत । पावक प्रलय समान, शोचि बिजुरी जिमि उल्लसत ॥ हृदय भेद कृत बालि, तबै पौरन्दरि उच्चरत सबके शिरपर काल,यहै वासर निशि प्रचरत ॥ मम पिता

पुरन्दर तासु रिपु, रावण अनिहत इतरयो । यह शल्य हृदय शालत प्रबल, हौं सशल्य परपद गयो ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावलजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
दीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेबालि
हृदयभेदनोनामसप्तदशोल्लासः ॥ १७ ॥

पट्पदछन्द । कविरुवाच ॥ है सकरुण सविषाद, राम उच्चरत लक्ष्मण प्रति । सुन सौमित्रे यहै, काज कीन्हों अनुचित अति ॥ गिरिगह्वर सधि विहित, योनि निज मानि महतसुख । अनपराध अनुभवत, ताहि दीन्हों महानदुख ॥ किय महावीर बालीहनन, तासु प्रबल परिताप है । हौं मन्दभाग्य ह्वैहै कहा, अब मुहिं सियसुख पापहै १ रघुनाथ पछताय, रामकह पौरन्दरप्रति । तू ऊरनरन तात, बात यह जग जाहिर अति ॥ मेघनाद शरओघ, प्रसर हरिदुर्यश दीन्हों । गौतममुनि के शाप, नियन्त्रित भुजबल कीन्हों ॥ किय जनकजास रावनत्वया, कक्षागर्त कुलीरहै । ह्वैजै विशल्य तव शल्य हर, जाग्रत अङ्गद वीर है २ ॥ दोहाछन्द ॥ मेरी पाय सहायता, अङ्गद हनिहै ताहि । ह्वै विशल्य कीजै गवन, रावण रहिहै नाहि ३ ॥ बालिरुवाच ॥ कहा बालि सुग्रीव जो, कारज करिहै तोर ॥ सो हौं कानहिं करिसकत, निरपराध वधमोर ४ कविरुवाच । पट्पदछन्द ॥ रामनयन भरिनीर, विमलवर बोलेबानी । सुनहु पुरन्दरनन्द, कहतहौं तोहिं बखानी ॥ निरपराध सुखअर्थ, तोरवधभयो मोरकर । हनहु अबै तू मोहिं, शुद्धिह्वैहै ममसत्वर ॥ मत होहु जनकजा विरह अब, अभिरत उर इच्छत यही । सुनि बैन कमलदल नैनके, बाली तब बोल्यो सही ५ ॥ दोहाछन्द ॥ जबलौं हौं हनिहौं न तुहिं, तबलौं शमनसकास । ह्वै निवास तजिदीजिये, स्वर्गवास अभिलास ६ इमि कहिके श्रीराम प्रति, बाली छांड़े प्रान । तिहि वचको सत्यकरन हेतु, रघुबर परमसुजान ७ कलुककाल सेवित शमन,

संयमनी पुरवीच। प्रहरि पुरन्दर पुत्रको, निवसे नयननगीच ८ पुनिविषाद परिहारकरि,कियपौरुष अवलम्ब। परम सुहृद सुग्रीवको, दियोराज अविलम्ब ९ ॥ षट्पदछन्द ॥ आदिकियो अभिषेक, सुहृद सुग्रीव राजपद। यौवराज्य अभिषिक्त, बालिसुत कीन्हों अङ्गद। पवनतनय ले आदि, कपिन सेनापति कीन्हे। बिनशंका प्रस्थान, ललित लङ्काप्रति चीन्हे॥ तब वर्षाकाल व्यतीतकी, कपिभट म-न्त्रिन विनय किय। सुनिमाल्यवान गिरिशिखरपर,बर निवास जानन्त जिय १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नाहिं रामते इतर शूरतर कोयहै। तिय हृतिसम नहिं अन्य पराभव होयहै॥ तदपि न कीनो सपदि समुद्र प्रवेशहै। हरिहां। बन्धनसेतु करन्त आप अवधेशहै ११ नाहिंरामसम बली सकल संसार है। दारहरण सम अहंकार न निहारहै॥ तदपि प्रतिक्षा शरद सेतु दृढ़बंधिया। परहां। तदनन्तर तितजाय निशाचर रंधिया १२ ॥ दोहाछन्द ॥ माल्यवान गिरिशिखर थित, लषणसहित श्रीराम। सुमिरिसीय कमनीयता, बदत बचन गुणग्राम १३॥ षट्पद छन्द ॥ इन्दू अञ्जन लिप्त, गलित दृष्टी इव हरणी। विद्रुम अरुण मलान, श्यामछबि सुबरण बरणी॥ सियास्वल्प सुरलेश,कोकिला कण्ठ परुषसम। बरहिनके बरबरह, गरह गुनहेरत हियहम॥ इमि बरणि अङ्ग सादृश्य को, जानकि गुण कीर्तनाकियो। लखिताण्डव आडम्बर तड़ित, कहनलगे पुनि भारिहियो १४ ॥ किरीटछन्द ॥ लोचनचारु समान सरोज तिन्हैं यहवारि डुबावत पावत। तोर मुखच्छबिछाय छटासम छज्ज छपाकर मेघ छिपावत ॥ तो गति तुल्य हमेश चलैं जगहंस हमैं दृगदूर दिखावत। यावत तावतमात्र बिनोदन वस्तुसबै लखि दैवदुरावत ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्न पुरस्थकविटीक वलासे

अथश्रीहनुमान्नाटकेपञ्चमोंक । कविनाथ दोहाछन्द श्रीरघुवर कह वचनवर, वानर भटन सुनाय। शुचि सैनिक सुग्रीवके, चित्त सुनत लगाय १ महतव्यसन प्रापतभये, थिर न रहत कोउ लोग । लखि निशङ्क लङ्कापुरी, को इत आवन योग २ ॥ षट्पदछन्द ॥ ह्वै सहर्ष हनुमान, भुजन आस्फालन कीन्हों । निज प्रचण्ड दोर्दण्ड, परम पौढ़त लखिलीन्हों ॥ देव परय ममअङ्ग, अष्ट अंगुलमय दरसात। द्वादश अंगुल पुच्छ, बाहुअति लघुतर सरसत ॥ अति अमित अगाध अपार है, रत्नाकर किहि विधि तरत । यह सुनतराम वि-स्मित भये, जाम्बवान तब उच्चरत ३ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ देव मारुती यहै रुद्र अवतार है । करहु रुद्रको तपन धीय निजधार है ॥ सुनत यहै वच स्वच्छरामनुति कीन है । हरिहां । कारज मोर अशेष आप आधीनहै ४ मुदितमन जनि करहु कहावपु क्षुद्रहै । लसत रुद्र अवतार कितोक समुद्र है ॥ अघटित घटना घटन पटी यश पेखिये । हरिहां । लङ्का शङ्का कहा गिनतमें लेखिये ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सुनत बचन श्रीरामके, हिय हर्षे हनुमान । मनसि महामुद मानि कै, बदत प्रबल बलवान ६ ॥ मनोहरछन्द ॥ कूरम है मूल आलवाल तूल पाथोनिधि, दशौंदिशि शाखा सर्व शोभाकी समाज है । प-ल्लव समान मेघ सुमन नक्षत्र सर्व, सूर्य सोम फल दोऊ विपुल वि-राजहै ॥ कहै हनूमान स्वामि करुणानिधान सुनो, यहै व्योम वृक्ष मोर क्रम गतआजहै । सुनि कपिराजकी अवाज सियशोध काज, आयसु उचारी अवधपुर अधिराजहै ७ हुकुम चढ़ाय शीशबोले पुनि हाथजोड़ि, इहिकी खुलासा खूब स्वामि सुनि पाऊँमैं । लङ्का इत लाऊँ जम्बूद्वीप लेइजाऊँ उत, अथवा अशेष अम्बुसागर सुखाऊँ मैं । किंवा कैलासमेरु मन्दर विन्ध्यादि आदि अदिन उखारि सेतु-

बन्धन कराऊँमैं । येहो परिपूर्ण प्रभू कीजिये हुकुम तूर्ण, सीय इत लाऊँ लङ्का चूर्णकरि आऊँमैं ८ राजन के राज महाराज अधिराज राम, रावरी रजायसु यथैव सुनि पाइहौं । शोपिहौं समुद्र क्षुद्र लङ्काको अलङ्का करौं, लङ्का अधिपाल वेगिबांधि इत लाइहौं ॥ पतिव्रत मानकीर्ण जानकी ले आऊँ नाथ, अंघ्रिप उखारि अद्रि ओघन उठाइहौं । सागर पटाइहौं हटाय वारिनिधी वारि, दुष्टन दटायकै अरिष्ट उचटाइहौं ९ कहिये कृपानिधान होतहै विलम्ब मोहिं, मारतण्ड वंशके विभूषण अखण्डहै । संयुत प्रकारसविहार तोरणादिसह, लङ्का लाऊँ इतै कै तितेई करौं खण्डहै ॥ युद्धकाज क्रुद्धह्वै समुद्धत सकल सैन्य, सबको उठाय तितजाय करौं मण्डहै । कछूहु असाध्य नाहिं सकल सुसाध्यमम, परम प्रचण्डचण्ड मेरे दोरदण्ड है १० ॥सोरठा छन्द ॥ सुनि मारुत बरबोलि, श्रीरघुबर प्रमुदित भये । मञ्जुमुद्रिका खोलि, पवनसुवन अर्पणकरी ११ लङ्घन करहु समुद्र, सिय विसास दे मुद्रिका । पुनि इत आवहु रुद्र, मोजीवत अविलम्ब अति १२ तब तथास्तु हनुमन्त, कहि गहि मञ्जुल मुद्रिका । किय वन्दन आगिनन्त, श्रीरघुवर सुग्रीवसह १३ पवनपुत्र बड़बीर, चपलचले बहुवेग ते । पतितरंगिनीतीर, चितवत किय चित चिन्तवन ॥१४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविद्रीका रामानुजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे पवनपुत्रप्रयाणो नामैकोनविंशोल्लासः ॥ १९ ॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ दूरतिक्रमक्रम मिलित, घूर्म ऊर्मी मर्मच्छिद । युतरज भरकादम्बककुभ रुन्धत गुरुगाति भिद ॥ गाढ़ाम्रेडन रूढ़, घटाघन संघट्टनकारि । नील व्योम सुर सरित, अम्बुकण गहत धायधारि ॥ अति ऐसे झंझा बात ये, करत घोर घनघातहै । अवलम्बि धैर्यधिय श्वसनसुत, सज्जाकियो सवगातहै १

शोथतकृत लांगूल, स्फालकेलीकरि व्याकुल भये गगनचर अखिल पुच्छफटकार छटाकुल ॥ स्तम्भित अति प्रकाश जलधिजलचर वा चालित । भये भूरि दिग भागवीर लङ्घत जलनिधिजित ॥ जह्यालवंड उड्डीन अति, खगपति अङ्गीकृतकियो । मनमगन गगन मगसंच-रत, हनूमान हरषित हियो २ पुच्छकेतु उचाल, नभसि पृथुगति अङ्गी-कृत । अभ्र छिथा उत्पतन, पृष्ठ कृशोध सरचकृत ॥ उरुवेग उछलित, पयोनिधि ललित लहरकिय । अरुण अङ्गवपु, दूर सिन्दूर छटा लिय ॥ अतितेजभाग करिकै सकल, दिङ्करि कटितट स्वरणकृत । ते सूर्य विद्ध अम्बुदसदृश, अति उत्तम उपमानभृत ३ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ उहि अवसर आयो उतै, हिमगिरि सुत मैनाक । कछु मो पर विश्रामगहि, गमनकरो पुनि नाक ४ ॥ मनोहरछन्द ॥ प्रेरित पयोधि रत्नाभ कलकांचनाग, सुवनहिमाद्रिमइनाक नाम धेय है । बचन उचारत भो आये दूर अध्व आप, सुन्दर शिखर मोर अत्रश्रम हेय है ॥ सुनि गिरिवाच अग्र अंगुली लगाय ताहि, चले अग्र उग्रगति माहति आगेय है । भुजरय पौनपुञ्ज पूरित ककुभकरि, आञ्जनेय अरिन अजेय मग श्रेय है ५ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ माला शालतमाल तालगण जालहै । बेलातट मारुती लखत सुविशालहै ॥ बक्षय कल्लोलिनी तूर्ण सुलंघयन् । परहां । उच्चतालधी बल्लिगगन सुलोलयन् ६ ॥ पद्ध-पदछन्द ॥ अथ दशरथनृपसूनु, अमल आयसु करिकायो । वन माक्षिकसम रूप, पुरीलङ्का लखि पायो ॥ पवनपुत्र हनुमान, अन-तरत शिंशप अगहै । मात्रा परिमित देह, जाहि जान्यो नाहिं जगहै ॥ जानकी अग्र उत आयकै, अभिनन्दन अगणित करत । करअंगु-लीय रघुनन्दकी, धराणिसुता सम्मुख धरत ७ जनकनन्दिनी जनाति,

कौन तू हौ शाखामृग कौन पठायो तोहिं, रामपठयो इततवढिग ॥

यहै कह्यो तव हाथ, मुद्रिका तिनके करकी । तोहिंदई यह नाहिं, निशानी है निज वरकी ॥ जबलई जानकी प्रेमयुत, हृदय लगाई सहित हित । रोमांच कलेवर संचरे, नयननीर बरसत अमित ८ ॥ दोहाछन्द ॥ आंखिनते अविरल गलत, अश्रुन ओघ अमाप । सुवरणकी जानी नहीं, तब मारुति कह आप ९ ॥ नगानिकाछन्द ॥ सुवर्णकी सुवर्णकी सुवर्णकी सुवर्णकी १० ॥ सोरठाछन्द ॥ अवनि अंगजा आप, कछु आशा उरआनिकै । पोंछे अश्रुकलाप, मुद्रिक सों बूझनलगीं ११ ॥ षट्पदछन्द ॥ अरी मुद्रिका कहहु, कुशल सह श्रीरघुनन्दन । कहु कुशली है लच्छ, स्वच्छ चितसरसत चन्दन ॥ सुन स्वामिनि युग भ्रात, कुशलपै तव चिन्तातुर । बिरह न दीजै देव, यहै अभिलाष रहत उर ॥ सिय तव वियोग जवते भयो, मुद्रिक अभिधा भजिगयो । प्रभु करमधि धारण करत, नित नामधेय कङ्कण भयो १२ इहिमुद्रिक मणि मध्य, पीउ प्रतिबिम्ब बिलोकत । करों दरश अस आश, उरसि चितदे अवलोकत ॥ निज प्रतिबिम्ब निहारि, अमित उर अचरज आयो । प्रभु मनमेरो ध्यान, धरत सोही वपुपायो ॥ तद्रूपतनकछू ना लखत, पेखिपरत मद्रूपहै । भ्रमभूरिभयद भ्राजन्त मन, सुता जनकपुर भूपहै १३ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ पुनि कछु चेतन पाय कहत हनुमानते । अति कृश पिय वपु जान परत अनुमानते ॥ मुद्रिक कङ्कणभई अवर कहिये कहा । परहां । दारुण दशा वियोग रची है विधिमहा १४ तब बोले हनुमान युगल करजोरहे । पहिलेही कृश परम बिरह पुनि तोरहे ॥ प्रतिपद तिथि नर पढ़त तासु विद्या यथा । परहां । पावत तनुताकन्तकलेवरहै यथा १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि वैदेही वदत, बिरह मधि कछु न सुहावत दिनकर समद धिती, मधाकर दृग दरशावत । पङ्कज

लगे फुलिङ्ग, कुलिश कर्पूर परसहै। शम्पालक शशिकला, तासु बड़वानल जसहै॥ मनुमलयज दावानलजगत, पशुवियोग दुख गाइये। संदेश मोर गहि रामढिग, अविलम्बित उत लाइये १८॥

हनुमानुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ कछु न राम शरदूषनात मनमानिये। हरियूथप दुर्गम्य कछु न पहिचानिये॥ कुपित लखनदृग स्वामि रक्षकुलहै कहा। परहां। सानुकूल तव देविदैव मदुदितमहा॥१७॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीसूजरसिंहजीविज्ञादितरत्नपुरस्थकविटीकारामात्मजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेन्दुशतिर्मिर्सं-तेजाद्योनामविंशोल्लासः॥ २०॥

कविरुवाच। पद्धरछन्द॥ एते नै समरुझ, पवनसुत पूछनलागे। राजवाटिका कहां, मात कहि पश्चिमभागे॥ शाखो सन मधरह, पुच्छ फटकारि गयेतित। लीलानन उत्पाटि, कियो मधुवन भकपाजित॥ अभिधान अक्ष रावणसुवन, मारयो परिवाधातहै। तिहि क्रोध अरुण लोचन किये, मेघनाद दरशातहै १ ब्रह्मदत्त ब्रह्मास्त्र, चलायो मेघनाद जब। रुद्ररूप मारुती, जरै वृथाभयो सब॥ इन्द्रजीत उर आनि, अमित विधि निन्दाकीन्ही। तबै विधाता पवनपुत्र, द्युति छतिचितचीन्ही॥ सुनि वाक चतुर्मुख विनयते, आये बन्धनवीचहरि। बानर विलोकि रावणतदा, बोलत रचना वचनकरि २ रे बानर तू कौन, अरेहौं तवसुतहन्ता। खण्डखँडन श्रीराम, दूत अभिधा हनुमन्ता॥ मम दोर्दण्ड कठोर, ताड़नाद्भुत यातिसोहै। त्रिकुटाचल है कहा, मेरु का तू पुनि कोहै॥ कोदण्ड जनक दीक्षा गुरु, अनघ क्षिप अधिकायते। लङ्केश निशाचरनाथ तू, कहा कोटि कीड़ायते ३॥ चन्द्रायणाछन्द॥ कुपितहोय लङ्केश चलायो लम्भहै। कस्यो न कपिको केश सुमन जिमि लग्ग है॥ सज्जन मैत्री यथा नाहिं उच्छिन्नहै। हरिहां तव श्वसनसुत वपुष भयो न हि भिन्न है ४

शणवेष्टितकरि बहल चलंचयतूल है तेलप्लुतद्रुत कियो ललित लांगूलहै ॥ दनुज करत देदीप्यमान दरसन्तहै । हरिहां । हेरिहेरि हनुमन्तहीय हरसन्तहै ५ सिया हिया अकुलाय कहत बरबैनहै । चित चिन्तातुर महातनक नहिं चैनहै ॥ अरजी अनल सुनन्त अनिलसुत कारने । हरिहां । सुहृद सुवन जियजानि कृपाकफवारने ६ आज्य होमकरि कियो राम तुहिं तुष्टहै । परुषबचन सुनि बिप्र भये नहिं रुष्टहै ॥ पतिभक्ती करि युक्त मोर जो चित्त है । हरिहां । ह्वजोशीतल भव मरुतके मित्त है ७ ॥ सोरठाछन्द ॥ शीतल भयो हुतास,सुनि सियकी पदुप्रार्थना । हनुमतहीय हुलास,चारुचन्दनालेप सम८॥ मनोहरछन्द ॥ निपट निशङ्क लङ्कगढ़को दहन कियो, बानरके पुच्छ पायो जन्म अग्नि आप है । ज्वाला आसमानलौं बिकासमान भासमान, दशौंदिशि पूरिरहीं अम्बरअमापहै ॥ आसुरी असुरबाल वृद्ध तरुणादि सब, व्याकुल बिशेषहाय अखिल अलापहै । मनो राम चापशर दापके संताप तस,स्वर्गभो पलायमान रावण प्रताप है ९ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ पलभक्षक पल भक्षिहुताशन प्रबलहै । परम त्रास संत्रासिभयो अति चपलहै ॥ गिस्यो अम्बुनिधि बीच जासप्रतिबिम्बहै । अरिहां । मानोपिबत अति तृषित तितै अब अम्बु है १० दशग्रीव बहिभार करत सुबिचारहै । हनूमान बरबिदित रुद्र अवतार है ॥ हौं आजत भव भक्तनगर मम किमि दह्यो । परहां । इहिको कारण यही चारु चितमें चह्यो ११ दश शिरकरि दशरूप भये संतुष्टहै । एकादश अवशेष भयो यह रुष्टहै ॥ पंक्तिभेद कल्याण कौनको देतहै । हरिहां । नगरदाह हनुमान कियो इहि हेतहै १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ बड़वानलकरि सिन्धु,बिम्बदिनमणि करिअम्बर । चपलाचयकरिलसत,रुद्दा अति मेघाडम्बर भालनेत्र भ्र जन्त,तथा न हिं श शिभृत

करहै। प्रलयानल करि काल, इन्द्रधनुधाराधरहै ॥ इमि भुवमण्डल करि मेरु गिरि, तस शोभा नहिं लहतहै । देदीप्यमान कपि पुच्छ करि,अनुपम उपमा गहतहै १३ मन्दमन्द गिरि कहत,निशाचर नगर निवासी। मरुतपुत्र इक यहै, पुच्छ ध्वज गगनविलासी ॥ स्वामियि कपि कटक, अहह इत पीछो ऐहै । चीन्हि चीन्हि के सकल, दुसह दारुण दुख दैहै ॥ इहिं एक कियो उतपात अस, अगणित वानर आयहैं । अति हाय हाय घबराय, वट कहा कहा दुखपाय हैं १४ नभमण्डल थितहोय, कहत कपिवर दशमुखसों । हौं इकतू कोटीश, तदपि तुहि जीतौं सुखसों ॥ जनकसुता जानकी, लेव जावो तित अतिद्रुत। सबप्रकार समरत्थ, स्वामि मुहिं दिय न हुकुमउत ॥ सुग्रीव अग्र रघुबीरवर, भुज उठाय ऐसे कही। क्षणमध्य छपाकर निकरयुत, रावणहौं हनिहौं सही १५ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि कहि लङ्का भस्म करि, बनिकाशोक बिहाय । अभिज्ञान याचन करत, श्रीजानकि ढिगजाय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे लङ्कापुरदहनो नामैकविंशोल्लासः ॥ २१ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ काल व्यालवर वधू सदृश बिलसन्तहै । धूमशिखा सम शत्रु शिखा सरसन्तहै ॥ शिरोरत्न सियलेय दियो हनुमानहै । परहां । अभिज्ञान यह एक सुप्रथम पिछानहै १ चित्रकूट गिरि काककलेवर धारिकै । शक्रसुवन मम गयो सुहृदय बिदारिकै ॥ ईषिकास्त्र करि कियो तस्य चखकान है । परहां । श्रीरघुवर को देउ द्वितीय अभिज्ञानहै २ मनःशिलासम तिलक सुलालित कपोल में । कियो पाणितल मृष्ट कन्हु,जिय तोल मैं । यह तीसर अभिज्ञान पुरउपति भाषिहौं अरहां जीवन अवधी

मासमात्रकी राखिहौं ३ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ जलयुक्तं गहि रत्न: प्रमुख अभिज्ञान अनूपम । अभिबन्दन किय जनकनन्दिनी पद वारिजसम ॥ आय उदधितट आप, अटन अम्बर मगकीन्हो । आडम्बर भुज प्रबल: पराक्रम अद्भुत चीन्हो ॥ हनुमन्त महामति-मन्त अति, साधि स्वामि कारज सकल । अति सत्वर उत आवत भये, जित रघुवर बिलसत बिकल ४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ मारुत चुम्बित चारु केसरा लसतहै । प्रमुदित ताराधीश अम्बशर हशतहै ॥ बिर-हित रामालोक सुआतुरवन्तहै । हरिहां । आयो यहै बसन्त किधौं हनुमन्तहै ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सीतापति सम्भ्रम सहित, आलिङ्गतअव-लोकि । बिनवत युग करजोरिकै, बारम्बार बिलोकि ६ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ पियो नाहिं अम्बुधी, नाहिं लङ्कासुर नीता: । रावणशिर लायो न, नापि सीता आनीता ॥ आश्लेषार्पण पारि, तोप कारण किहिंपाऊं । लखि प्रभु प्रभुता परम, अनुग निज जीय लजाऊं ॥ बिभुवार्त्ताहारक दूत मैं, युत सँदेश इतउत कहौं । किहि लायकहौं करुणानिधे, आलिङ्गन कैसे चहौं ७ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामकहत बिकलपसहित, ऐरे कुटिल बिधात । कहा कहा करिहै अहो, सो जानी नहिंजात ८ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ कितै अयोध्यापुरी, अवर पुनि रामभद्रकित । तेऊ दशरथ बचन, पाय आये दण्डकइत ॥ कौन दुष्ट मारीच, कनकमय मृग अति अद्भुत । कुत सीता अपहार कितै मैत्री कपिपतियुत ॥ मुहिं कित सीताकी शोधको, पठयो श्रीरघुबर तितै । अति क्रूरकर्म सुबिधात यह, अव-टित अघटित कृतइतै ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामरत्त बिदरत हृदय, प्राणचहत परलोक । तूरन आवेदन करहु, जिमि जानकि अवलोक १० हनूमान सत्वर बदत, जगदानन्दक राम । तोर

प्राणगति द्वारकी, अर्गलकर अभिराम ११ इमिकहि अर्थ्यों शिर रतन,तिलक मृष्टवत्तूर्ण। चित्रकूटगिरि शिखरपर, सो वरण्यो सम्पूर्ण १२ रामपाय अभिज्ञानत्रय,साधु साधु कह बैन। प्रियाकुशल पूछनलगे, जलभरि नीरजनैन १३ ॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द ॥ कृशता वरणनकरौं,शशिकला मलिनद् शूला। पांडुये पुनि पाण्डुता, मृणाली मेलकनूला ॥ अश्रुश्रोत उच्चरौं, अम्बुनिधि अलप लगत है। लखत सीय सन्ताप, हुताशन शीतलगतहै ॥ लावण्य शेष बहु लगत वह, हिय रावर स्मृतिमात्रहै। हनुमन्त कहत सुनिये प्रभो, केवल करुणापात्रहै १४ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ प्रभु पूछत हनुमन्त पुनि, लङ्कापुर के बीच। कहा कथाकिय कर्णगत, कहहु उच्च अरु नीच १५ ॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द ॥ नाहिं कथा शृङ्गार, कुतूहल कथा नाहिं कित। नहिं साङ्गीतक कथा,कथा विधान जितै तित ॥ नाहिं करिन की कथा, तुरंगम कथा तथा नहिं। नाहिं धनुष की कथा, विशिखआदिकन कथाकहिं ॥ सुन नाथ निशाचर नगर मध्य, स्वपनहुं मधिनाहिं अन्यथा। भयभीत रावरे भूरिमन, प्रबल पलायनकी कथा १६ ॥ श्रीरामउवाच। दोहाछन्द ॥ त्रिदशन करि दुर्द्धर्ष अति, लङ्कापुरी महान। विद्यमान दशकण्ठके, किमि जारी हनुमान १७ ॥ हनुमानुवाच ॥ सीताके निश्वासकरि, कियो लङ्कपुर दाह। पहलेही वह दग्धही, कोपानल नरनाह १८ इक शाखाते कूदिकै, शाखान्तर पै जाय। शाखामृग को जोर यह, रञ्च न अधिक लखाय १९ सागरको उलंघिबो, तथा लङ्कपुरदाह। रावर पूर्ण प्रभाव सब, निरखिलेउ नरनाह २० ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कासधि शङ्का सहित, शरणागति सियबैन। क्षीरअमरके न्यायकरि, पिय बहु मोरबनैन २१ शरमोवाच तू ग हि है जो पीयत्रपु, पिय बनिहै

तनुतोर । होहिं युगल विपरीत रति, यामधि कहो निहोर ॥ २२॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीमरविलासे हनुमद्विजयो
नामद्वाविंशोल्लासः ॥ २२ ॥

हनुमन्नाटकेषष्ठोङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ पवनपुत्र जब जाय, कही कपिपति ते ऐसे । राज्य गर्वकरि बिसरि,गयो प्रभुकारज कैसे॥ बालीदशा बिसारि, दई सब भूल्यो निजदुख । पूरण रामप्रभाव,अनु-भवत इत सारेसुख ॥ सुग्रीव सुनत मारुत बचन, सकल सैन सह संचरत । परिहारि प्राणप्रिय प्रेयसी, समरवीरता धियधरत १ बिजय दशमि आसौज, विशददल श्रीरघुनन्दन । कियो प्रबल प्रस्थान, निखिल निशिचरन निकन्दन ॥ बल अष्टादश महा, पद्म संख्या कस बलहै । यूथनाथ ये कहे, अपर कपिसंख्य प्रबलहै ॥ बहु व्याप्त भयो भूतल सकल, दिशाबिदिश आकाश है। कपि कटक बिकट कटकटत रद, किलकिल शब्द प्रकाशहै २हनूमान कह सुनहु,नि-खिल नरनाथ मुकुटमनि । आवत यह चहुँओर, अमित कपिकटक अनीकनि ॥ जिनके भाराक्रान्त, भूमिमज्जत तिहि भरकरि । दशन कटंकरि लिखत, शेष अहिकमठ पीठपरि ॥ उत्पतत पतत ज्यों ज्यों प्लवङ्ग,त्यों त्यों नमतरु उन्नमत । फणिराज प्रयाण प्रशस्ति लिखि, फेनपुञ्ज अविरत वमत ३ हन्धित सन्धी सन्धि, स्वास उर्मिन करि अविरत । हारावलि गलछिन्न,रत्न अदयालु अमितच्युत ॥ कीन्हों फल भञ्जिका,भङ्गक्रम परम परिश्रम।श्रवणाकाश निरन्तराल शिरस्तब्ध भुजंगम ॥ ध्रुव धारत धरणीधीर धरि, भुग्न भयो भासन्तहै । बानर सुवीर बिक्रमनभर,तरलताप त्रासन्तहै४रटतरामभो मरुत,सूनुसुनि जीजै सत्वर क्लेश करनको कूर्म, ककुभकुल थगित निखिलकर ॥

कटक कपिकेर अपरिमित ॥ नासीर दुन्दुर मधुरमत, नागाडम्बर बहुलसत। पै जानतहौं यह मोर सब, विजय तोर भुजबल बसत ५॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ अति अद्भुत कपि कटक लखि, मिथिलभामिनी भूर। बदत वचन परिहाससुत:निरखत सैनासूर ६॥ षट्पदछन्द॥ नाहिं शस्त्रकित लसत,न कछु अस्त्रन अवलोकत। नाहिं रथनकी कथा, वाहवारण न बिलोकत ॥ नाहिं रूपम नाहिं सुतर, शिविर नहिं नृपहु जटाधर। बिलनाहिं वर वसन, नाहिंनृप रचन छत्राधर॥ भाषत जरठ मिलीन सों, हम बैठी इतभातहै। सुनि कहत सकल समुझायकै, तिनकीते सब मातहै ७ लङ्कागढ़ जेतव्य चरण, तरणीय जलधि जल। प्रबल शत्रु पौलस्त्य, सहायक इतमरकटबल॥यदपि राम यह एक,सकल रिपु प्रतिबल दलिहै। निशिचर निकर निशेष, पराभव पावत पलिहै॥ कहि क्रिया सिद्धि सब सत्त्वमधि, महतजनन की मानिये। आडम्बरहै उपकरनको, यह अवस्यउर आनिये ८॥ कविरुवाच ॥ अत्रान्तर वृत्तान्त, तत्र लङ्का लीजै सुनि। मन्त्रशाल उपविष्ट,मन्त्रिमोच्छाहित चित गुनि॥ वदत बिभीषण बचन, सहित उत्कण्ठ भटनप्रति। स्वर्णपुंख शित बिशिख, बज्रसम मनो बायुगति॥ जबलौं न गहैं शिर सबन के, तबलौं है कर्त्तव्य यह। द्रुत दशरथनन्दन दीजिये,निमि नृप नन्दिनि मोदमह ९॥मनोहरछन्द॥ त्रिबरग धर्म अर्थ काम ये कहावत हैं, मोक्षको मिलाय चतुर्वर्ग पहिंचानिये। धारिये धरम प्रातहीते मध्यद्योस जौलौं, उत्तर अहनि अर्थ संग्रह सुठानिये॥ सायंकाल समै काम सेवन यथेच्छ कीजै, गावत गोविन्द श्रुति बचन प्रमानिये। मोक्षहै महान जिय जानहु जहान बीच, आठौ याम सो अवश्यमेव उर आनिये १० ॥ सोरठाछन्द अर्पहु सीता राम, कहत बिभीषण भ्रततें नय धारहु प्रिय

धाम, अनय किये बिनशात सकल ११ ॥ पद्पदछन्द ॥ पुनि रावण प्रति कहत, यहै नर बानर जाती। इनते रहिये डरत, बड़े ये सब उत्पाती॥ हयहय महिपति मनुज, बसे कारागृह अन्दर। निघसेजाकी कख, रहे बालीहो बन्दर॥ पौलस्त्य करतहौं प्रार्थना, रघुबर सीय समर्पिये। बन्धनागार थित बिबुधगण, तिन बिसर्जि सन्तर्पिये १२॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ किल नाशक कुलकीर्ति कोप तजिदीजिये। बहुबर्नन यश बंश धर्म थिरकीजिये॥ ह्वै प्रसन्न सब सबैं काज सो कीजिये। हरिहां। दाशरथी श्रीराम मैथिली दीजिये॥ १३॥

इतिश्रीपिपलोद्पत्तनाधिपाजरावनजीश्री.दुलहसिंहर्जाविज्ञापितकविटीकारामाज्ञजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे बिभीषण सम्भाषणोनामत्रयोविंशोल्लासः॥ २३॥

रावणउवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ कह सकोप जानकीजीय जानन्त हौं। मधुसूदन रघुनन्द मनसिमानन्तहौं॥ बधजानत दशबदन तदपि थिर थप्पिहौं। हरिहां। मेरे जीवत राम सीय न समप्पिहौं १॥ दोहाछन्द॥ रावण ऐसे वचनकहि, कृतबामांघ्रि प्रहार। तबै बिभीषण गमन किय, लिये सचिव सँगचार २ महातङ्क लङ्कानगर, धूमकेतु निजबंश। छांड़ि बिभीषण तूर्णतिहिं, चल्यो हुलसि हिय हंस ३ बिबिध बिराजित नितहुते, श्रीरघुनन्दनराम। तितआति तूरन आयकै, चितपायो बिश्राम ४॥ पद्पदछन्द॥ लखत बिभीषणआव, परस्पर बानर उचरत। करि है लङ्काधीश, प्रणति पदपङ्कज प्रचरत॥ जिमि कीन्हों सुग्रीव, सकल मर्कटभट राजा। तैसे याहि अधीश, आपिहैं असुर समाजा॥ इहिसाखी तुम हम सकल,है यामें संशय नहीं। अतिउर उदार दातार तर, श्रीरघुनन्दन हैंसही ५ ॥ दोहाछन्द॥ जो बिभूति दशग्रीवको, शिरछेदे शिव दीन। राम बिभीषण कोदई, दरश होत लघुचीन ६ प्रणमि चरण वा रज बरण, पुनिकर

आयसु पाय। निकट बिभीषण थित भये, छबिलखि उर न अघाय ७॥ षट्पदछन्द॥ अथ सौमित्री मित्र, पुत्र दशरथ नरनायक। उत्तर तट अम्भोधि, भये थित जन सुखदायक॥ गर्भ दर्भ आकीर्ण, अमल उपवेशन ऊपर। बैठे रघुबर राम, अपर सब आगत भूपर॥ आयो न अब जब अम्बुनिधि, तब अति कोपाकुल बरण। आग्नेय अस्त्र आदृत उन, सिन्धु सलिल शोषण करण ८॥ कविरुवाच। चन्द्रायणा छन्द॥ रामचन्द्र दशवदन नाश उद्यम कियो। मांसाहारीजीव महामन मुद लियो॥ मृग कपि वन अरु भैरव तपोधन आदिकी। अरिहां। महामित्रता मानि लईसु अनादिकी ६॥ षट्पदछन्द॥ होतो नहिं मारीच, हिरन बचन को करतो। हनुमत कपिनिन कौन, कहै मनसंशय हरतो॥ सघन महावन बिना, सीय हर रावण कैसे। बिन तपसी के शाप, सबै बानक किमि ऐसे॥ ये सुहृदवर्ग हमरे सबै, परम कृपा इन मापहै। अब करिहैं अदन अघापकै, आमिष असुर अमाप है १०॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द॥ अति भयसंयुत सिन्धु, सुरबपु धरिआयो उतै। राम दीनजनबन्धु, तवन करत कर जोरि युग ११॥ समुद्रउवाच। षट्पदछन्द॥ पूर्व पितामह सगर, आप निश्चय अनुमान्यो। हूहै हमरे गोत्र, नृपति दशरथ जगजान्यो॥ हयमख करिहै वहै, आज्य आहुति बहु परिहैं। व्याकुल ह्वैहै कमठ, शेष किमि धरणी धरिहैं॥ तिन ताप शमन सागर सकल, सुखरि संयुत प्रकट कृत। धिरचै तिन्हैं उधरत अबै, अनुचित उचित न धीयधृत १२॥ श्रीरामउवाच। दोहाछन्द॥ चापस्पाउ सौमित्रि मम, शोषौं सागरनीर। चरणन ते चलिजायँगे, बिन श्रम बानर बीर १३॥ कविरुवाच॥ तबै बिनय किय तोयनिधि, जो है बन्धन सेतु। युग युग लौं ज हिर रहहि, जगम धि कीर ति केतु १४ मुनि वारि नि के बचन

वर, हुकुम दियो श्रीराम। करत सेतु रचना रुचिर, बानर नलअभि-राम १५ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ तिरत देखि प्रस्तरन, मरुतसुत बचन उचारत । कहु अन्तरजकी बात, प्रभो प्रत्यक्ष प्रचारत ॥ पाहन डूबत आप, अवर संगीन डुबावत । इहां तिरत सबतेपि, अपर सह-चरन तिरावत ॥ यह ग्रावनको गुण है नहीं, वारिधि बानर को तथा । राघर प्रताप महिमा लसत, इतरन की इत का कथा १६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ प्लवग पुरोगम सिन्धुसलिल मय देखिया । तिन पाछे कपिकटक पङ्कमय पेखिया ॥ उनहूँ के पश्चात भाग बानर रहे । हरिहां । जलधि हुतो इहिठौर वचन ऐसे कहे ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालराघवजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसेतुबन्धननाम-
चतुर्विंशोल्लासः ॥ २४ ॥

हनुमन्नाटकेसप्तमोङ्कः ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ गिरिसुबेल तट कपि कटक, सुत उतरे रघुबीर ॥ उर अनुकम्पा आनिकै, उचरत गिरागँ-भीर १ ॥ श्रीरामउवाच ॥ महाबीर अङ्गदबली, तुम रावणढिग जाउ । प्रथम साम कर्तव्य है, सो करि हुत इतआउ २ ॥ षट्पदछन्द ॥ उभय बन्धु असमच्छ, होत तैने हरिसीता । आधिपत्य अहंकार, मत्त अ-थवा आनीता ॥ ताहि दीजिये तुरत, नतर लक्ष्मण मार्गन गन । करहिं असुर उच्छिन्न, उच्छलच्छोनित क्षितिघन ॥ सह पुत्र पौत्र परिजनसहित, अन्तकपुर प्रतिजायहौ । जउ बीसश्रवण चष बीस तउ, बधिरअन्ध कहायहौ ३ ॥ कविरुवाच ॥ कहि तथास्तु युवराज, पितृबध वैरसिसर्जित । चल्यो चपलगति लङ्क, उरसिरिपुशङ्क वि-वर्जित ॥ गगनाङ्गन उत्पतन, करत किलकिलरव करिकरि । प्रबल पुच्छ फटकार, उच्च धाराधर धरि धरि ॥ उतपात केतु उद्भट असुर, सिंहासन आसीनत्र हि उपम न अमित अङ्गदलसत, निर्जरपति

सुत सुजनसहित ४ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ मातुमकरी प्रहस्त रामको दूत है । आवन चाहत इतै कोपि कपिपूत है ॥ आयसु अंगुराधीश दई अन्दागयो । हरिहां । अवलोकत आकाश सचन उचरतभयो ५ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ रे कौनपकुल कहौ, कौन रावण अभिधाना । रतनरवीन्दू वंश, हरनकरि नष्ट निदाना ॥ त्रिजगदहन नयनयन, त्रिशिप शूलहुते अतुलित । प्रलयानल प्रभु राम, असुह्वैहै पतङ्ग तित ॥ चितचाहत जो तुमरो भलो, उत्तमबात बतात अब । सीता समर्पि सन्तर्पिये, घटिजैहै बनघात सब ६ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ साभ्य नृप रावण रटत, अङ्गद उत्तदेत । भय उक्ती प्रत्युक्ति युत, उत्तम उपमालेत ७ ॥ अन्योन्यभाषण । षट्पद छन्द ॥ रेकपि तू है वही, कौन जो पहिले आयो । जाकी जारी पुच्छ, तनय मम जाहि बँधायो ॥ ताने तो तित कही, निखिल लङ्का पुर जारयो । मारयो तव सुत अक्ष, मुधा कपिवचन उचारयो ॥ यह झूठ बात कै सत्यहै, कोप लाज भय युतभयो । अङ्गद वरिष्ट बरबैन सुनि, रावण मुख मुद्रितरयो ८ पुनि रावण बूझत, अरे कपिगुण कहतावक । रामराज लेख्यार्थ, दूरमापक बहुधावक ॥ लङ्कादाहक हनूमान, वह कहहु कहां अब । राक्षस सूनू वद्ध, श्रवण सुनि तिन ताड़ित सब ॥ भासत जित सत्रीण अति, परम परामव पाय कै ॥ वह कोजाने किहि ठौर है, कितमें रह्यो लुकायकै ९ जिहि कपिकिय पुरदाह, अवर कानन कृत भञ्जन । गिरि दरि असुरन भरी, अस सुत कीनो गञ्जन ॥ तुम जानतहो ताहि, कछू वह करिहै बिनती । पै हमरे इहि कटक, बीच ताकी नहिं गिनती ॥ वह दूर दूर भागन छिपे, विदित बड़ो मजबूतहै । सन्देश इतै उत भेजवे, त्यानन कारन दूतहै १० लङ्का दई जलाय, अक्ष तनसुत संहारयो । अरु पुनि

असुरन ओघ, अमित क्षण बीच प्रहास्यो ॥ सम्भाषण सियकीन, अब्धि उल्लङ्घन ठान्यो । उहि अविशा हनुमान, मान कानन भल भान्यो ॥ जबकामपड़े बड़युद्धको, तितै ताहि भेजत न कित । कछु दूरलेन सन्देश है, तब तितको भेजन्ति नित ११ ॥ रावणउवाच ॥ राम सुन्दरीविरह, विदित बैठ्यो वपुहारित । तासचिन्तया लच्छ, भयोमल वच्छ विदारित ॥ बयोवृद्ध सुग्रीव, यथा निर्मूल कूलतरु । कौन विभीषण गिनत, अतिथि अरिभयो दीनअरु ॥ रावण वदन्त अङ्गद सुनहु, और न कोऊ अनेकहै । लङ्कालगाय पावक परम, मोरबध्य कपिएकहै १२ ॥ अन्योन्यभाषण ॥ कोहै बनपति तनय, कौन बनपति तव संगी । कोसंगी इकदिवस, ससागर कृतअङ्गी ॥ कक्षापुट तुहिंलिये, फिर्यो वह बानरबाली । हां जान्यों वह कुशल, कुशल तितकर्म कुचाली ॥ श्रीरामचन्द्र जबरुष्टहै, स्वस्तिमान को रहि सकत । अनरन्यभूप तर्पण करन, रम्य रुधिर तो तनुतकत १३ कहा करतहैं राम, प्रतीपन विजय निरन्तर । किहिप्रतीप जयकियो, विदितबाली सुदिगन्तर ॥ कोबाली का बिसरिगयो, पहिंचान कहा कपि । यहहू विस्मृति तोर, अहो बड़मोह महानपि । पर्य्यङ्क बद्ध दश वदन तू, निज बालक कल केलिकृत । लखा प्रहार ममबिसरिगो, अति अचरज ध्रुवभीय धृत १४ ॥ अङ्गदउवाच ॥ प्रथम तिर्यो दुर्लंघ्य, अम्बुनिधि बानर शावक । दैत्यन बहु दुर्भेद्य, भेदि प्रविश्यो पुरतावक ॥ बनरक्षक उच्छिन्न, भक्षिफल अक्षहननाकिय । प्रदहन लङ्कापुरी कियो, अवलोकनहू सिय ॥ इतिविस्मान्न दशबदन तव, एक अल्पकपि आचरित । मैं कौनकौन वर्णनकरौं, रामभूप अगणित चरित १५ ॥ रावणउवाच ॥ रावण करि आक्षेप, उचारत आनन ऐसे । भग्न भग्न शिवचाप, बालि आहतहत तैसे । सप्त तालहत

हतक, वारिनिधि बद्धबद्धकृत। कहापराक्रम राम, अहंकृति करि उर आवृत॥ भुज धरत शैलमारगपरा, अहिपति अङ्कर शिनत्तसन। तिनसहित अचल कैलास धृत, विरहित रुज मम भुज हसत॥२६॥

इति श्रीपिपलोदरस्तानाधिपालरावतजी श्रीकूलहसिंहजीविज्ञापित कविटीकारामाङ्कगोविंदरामविरचितेश्रीरघुविलासेरावणा- ङ्गदान्योन्यसंभाषणंनामपंचविंशोल्लासः॥ २५॥

कविरुवाच। दोहाछन्द॥ सुनि सुनि रावणके वचन, करि करि कपिपति कोप॥ स्वामिभक्ति अभिनेय उर, वच उचरत साटोप १॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ करि आगत तोहिं, बालि नामा बल वारो। कपिकुल तिलक सुसर, सिन्धु सन्ध्यार्चन सारो॥ कियो अखिल अविछिन्न, बलिष्ठ न उहिं सम कोऊ। श्रीरघुबर रणधीर, हन्यो इकशर करि सोऊ॥ सत्यज्ज्य अहंकृति अमितउर, यह बानर सुरपुर गयो। तजिदेउ गर्व यह सर्व तुम, निज हिय अन्दर जो रयो॥ जिहिंसँदेश हरिदूत, मरुतसुत तिरयो वारिनिधि। गोपद इव उर आनि, स्वामि किय सब कारजसिधि॥ निज आलय जिमि आय, प्रवेशन कृत लङ्कापुर। सिय सम्भाषण दर्श, कियो कानन भञ्जन तुर॥ तव भूरिसैन गञ्जन सखुत, पट्टपत्तन प्रदहन ठयो। किहि भांति राम वर्णनकरौं, प्रभु प्रताप सब अतिछयो २॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ बालि तनय वर वचन सुनि, रावण भयो सक्रोध॥ अहंकार आरूढ़ है, उचरन लग्यो अबोध १॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ हन्यो कनकमृग मात्र, तुच्छ तृणचर कानन मधि। अवन हन्यो वृक्ष, करन शाखी बाली वधि॥ वीर कहावत राम, मोर हियहास होत है। प्रबल पराक्रम पुञ्ज, दशानन जग उदोत है॥ बहु बाहि मालज्वाला जटिल, अति हन्नशार सन्धान है। जिय जबर युद्ध उद्योगयुत, मम समान नहिं आनहै ५

मको दूतभयेमते, सन्धी विग्रह होय अक्षत सक्षत तनु पीठक्षिति, अवलुण्ठनहै तोय ६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ रावण जानहु मोहिंदूत श्री राम को। महावीर रणधीर सुगुणगण ग्राम को॥ खरदूषण मृगभक्षि तृषित शरभूर है। अरिहां। पिवहिं कण्ठ घट रन्ध्र रुधिर सुजरूर है ७॥ रावणउवाच। दोहाछन्द ॥ रेवानर अति अधम, कटुक प्रला- पत काहि ॥ अवपालाय सुनिलीजिये, यहिविधि रावण आहि ८॥ षट्पदछन्द ॥ मृत्यु भृत्य पादांत, तपति दिनकर सुमन्दरुचि। लोकपाल पुनिअष्ट, मोरभय चकित रहत शुचि॥ बन्दतनित पद- रेणु, इन्द्र आदिक निशिवासर। चन्द्रहास ममलखत, गर्भ सब सुर अहितियनर॥ अति उग्रप्रतापी असुरपति,रहत सकल करजोरिकै। अब आये इत तपसी युगल, वानर सैन बटोरिकै ९ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ भूतल ताड़ित पानितल, भुज अस्फालन कीन। अङ्गद होइ सक्रोधवपु, उत्तरत बचन अदीन १० ॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द ॥ रेरे राक्षसवंश, घोरघातक पातकचय। समर मध्य श्री राम, करहिं तव सकल शीशक्षय॥ दिशा विदिशि परिपूर्ण, निकर नाराचन करिहैं। रघुवर वीर सुधीर, जबै कर वर धनुधरिहैं ॥ तव तोर मत्थ भूपर परहिं, गृद्ध करहिं लुण्ठित लपटि। समुदाय शिवा कवलित करैं, भखैं काग भुण्डन झपटि ११॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ रावण बदत प्रपञ्चयुत, कटुवादी कपि तोहिं। हौं न हनत इहिहेतु तुहिं, धर्मशीलता मोहिं १२ दूत यथोक्त वादि है, नरपति हनत न ताहि। क्रूर कोपकारि करत है, वपु विरूप कछु वाहि १३ ॥ अङ्गदउवाच ॥ परदारा अपहरण महि, लई न रंचक लाज। अबै दूत परित्राण विच, धर्मशीलता आज १४ ॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ इन्द्र माल्य करमोर, द्वार प्रतिहार सहसकर गृह सम यंक वायु

बरुण चुन चन्द्रछत्रधर॥परि निरत पावक्य,परम पावक पटु पावक। रावक नारद प्रमुख, देवगुरु आदिक यावक॥ मम भवन विभव लखत न कहा,तवन करत रघुवर महा। वह मनुज मात्र वपु विदित है, वर राक्षस भक्षण रहा १५॥ अङ्गदउवाच॥ रेरे रावणहीन, दीन कुमती तव दरशात। रामहिं मानत मनुज, पूज्य याचक चय परशात॥ कहां नदी सुरनदी, कहां गज ऐरावत गज। रवि हय है हय कहां, कहां परजापतिहै अज॥ रम्भा कहां अबला कहां,युग गिनती कृतयुग कहां। कितकाम धनुषधारी कहां,कपि वानर हनुमतमहां॥१६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपावरावतजांश्रीदुर्जनसिंहजीविनिर्मितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गदयो
रुत्तरप्रत्युत्तरवर्णनंनामपड्विंशोल्लासः॥ २६॥

अथ प्रश्नोत्तर॥ रावणउवाच। पद्धरछन्द॥ कोतू किहिको सुवन, यहां आयो किहि कारण। शिरपाविजयी पृष्ठ, ताहि तृणसम कियो धारण॥ अङ्गदउवाच॥ वाली तव बलमथन, पुत्र अङ्गद अभिधाना। आयो अचल सुबेल, दूत रघुवर जगजाना॥ बहु बार बार समुझायकै, कहत तोहिं जड़मति अजहु। जानकी देहु जगदीश को, किंवा मस्तकतति तजहु १॥ रावणउवाच। सोरठाछन्द॥ धिक धिक अङ्गदजान, जाने तव मास्यो जनक। वीरवृत्ति निर्मान, दूत होय अरि लजत नहिं २॥ अङ्गदउवाच॥ मुक्ति कियो श्रीराम, जानेमम मास्यो जनक। शासित त्रिलोकी धाम, कृत्यकाज सदुरातमन ३॥ रावणउवाच॥ राम कहा कृतकाज, यहै चित चाहत चीन्हो॥ उत्तर दिय सुरराज, अम्बुनिधि बन्धन कीन्हो॥ रावणउवाच॥ लङ्कानाक निकाय, बेरि बसती नहिं जानत। अरु अतरल बल माहिं, मनाकहु नहिं पहिचानत॥ तब काहि अङ्गद जानत सबै, पै तुम्हीं नाहि बतहै लङ्काधिराज यह विभीषण, ने दित वीर बखानत है ४॥

रावणउवाच ॥ बानर बांध्यो सेतु, लखी कौनसी बड़ाई । गिरिसमान बल्मीक, पिपीलिक बिरचितपाई ॥ लङ्कदही हनुमन्त, याहुमें नहिं अधिकाई । दाहक अग्नि स्वभाव, विदित जगजन सवठाई ॥ आश्चर्य शौर्य निज भुजनको, राम अपर किंचित कियो । युवराज वहै वर्णन करहु, सो सुनिबे हुलसत हियो ५ ॥ अङ्गदउवाच ॥ तिहि तिय निकट नितान्त, थिरीकृततनु चित बिलसी । सिय समान सुखलेन, बहिन रावर हिय हुलसी ॥ तिहिकी नासा बसा, खड्ग कीन्हो प्रभु पंक्ति । खरदूषण त्रिशिरादि, रुधिर करिकै धोयो किल ॥ परियस्त नयन तव दर्पइव, स्वसानाक छेदन कियो । श्रीराम वहीबिसरतकहा, विश्व विदित जिहि यशलियो ६ ॥ रावणउवाच ॥ परिमित महिमा क्षुद्र, तितहु कृत क्षितिधरघटना । तरिकै तुच्छ समुद्र, लगाई अविरत रटना ॥ अकलित महत महत्त्व, दुलद दुष्पार परमहै । विंशतिभुज दशबदन, विंशती सागर समहै ॥ ते अति अगाध जिन थाह नहिं, बृथा परिश्रम करतहौ । सब सिद्ध करहु निज निज निलय, बिना मौत क्यों मरतहौ ७ ॥ अङ्गदउवाच ॥ रे रे रावण असुर, अवनि पर रावण केते । हमने बारम्बार, श्रवणपुट कीन्हे एते ॥ कार्त्तवीर्य दोर्दण्ड, चण्ड पिण्डीकृत इक है । दूसरगत दैत्येन्द्र, द्वार दासीदतधिकहै ॥ नाचियो नाच गहि कवल तित, तीसर लज्जाजन्य है । इन बीच कहहु तू कौन सो, अथवा इनते अन्य है ८ ॥ रावणउवाच ॥ कुम्भकर्ण मम भ्रात, अखिल अरिकुलसंहारक । कालरूप बिकराल, कलेवर भवभयकारक ॥ मेघनाद मम पुत्र, पुरन्दरबन्धनकर्त्ता । चन्द्रहास मम खड्ग, सकल शत्रुन संहर्त्ता ॥ ममहैं सहाय निशिचरनिकर, त्रिभुवनबिजयी शत्रु सुर । रावण लसन्त अभिधान मम, राजत राजा लङ्कपुर ९ भयेहुते बलवान, महा कपिपति

हैहयराति दशकन्धरको कन्ध,प्रतिष्ठा अब छाई अति मद्य छिपा-
इत करउ, कन्दलीकी कसकथ कारि। अंसस्थलि अवकीर्ण,इभा-
जिन पल्लव निज धरि॥ धूर्जटी झाटिति प्रस्फोटयत, आनन उचरे
धन्य है। सम वाली अर्जुन समयते, अव प्रचुरनल अन्य है १०
वक्षस्थली कठोर, मोर संगरमो सुख्याति। ऐरावत गजदन्त, मुसल
उन्नत आहत अति॥ भग्नभयो मुखकरी, हृदय मम तनक न त्रा-
सत। अरु हेला उच्छित, अद्रि कैलास प्रकाशत॥ संत्रस्त अङ्गना-
लिंगने, प्रचुर प्राप्त आनन्द हर। लङ्काधिराज रावण निरखि, पुन
ओर है अन्यतर ११॥अङ्गदउवाच॥ रे रावण दुर्बोध, सधन प्रख्यात
पराक्रम। चहत रामते युद्ध, युक्त नहिं लखत तोहिं हम॥ रहनदेउ
रघुराम, लक्ष्मण कृत धनुरेखा। लंघितभई न तुच्छ, तबहिं तब बल
सब देखा॥ उन लघु किंकर लंघित जलधि, पुरी दग्ध अरु अक्ष-
हत। रण घनघमण्ड तजि दीजिये, मम वचकीजे शरणागत १२॥
रावणउवाच॥ हिरण्यकशिपु हिरण्याक्ष, दैत्य ईश्वर भस्माङ्गद। अ-
वर अमरद्विष सकल, बल कथा तुलित नचाङ्गद॥ अहुसार मम
अलं, अलंकृत इन अवलोकत। समता लहत न कोपि, यदपि बहु
विश्व विलोकत॥ जो रामचन्द्र रिपुहा कहत, भयो भिया अपहरण
अब। अरु संधिबात करबातहै, जानि लियो इहि बीच सब १३॥
अङ्गदउवाच॥ मत्थन करि मत क्रीड़, कहत कैलास सुअरसुन। शिव
गहि गहि पुनि देत, तथा रामन रावण सुन॥ अभी वन्धन देख,
स्वल्प सहस्र सरसायो। कमल बन्धु कुलवधू, छण्ड चहजो सुख
पायो॥ हम हितू हेरि हितकी कहत, यासधि न कार अचकम है। मम
जनकके दिव्य दोर्दण्ड जय,कलित सुकीरति खम्भ है १४॥प्रश्नोत्तर॥
१॥ को तू बलितनय दूत श्रीरामको। को रघुवर अरु

वानर बाली नामको ॥ बांधि तोहिं चतुसिन्धु मुहूरत मधि भ्रम्यो । हरिहां । वह बाली ममतात हीय ते किमि गम्यो १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ दोर्दण्ड परचण्ड तोर, प्रति हनन प्रबलजगति । सहसबाहु भुज स-हस, सद्य छेदन कृत भृगुपति ॥ परशुराम गर्वापहारि, श्रीरामदूत हौं । अङ्गद मेरो नाम, पुरन्दर पूत पूतहौं ॥ जब भूरि भ्रमन मूर्च्छित लख्यो, जनक घृणा संयुत भयो । पुच्छाग्र बाल सुनिवास दिय, तदपि तुच्छ बिस्मितरयो ॥ १६ ॥

इति श्रीपिरलोद्पत्तनाधिपालरावतजंश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितरतलपुरस्थ कविटीकारामाङ्जगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गद प्रश्नोत्तरवर्णनंनामसप्तविंशोल्लासः ॥ २७ ॥

रावणउवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ बाल तालतरु हने सार्द्ध त्वचते-हुते । जर्जर जीर्ण पिनाक भङ्ग नहिं अद्भुते ॥ हरक्रीड़ाचल कियो कन्दुकी क्रीड़ है। हरिहां । सो सुनि सुनि सब बीर होत सब्रीड़ है १॥ षट्पदछन्द ॥ श्रवण पथन मधि पांच, शूर आवत मम कतिकति । साम्य शरणि उल्लंघ्य, जगति जागर्ति लङ्कपति ॥ जिहिं दोर्यखल गाढ़, परम पीड़न बरबशते । रक्तछटा घनघटा, मनोद्भव धातु दर-शते ॥ अंकुरित करत शङ्का अजों, शंकर गिरि कैलास है । अङ्गद अशेष मम भुजन मधि, प्रबल पराक्रम वास है २ मूरधनिज उत्कृत्य, हुताशन हुत जबते अति । स्फुरित बह्नी व्याकीर्ण, भाल लिपि लखि लङ्कापति ॥ होहिं रामते काल, अस्य इति बर्ण बांचि तित । अधिक उमंगि शिर आप, असखलित होय चारुचित ॥ प्रभुपद पिनाकि पीड़ित किये, गिरा जासु गुणगायते । अस लसत लङ्क नगराधिपति, कवन तास बैगायते ३ इहिं दशमुख बड़बीर, धीर का बर्णन करिये । प्रबल पराक्रम पुञ्ज, प्रचुर धिय धीबर धरिये ॥ पूजन काज पिनाकि, करन चह मस्तक माला । सूत्रहेत हरकण्ठ,

विकर्षणकृत वर व्याला । तव भृकुटीकी करि सूचना प्रमथ गगन प्रतिबेध किय । लङ्केश मानि तिनको कथन, लियो अपरिमित हर्ष हिय ४॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ इहि अन्तर मधि आइ उत, पढ़त वचन प्रतिहार । सभास्तार संदोह मधि, अधिक उच्च सुरधार ५ प्रतिहारउवाच । छप्पयछन्द ॥ नैप समय अध्ययन, मौन मुख धरहु विधाता । स्वल्प स्वल्प संजल्प, तुरो जड़मति खलु ख्याता ॥ नाहिं शक्रकी सभा,स्तवनागिरसंहर नारद।पूर्ण करहु स्तुति कथा, तुम्बरो गीत विशारद ॥ मल सीता रक्षक मलकरि, भग्न हृदय लङ्केश है । अश्वत्थपत्र इव स्वस्थ नहिं, व्याकुल बुद्धि विशेष है६ ॥कविरुवाच॥ अङ्गद होय सक्रोध, कहत एरे रावण सुन । तव मत्थन करि करहिं, राम दिग देव खलीजुन ॥ हौंहूँ मारन योग, तदपि तोको नहिं मारत । तात कक्ष अवशिष्ट, विदित यह बात विचारत ॥ किलक्रीड़ित तवशिर कन्दुकनि, पद प्रहार अगणित किये । निज क्रीड़न की सामग्रि यह, भञ्जन करि लज्जत हिये ७ ॥ सोरठाछन्द ॥ शत योजन विस्तार, तिमि तिहिं निगलत तिमिंगिल । तिमिंगिल गिलहु निहार, ताहि गिलत राघव विदित ८ ॥ छप्पयछन्द ॥ अविरल गल दल गलित, ललित लोहित रत धारा । धौत त्रिलोचन ईश, अंघ्रि अम्बुज बहुबारा ॥ प्राप पिनाकिप्रसाद, सुराजय महिमा जगमधि । अरु अद्री उद्धरन, गर्व आरूढ़ हस्तअधि ॥ दश मस्तक विंशति करन को, केवल भार उठानभल । किलकर्तन फल बहु शिरन को, भार उद्वहन भुजन फल ९ सुश्र सुश्र मैथिली, रामपद पदपङ्कज भज । करहु राज चिरकाल, हविर्भुज होहु अमर त्यज ॥ लङ्कापुरी प्रतच्छ, पराभव पावन जैसे । उर अन्दर निरधारि, काज सर कीजै ऐसे नातर चपेट वानरन की, मुष्टि वृष्टिहु है अमित अतिकू

कीन कुकरम कठिन, तिन सबको फल मिलिहैतिन १० निरखे नहिं रघुनन्द, प्रथम नहिं सुने श्रवण पथ। कीन्हो क्यों न बिलम्ब, बिपिन बिच हुतो महारथ॥ थँभ्यो नाहिं क्षणमात्र, मार्ग मधि भग्यो भयातुर। अजौं न थिरता गही, हरात उर अतिशय आतुर॥ अब अखिल मान तजि दीजिये, लियो श्रवण सुनि बालिवध। सीता समर्पि रख वंश निज, दास होहु अधिपति अवध ११॥ रावणउवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ हरिपति पायप्रहार रोष कछुहीलियो। उर उदग्र गुरुगगन प्रसभ सब पीलियो॥ सुरश्रीकरणी काज मोर भुज बनकियो। अरिहां। अङ्गद दशमुख वीर तोहिं बिस्मृतरियो १२ मैंने मेरे हत्थ मत्थ दश छिन्न है। चन्द्रहास असि किये अखिल उच्छिन्न है॥ गदगद गिर गलिताश्रु नाहिं स्मितवान है। परहां। याके मध्य प्रमान शम्भु भगवान है १३ छिन्धि मोहिं मुहिं छिन्धि छिन्धि मुहिं बोल है। पुनरुद्भूतन निरखि करत हिय तोल है॥ नव भव आगे इन्हें दशानन काट है। परहां। भूमि पतित शिरहँसन लगे अट्टाट है १४ मूल पञ्चशिर पुष्प रम्य रचना करी। तदुपरि लर दूसरी चार मस्तकधरी॥ दशम कह्यो यह शङ्क दशम मस्तक भई। परहां। धर परिकरि कर परसताइ छेदत सई १५ लङ्केश्वर समधीर वीर अतिरम्य है। जिहिके गुणगण गूढ़ गिरादि अगम्य है॥ मत्थ होमि लखि अनल मन्द शिव भीति है। परहां। श्वासानल सन्दीप्त कियो युत प्रीति है १६॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ विक्रम मस्तक होम, कथा पौलस्त्य बहुत किय। सारो अङ्ग जलाय, देत वैधव्य भीति तिय॥ अरु शिवगिरि उद्धरन, पराक्रम तुमहिंय हेरे। रासभस्वर उष्ट्रादि, भारबाहक बहुतेरे॥ कछु अपर परम पुरुषार्थ कृत, होय तहे बर्णनकरौ बहु बार बार विस्तार किय, अब यह

प्रकरण परिहर्यो १७ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ विदित बीस वर्ष ग्रन्थ, विंशति श्रवणन करि बधिर । चहन सन्धि सम्बन्ध, अङ्गद उर ऐसे तुली १८ स्वामी शौर्य सुनाय, पुनि अङ्गद चलिबो चहत। उचरत शीश धुनाय, बालिसुवन दशशीश सों १९ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ अर्जुन नृप तुहिं बद्ध, विदित कारागृह अन्दर । मुनि पुलस्त्य तवहेतु, भये याचक जिहि मन्दर॥ तिहि भुजबल उच्छिन्न, कार अन्तक क्षत्रिय कुल । परशुराम प्रख्यात, पराक्रम बहुबल संकुल ॥ श्रीराम तेज बड़वाग्निहत, शौर्य सिन्धु तस किय चुलक । लङ्केश तोर बल तुच्छ सर, इन सूलहि लङ्का मुलक २० रे रे राक्षसराज, सुंच सहसा वैदेही । धर्मपति श्रीरामचन्द्र, सत्वर वैदेही ॥ मिथ्या निज पुरुषार्थ, प्रचुर प्रागल्भ्य रख न उर। वानर भट वाहिनी, भयंकर आपत तवपुर ॥ इमिकहि कहि अति उतकट बचन, आतङ्कित लङ्काकरी । निष्क्रान्त भयो युवराज इत, कछु दशमुख श्रवणन धरी ॥ २१ ॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिपानरावराजौश्रीकूबहसिंहजौविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गद
संवादोनामाष्टविंशोल्लासः ॥ २८ ॥

अथ हनुमन्नाटकेऽष्टमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ निज प्रताप परचण्ड, चण्ड समर उत्साह करि । परिपूरण दोर्दण्ड, विलसत पुर लङ्कापती १ ॥ षट्पदछन्द ॥ सुनिकै दशरथसुवन, सुबैलाचल कूटकोपर । रावण रण उद्योग, अमित उत्सव निज उरधर ॥ दशाकर धनुटंकार, ककुभ परिपूरण कीन्ही । बहुरि शिलासित बिपुल, बिमल विशिखावलि लीन्ही ॥ अवशिष्टरहे दशाहत्थनस, तिनकरि चित्राकृति करन । अभ्यशत अङ्गना कुचनपर, पत्रबल्लि रचना धरन २ तदनन्तर लङ्केश, राजमन्दिर शिखरास्थित मञ्चोपरि आरूढ़

अमङ्गल गानतहै, पुनि आनन गिरि उद्धरि ९ एक शृङ्ग सुग्रीव, प्रथम कपि इतमे आयो। वन वनपालक भञ्जि, अरु हनि नगर जरायो॥ चल्यो गयो चुपचाप, लखि रहे वीरवर्ग सब। कहिते कछु हुन बनी, सकल हे विद्यमान तब॥ अब इत आयो कपिबल प्रबल, उल्लंघन जलनिधि कियो। वे इच्छत उर नाहिं आन कछु, चाहत चित मैथिलि लियो १० ॥ कविरुवाच। चन्द्रावलाछन्द॥ सुनि मन्दोदरि कथन सभय रावण भयो। शुक शारण द्वै दूत पठावन मन ठयो॥ रामदेव के शिविर जाउ आयसु दई। परहां। पुनि निज मन्त्रिन सहित स्वहित चिन्तत सई ११ ॥ विरूपाक्ष उवाच॥ षट्पदछन्द॥ बिरूपाक्ष वर सचिव, सुहित वच उच्चरत ऐसे। संपाति प्रतिभट उपरि, नाहिं प्रोल्लासनजैसे॥ सीतारक्षण दक्ष, लक्ष्मण कृत धनुरेखा। नाहिं उलंघी गई, भई विस्मयप्रद लेखा॥ कपिकटक सहित लङ्घित जलधि, राजन राम महानहै। उन वैदेही वैदेहि हुताशमहँ कछुनहिं हानहै १२ जबलौं नाहिं निहार, राम दशरथ नृप नन्दन। जबलौं नाहिं निहार, नयन पाथोनिधि बन्धन॥ जबलौं नाहिं निहार, निरखालक लङ्कापुर। कुलाङ्गारता प्राप्त, अनुज सुचरित पवित्रउर॥ तबलौं बिचारि असुराधिपति, अनघा सीता अर्पिये। इत होय न कोणप कुलकदन, यहि बिधि अरि सन्तर्पिये १३ ॥ रावणउवाच॥ ये एते ममबाहु, शक्र दोर्दण्ड करडहर। सोहं लङ्कानाथ, सकल संसार बिजयकर॥ बांध्यो बानरसेतु, हमहुँ श्रवणन सुनिलीन्हो। देखतहो निजनयन, लङ्कगढ़ आवृत कीन्हो॥ जो जन जीवतहैं जगत मधि, कहा न देखत सुनतहै। पुन धैर्य वीर्ययुत होय सो, तित चित अविचल चुनत है १४ बिरूपाक्ष पुनि पठत, शक्र शिर पर प्रभु आयसु। मक्ल शस्त्रधर मत्य, रहत रावरी रजायसु॥

लखत वानरवाहिनि जित ॥ यह बानर दग्धाग्र, पुच्छ लङ्काविकृती कृत । यहै वालिसुत विदित, तस्य आकृति इव वपुधृत ॥ शरधनुष धारि कामाकृती, श्याम होहिं सीतापती । प्रत्येक शत्रु अवलोकि उत, मध्यस्थित उत्तरत अती ३ तस तिय मन्दोदरी, परमसुन्दरी बखानत । निशिचर वन स्वच्छन्द, दवानल राघव मानत ॥ पुनि निज पतिको परम, प्रेम सिय प्रति पहिंचानत । चहत विजय निज पक्ष, अजय प्रतिपक्ष प्रमानत ॥ वह कबहुँक गृह संचारकृत, कबहुँक पति ढिग आपहो । छण पावत नहिं एकत्रथिति, अन्तराः लगत आपहो ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ वृन्दारक वन्दारवृन्द अभिः वन्दिते । अतिसुन्दर मन्दार माल मकरन्दिते ॥ मन्दिर मन्दिर मध्य म्लानता मज्जिते । परहां । मन्दोदरि चरणारविन्द रजरञ्जिते ५ ॥ दोहाछन्द ॥ रिपुविद्रावण रावणहिं, करि करि बहुरि निहोरि । मन्दोदरि अति सुन्दरी, कह अञ्जलिपुट जोरि ६ ॥ मन्दोदर्युवाच । षट्पदछन्द ॥ शशिशेखर गिरि आप, बाहु उद्धृत जगजान्यो । कुम्भकरण निज भ्रात, जगतभक्षक उर आन्यो ॥ वासवविजयी विदित, सुवन घनः नाद तिहारो । तदपि वालिजित बली, राम रणधीर निहारो ॥ इहिं अबला छल बलकरि हरी, नाथ जानकी दीजिये । निज मन्दिर मधि मन्दोदरी, रहसि बिनय सुनि लीजिये ७ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ मन्दोदरिके बचन सुनि, सुललित लङ्कानाथ । निज भुज आडम्बर किये, बचन वदत दशमाथ ८ ॥ षट्पदछन्द । रावणउवाच ॥ भामिनि क्यों भय करत, भीरु बहु निशिचरनायक । नशिहैं रिपु मम महत, खेचपति नाहिं रणनायक ॥ घन मार्गनगण प्राण, हरहिं हेरहु तपसी के । जानहु नाहिं विलम्ब, लम्ब निज उरमधि नीके ॥ सुनि स्वामि बचन म क्षल स हित, भई समय मन्दे दरी कहि प प

अमङ्गल शान्तहै, पुनि आनन गिरि उद्धरी ६ एक भृत्य सुग्रीव, प्रथम कपि इतमें आयो। वन वनपालक भञ्जि, अत्र हति नगर जरायो ॥ चल्योगयो धुवचाप, लखि रहे वीरवर्ग सव। कहिते कछु-हुन वनी, सकल हे विद्यमान तव ॥ अव इत आयो कपिवल प्रवल, उल्लंघन जलनिधि कियो। वे इच्छत उर नाहिं आन कछु, चाहत चित मैथिलि लियो १० ॥ कविरुवाच। चन्द्रायणछन्द ॥ सुनि मन्दो-दरि कथन सभय रावण भयो। शुक शारण द्वै दूत पठायन मन ठयो ॥ रामदेव के शिविर जाउ आयसु दई। परहां। पुनि निज मन्त्रिन सहित स्वहित चिन्तत सई ११ ॥ विरूपाक्ष उवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ विरूपाक्ष वर सचिव, सुहित वच उचरत ऐसे। संपाति प्रतिभट उ-परि, नाहिं मोल्लासनजैसे ॥ सीतारक्षण दक्ष, लक्ष्मण कृत धनुरेखा। नाहिं उलंघी गई, भई विस्मयप्रद लेखा ॥ कपिकटक सहित लङ्घित जलधि, राजन राम महानहै। उन वैदेही वैदेहि हुन, यामहँ कछु नाहिं हानहै १२ जवलौं नाहिं निहार, राम दशरथ नृप नन्दन। जवलौं नाहिं निहार, नयन पाथोनिधि वन्धन ॥ जवलौं नाहिं निहार, निर-स्वालक लङ्कापुर। कुलाङ्गारता प्राप्त, अनुज सुचरित पवित्रउर ॥ तवलौं विचारि असुराधिपति, अनघा सीता अर्पिये। इत होय न कोणप कुलकंदन, यहि विधि अरि सन्तर्पिये १३ ॥ रावणउवाच ॥ ये एते मम बाहु, शक्र दोर्दण्ड कण्डुहर। सोहं लङ्कानाथ, सकल संसार विजयकर ॥ बांध्यो वानरसेतु, हमहुँ श्रवणन सुनिलीन्हो। देखतहो निजनयन, लङ्कगढ़ आवृत कीन्हो ॥ जो जन जीवतहैं जगत मधि, कहा न देखत सुनतहैं। ध्रुव धैर्य वीर्ययुत होय सो, तित चित अविचल चुनत है १४ विरूपाक्ष पुनि पठत, शक्र शिर, पर प्रभु आयसु। सकल शत्रुवर मत्य, रहत रावण रजायसु ॥

भौक्ति भूतपति शम्भु, रहत लङ्कापुर आस्पद। द्रुहिणान्वयसम्भूति, एकते अधिक एकहद॥ दुर्लभ हरेक इन गुणन में, सब जनको सर्वत्र है। विलसत अशेषहू आयकै, आप बीच एकत्र है॥१५॥

इति श्रीवरविलासेरावणविरूपाक्षसंवादेएकोनत्रिंशोल्लासः॥ २९॥

रावणउवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ पण्डित मन्त्री शुद्ध बुद्धि विलसन्त है। बिलसीन को रती सचित्र सुलसन्त है॥ मानो मनुज महान पराक्रमसार है। परहां। तिनको मन्त्री महद एक असिधार है १॥ कविरुवाच॥ मन्त्रि महोदर असिध उच्चरत यों तबै। मुख सुख मधुरी बीच लगत प्यारी सबै॥ व्यासनाधीन धरेश धीय उद्योत है। परहां। तित निषेध के बचन सुदुख सह होतहै २ प्रियारु मधुरावाच सदन मधि स्वच्छ है। कर्कश सुनय समेत बचन श्रीरच्छ है॥ प्रियबादी थिति बिभव सुभोजन दान में। परहां। साधु वादि नर रहे बिपतिके थान में ३ जिहिं नियशायो निधन मूकता गुणमहा। तदपि भक्तप्रभु मुखर होयके हमकहा॥ व्यसन पंकमधि मग्न स्वामि को करतहै। परहां। हैन फेर उद्धरन मूकपन धरतहै ४ नदी पूरखल प्रीति लक्ष्मी लेखिये। बिन कारण दपीन नियति पुनि पेखिये॥ अरु बनिता सुकुमार उरसि आनो अबै। परहां। अस्थिर यौवन जगति आप जानहु सबै ५ दत्तोत्साह अकार्य मध्यहू जेरहैं। ठकुरसुहाती बात सकल सन्तत कहैं॥ चित्त गृहन मधि चतुर बिदग्ध बखानिये। परहां। मधुकर इव कर्णान्त महीपति मानिये६ दिनमधि पद्मनि प्रभा कुमुद्वति रैनहै। सन्तत रहत न चैन तथैव अचैन है॥ क्रमकरि सम्पद बिपद सबहुको आप है। परहां। यह उर अन्दर अवशि आनिये आप है ७ नीति शास्त्र यह त्रिविध धीय ध्रुवधार्य है वर्णन किय गुर्वादि अखिल आचार्य है यहां सुखद

है एक द्वितिय परलोक है । परहां । उभय लोकमधि तृतिय अना-
नँद ओक है ८ अतिउत्तम उभयत्र सुखद उर आनिये । पुनि उत्तम
परलोक मोदप्रद मानिये ॥ अधमाधम आनन्द प्रदायक अत्र है ।
परहां । तिहिते कारन सत्त नाहिं कछु तत्र है९ स्वामिनिधनकरि
सचिव शस्त्रविष आदिते । अरु अपनो प्रिय परम करतराज्यादि ते ॥
वहहै ऐहिक शास्त्र पाप सब मूरहै । परहां । तिहिं सुतरर बहुबार
डारिये धूरहै १० निगम मार्ग उच्छिन्न करत जो पाद है । आज्ञा
भङ्ग महीप किये सो भार है ॥ ताके बध मधि लहत जु कलुष अपार
है । परहां । द्विसह सहस्त्रनाशेष पावत न पार है ११ बिन अपराध
प्रधान प्रभू पीड़ितकरै । तनक न तिहिं वैरूप्य कबा चितमें धरै ॥
वह आमुष्मिक शास्त्र सुखद परलोक है । परहां । उत्तम उहिं अन-
न्त विदुष अवलोक है १२ राज्य ग्रहण सामर्थ्य सचिव मधि है
सही । तदपि स्वामि बध कदा मनहुं मानै नहीं ॥ वह आमुष्मिक ऐ-
हिक वचन उचारिये । परहां । उत्तम उत्तम वहै भूप चित धारिये १३
शुक्र शारण तव सचिव युगल ऐहिक कहे । गत बानर वपुधारि
अजौं तितही रहे ॥ आमुष्मिक विरुपाक्ष महोदर दोयहैं । परहां ।
सीय समर्पहु नतरु संगत्तर होय हैं ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविशापितकविटीका
रामाङ्कगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनहोदरमन्त्रीवाक्य
वर्णनंनामविंशोल्लासः ॥ २० ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ रावण भय शिरकम्पसह, करत स्वबुद्धि
विचार । नीति शास्त्र निज श्रवण सुनि, शोधत सारासार १ ॥
रावणान्तर्गतविचार ॥ कुम्भकर्ण भ्राताबली, राजलोभ मनलाइ ॥ जो
कदापि यह सुहिं हनै, पहिले पठवौं याइ २ ॥ कविरुवाच ॥ विरुपाक्ष
अरु महोदर, विभु अन्तरगत भाव । जानि लियो शिरकम्प करि,

पुनि पठ सचिव सुभाव ३॥ विरूपाक्षमहोदयावूचतुः॥ बदत धर्म नित नीति विद, केवल नरपति अग्र। युवराजादिकके निकट, न कह कदापि समग्र ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ हा लङ्केश्वर नाथ, शुद्ध अधिकारी हम हैं॥ किय शङ्का अंकुरित, कहा वैरूप्य विषम है ॥ नाहिं सर्पमुख रक्त, लखत नाहिं दुष्ट कलेवर। तथा न धननृप निकट, न पुनि चित रहत भजाकर॥ बहु द्रव्य दुराधिकारी सदन, ते निजपति प्रति द्वेषकृत। हो स्वामि आपनहिं मूढ़धी, नाहिं उभय हम दुष्ट भृत ५॥ चन्द्रायणाछन्द॥ दुष्ट सचिव कर अर्पि राज सब भार है। महिपति रहत प्रमत्त सु-स्वैर विहार है। जिमि बिडाल के अग्र राखि पयपात्र है। परहां। सोवतले नृप मूढ़ सुसंशय नात्र है ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ किये अवनि उतखान, तिन्हैं रोपत औरै थल। कुसुमित तरु सम चुनत, क्षुद्र लघु बर्द्धत नितभल ॥ बाहर कृत कण्टकी, सुतर संहत विश्लेपत। नम्र करत अत्युच्च, नीच द्रुम उच्च सतत कृत ॥ जिमिमाली तिमि महि-पालहू, करत रहत चित चिन्तवन। वह चतुर चक्र चूड़ामणी, नृप पावत आनन्द घन ७॥ दोहाछन्द ॥ संग्रह करत अशुद्धहू, यद्यपि महिपति शुद्ध। कछु कारज वश होयके, मदत मदाइ विरुद्ध ८ क-चित प्रयोजन हीनहू, देत प्रयोजन पूर। इत प्रमाण निज इष्टसुर, शङ्कर जान जहूर ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ सकल सुशक्ति समेत, सदा शङ्कर समलंकृत। यदपि जीर्ण किय जहर, तदपि मस्तक सुधांशु-धृत ॥ किया भस्म कन्दर्प, तदपि गिरितनया धारत । सुरसरिता शिर धारि, भाल दृग अनल दबावत ॥ नित नृपति नीति माधि निपुण शिव, संतत तव रक्षाकरौ। जग विदित विरोधी वस्तु बहु, काज निरखि संग्रहकरौ १० दिपत दिगम्बर देव, धनुष धारण किहि कारण धरौ शस्त्र जो हस्त, क्यों न किय भस्म निवारण धरी

भासित तौकहि अंगना रवत निरन्तर। रवी प्रिया तो काहि, काम ते द्वैष करतहर ॥ अन्योन्य विरोधी कर्म मधि, निरतनिरखि निज नाथको। वपु अमित शेष भूङ्गी भयो, गावत स्वामी गाथको ११॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नृप दुर्योधन नाम भविष्यति व्यग्र है। ब्राह्मण मन्त्री बीर द्रोण सुउदग्र है॥तिहिके वचन उलंघि त्रहै भविता यथा॥रहहां। नाहिं निशाचर नाथ सुनियो तुम तथा १२ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ इमि कहिकै मन्त्री नि.सिन्न,निज निज गये निवास। रावण मन्दो-दरि सहित, वितरत विपुल विलास १३ कीन्हो गवन अशोकवन, बसत जानकी यत्र। रावणसों मन्दोदरी,कहन लगी कछु तत्र १४॥ मन्दोदर्युवाच ॥ मम अरु मैथिलि वपुन चित्र, भासत कितनो भेद। सो निज बुद्धि विचार करि, उचरहु आप अखेद १५ ॥ रावणउवाच ॥ बरवैछन्द ॥ तव तनु गंध मनोरम मीन समान। परिमल सीय कलेवर कमल प्रमान १६ बिलग न मानहु प्यारी मम सुनि बैन। रूप अनूपम उभय न कछु भिद हैन १७॥ शब्दालंकारेयमकालंकारः ॥ सीता धर्मधुरीणाशमन योग। सीता धर्मधुरीणाशमन योग १८ ॥ कवि-रुवाच ॥ मन्दोदरि सब सुनिके रावण बोल। करनलगी निज जिय मधि लङ्का तोल १९ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ पाप कथा मधि मगन विभी-षण भ्रात है। कुम्भकरण प्रस्वाप बीच दिनरात है ॥ अभिमानी असुरेश निमग्न कलङ्क मैं।परहां। लङ्का डूबत हाय अपरमित कम्प मैं २० ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ तदनन्तर तिहि ठौरते, भये सकल निष्क्रान्त। ठांह ठांह वरणन करत, असंभावित वृत्तान्त ॥ २१ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकविदीक्षारामात्मज गोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमन्त्रिवाक्यंनामैकत्रिंशोल्लासः ॥ ३१ ॥

अथ हनुमन्नाटकेनवमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । छप्पयछन्द ॥ तदनन्तर लङ्केश, सानुचर मन्दिर सुन्दर करि प्रवेश उचरत, उई इच्छा उर

अन्दर भौ अनुजीवी मोर, अखिल सुनि लेउ बचन मम। माया रचन प्रपञ्च, कियो चाहत है चित हम॥ मन रुचै देव सो कीजिये, इमि असुरन उत्तर दियो। सो सुनि सुख सरसावन लग्यो, रावण हरषावन हियो १ तक्षण रजनिचरेश, राम सौमित्री मथदुइ। माया बिरचित किये, रूप ललिताइ परतच्छुइ॥ गलद बिरलरतधार, प्रेत परियस्त नयनबर। जनकनन्दिनी निकट, झटिति धर कटे अग्रधर॥ शिर युगल जोय युगभ्रात के, सजल नयन हुव जानकी। सुधिरई कछू न सयानकी, बिसरिगई गतिप्रानकी २ अहह निमी नरनाथ, नन्दिनी गदगद बयनी। चुवत चारु चषनीर, फुल्ल नवनीरजनयनी॥ स्वामिमरण भयभीत, उच्चरत आनन सीता। हृदय दहन नहिं दहत, मृत्युनापिच नहिं नीता॥ हा राम रमण संकट शमन, हा लक्ष्मण यहका भई। अतिशूरबीरता धीरता, रावर सब कितको गई ३॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ रामचन्द्र शिर कमल ढिग, बहुबिधि करत बिलाप। हा प्रभु पीतम हा रमण, बिश्वबीर बर आप ४॥ सीतोवाच। षट्पदछन्द॥ सुललित सरयू नीर, तीर बानीर कुञ्जमह। कामकेलि कमनीय, मध्यबर बदत बचन वह॥ सुमधुर अधरमदीय, पान पीयूषभणततित। भयोशीर्ण परिपूर्ण, गयो सब उहिं प्रभावकित॥ जिमि अम्बर बिनशत अर्कतम, तिमिकरिये अरिगणहनन। मम देखि देखि अति दुर्दशा, मनमधि कछु कीजै मनन ५॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ शिर बिलोकि सिय उर बिरह, शोक मोह अरु कोह। प्रेमाकुल व्याकुल व्यथित, दुसह दुःख सन्दोह ६ रावण मधुरालाप करि, देत बिपुल बिश्वास। तिन्हैं सीमतनकन सुनत, रही न जीवन आस ७॥ सीतोवाच। षट्पदछन्द॥ चहत प्राण परित्याग, कहत करुणामय बचना। पीतम प्यारे प्राण,

नाथ कैसी यह रचना॥ उत्तर क्यों नहिं देत, वदन वारिज मधु-वानी। नयन निहारत नाहिं, कहा मोको न पिछानी॥ वर त्रिबुध वधू वल्लभभये, बिसरिगये सुधि मोरसब। आलिंगि मत्थ हंसा उड़हि, इहि अवसर अविलम्ब अब ८॥ कविरुवाच॥ इमि कहि मस्तक कमल, जबै आलिङ्गन लागी। गगन गिरा गम्भीर, भई करुणारस पागी॥ न खलु न खलु यह सीय, राम भूपाल मुकुटमणि। समर शिरसि नहिं वध्य, तोरप्रिय कदा काकुत्थणि॥ मतपरस्समात इहिं माथ को, धारहु प्रिय निरधार है। हाहर हर हर हरभक्त को, यह माया अवतार है ९॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ अस अकाश बाणी सुनत, रावण युत युग मत्थ। करि अम्बर उत्पतन कृत, किय निष्क्रमण अकत्थ १०॥ चन्द्रायणाछन्द॥ संयुत लज्जा हर्ष भई तब जानकी। इक शरमा राक्षसी पियारी प्रानकी॥ तासों वूझति सीय यहै अद्भुत कहा। परहां। प्रत्युत्तर वह देत होय सकरुण महा ११॥ शरमोवाच। दोहाछन्द॥ तू नहिं जानत जानकी, रावण माया ख्यात। भयजिन आनहु भामिनी, जीवत रामस-भ्रात १२॥ चन्द्रायणाछन्द॥ काहल मर्दल आदि कुलाहल होत है। सज्ज तुरङ्ग महेशननाद उदोत है॥ आकर्णय आकर्ण विलो-चनि बार्त्त है। परहां। राम समागम शोर निशाचर आर्त्त है १३॥ षट्पदछन्द॥ विरम विरम कोपते, कहा अपमान विचारत। रावण सतनय बन्धु, विमर्दन रघुबर धारत॥ इन्द्रनीलमणि नील, राम कोमल इन्दीवर। करिहैं त्वदधरपान, कोमलाङ्गी जु निरन्तर॥ सुनि शरमा के वर बचन इमि, जियजानी पिय जियत है। तनु बिरह ताप मेट्यो सबै, लज्जित हिय क्षण कियत है १४॥ दोहाछन्द। पहिले लखि तस्यान्तमत, कहे न पापी

प्रान । अभिप्राय यह आनि उर, मैथिलि लज्जावान ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिराजरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका
रामाङ्कजगोविन्दरामाविरचितेश्रीचरित्रविलासेभाषायामस्तक
निर्माणंनामद्वात्रिंशोऽङ्कः ॥ ३२ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ भिन्नमार नाराच भयो असुरेश है । पुनि अशोकबाटिका कियो परवेश है ॥ परिवृत्त सुरसुन्दरी अमित सन्दोह है । हरिहां । हिय विकार सिय करन महामन मोह है १ ॥ रावणउवाच । षट्पदछन्द ॥ अस्मत चण्ड चपेट, घात स्वर्दन्ति पतित है । कुम्भस्थल अतिथूल, रक्त मुतियततितितहै ॥ तिनकरि अचित अंघ्रि,उरस्थल अविरत इनके । तव पदपंकज निकट,नमत आलिनी शिर जिनके ॥ जानकी अद्य अवलोकिये, भामिनि भाग्यावलि भली । इकसंग अहो इतआपकी, सतीचरित बल्लीफली २ लख मैथिलि मम मत्थ, इन्हैं शङ्कर शिरधारे । पद संश्रितते भये, अबै इतआइ तिहारे ॥ कहा अवज्ञा करत, ररत करभोरु विनय सच । सुनि सुनि सभय सकोप, भई परतिय लम्पट वच ॥ बैदेहि बदतरे मन्दमति, शिवोत्तीर्ण निर्माल्य सब । धिकतोहिं तोर आननन धिक, हे अतिशय अस्पृश्य अब ३ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ सिय साध्वी सुन्दर वचन, अक्षर अलप अमोल ॥ रक्षाकरि हेरावरी, टा-रहि विघन अतोल ४ ॥ रावणउवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ तूहे भीरुम्भोरु त्रिदश मुखम्लान है । रक्षाता स्वामि राम न सङ्करथान है ॥ सैना शाखामृगी विपद पुनि प्राप है । परहां । पञ्चाक्षर परलोपि अर्थ थिर थाप है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ काहि अवज्ञा करत, यहै दशमुख तव पद-नत । जबै किये शिरछेद, तबै गोपति इमि उचरत ॥ रेरेरे ल-ङ्केश, छेदि हमको शंकरते । मत मांगहु वरदान, न कछूहै मङ्गन नरते ॥ अरु हरहूते ऐसी कही, गुहसोपन जिन देउ बर । जउतउ

सङ्कुद्ध शिरधरे, रिन इहिबिधि रावण असुवर ६ राम अर्द्ध चित सीय, अर्द्ध चितरावण अन्दर। आधे मैं बिरहागि, अर्द्ध रोषानल मन्दर॥ शीत दाहहै एक, अपर अति उष्णदाह हैं। दग्ध करेजा भयो, जानकी तोर नाह है॥ अब तात आश उर छांडिये, मोमधि मानस मण्डिये। जिन देह दुसह दुख दंडिये, हिय हठ हठ खलु खण्डिये ७ सुग्धे मैथिलि चन्द्रबिम्ब,सुन्दरमुखि सीते। औपर प्राण प्रयाण, माणरख प्राणपिरीते॥ मन्मथ नदी मृगाक्षि, असुन ईश्वरी रख अब। मुख मुख मुखागु, उरस्थित यह आमहु सब॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर, रामचन्द्रहै एकमुख। हौं असुरनाथ निज-थान थित, इत गहि है दशबदनसुख ८ ॥ जानकयुवाच ॥ चुपरहु चुपरहु असुर, मुधा जल्पित नाहिं कीजै। मेरे निश्चय बचन, बीस श्रवणन सुनिलीजै॥ उत्पल श्यामल कान्ति, रामभुज मिलहिं कण्ठमम। बिंशति पाणि कृपाण, करहिं छिन्दन निर्दयतम॥ इन उभय बातते तीसरी, तीनकाल नहिं होहिना। बड़ बिंशति गाल बजाइ कै, बचन सुनावहु मोहिना ६ ॥ दोहाछन्द ॥ मोर निरन्तर ध्यानधरि, राम लियो मद्रूप। तैसे तबकुल कदनको, मम निरखाहि तद्रूप १० ॥ कविरुवाच ॥ रावण भो निष्क्रान्त तब, सुनि बैदेही बैन। निज मन्दिर अन्दर गयो, चहत न कित चित चैन ११ कछुक समय तित थितरह्यो, पै न चैन मनरञ्च। पुनिसिय ढिग आनन निमित, बिरचत महा प्रपञ्च १२ ॥ पद्पदछन्द ॥ नाना वा-दित बजत, तुँग स्यंदन गज गजत। कपि मर्कटक सु भुजा-स्फाल कोलाहल छजत॥ रघुबर बिजय बजाय, कियो पूरित लङ्का-पुर॥ रामरूप गहि बनअशोक, प्रति गयो उमँगि उर। लिय पञ्च पञ्च शिरकर युगल, निशिचरपति के पर रेकव॥ जानकी हेरि

हर्षित भई, मानि मनसि निज स्वामि सच १३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ लङ्का मधि रघुनाथ बेखबर धरिलियो। जनकात्मजा समीप गौन तूरन कियो ॥ नामलेत व्यभिचार होय जिहिं हटतहै। परहां। रूपधारि रघुबीर कि दुर्घट घटत है १४ निरखि निरखि निमि नृपति नन्दिनी नैन हैं। रघुनन्दन वरवेष बिराजत ऐनहैं ॥ भामिनि भय तजिभई सहर्षित होय हैं। अरिहां। रुचि करि तासु समीप गई शुचि सीयहै १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ निरखि राम साक्षात, झटिति कुचतटी भारनत। तदपि तूर्ण उत्थाय, अग्रचलि गई सीय तित ॥ प्राणनाथ हौं धन्य, रजनिचर मस्तक तजिये। शान्त होय बिरहागि, गाढ़ आलिंगन सजिये ॥ इमि मिलि न मनोरथ मैथिली, करन चही किंचित जबै। वह रामवेषधारी असुर,भयो क्लीब तत्क्षण तबै १६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ सीतासती समीप निशाचर खण्ड है। सत्वर भयो विशीर्ण जासु मणिदण्ड है ॥ इच्छामात्र करन्त यहै फल भापहै। परहां। शिव शिव अन्तर्द्धान असुरपति आप है१७॥ कविरुवाच ॥ कह शरमा जानकी यहै नाहिं रामरी। रावण असुराधीश सुमाया ग्रामरी ॥ सीय भई सबिषाद उचारत बैन है। परहां। परि है किमि पहिंचान सु नीरजनैन है १८ ॥ जानक्युवाच ॥ हा हाहा आकाश धरणि हा वरुण है। हाहा वायो अर्क करहु मम करुणहै ॥ रहिहै कौनप्रकार आत्मगत धर्म है। परहां। परिहै किमि पहिंचान प्राणप्रिय पर्म है १९ ॥ कविरुवाच ॥ तब बाणी आकाश अमल ऐसीभई। चतुरशिरोमणि सीय सिन्दाणी यह सई ॥ राम सराहत राक्षसेंद्र रण सोयहै। परहां। चुम्बहि मन्दोदरी ताहि अति रोयहै २० तब परि है पहिंचान सिये तव पीय की। शमन होयगी दुसह दुःखतति हीय की ऐसे सिय समझाय गगन गिर चुपरई

परहां। मैथिलि मानस मध्य सकल दुविधा गई २१ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ रावण निजकेली सदन, थितहुइ करत विचार। मया भास रामत्व पुनि, कियतस चरित प्रचार २२ ॥ रावणउवाच ॥ पादमूल मद्गती विदित, निपट निरुन्धन कीन। कौन समयमधि क्षीणपन; दुष्ट दुसह दुखदीन २३ ॥ षट्पदछन्द ॥ जनस्थान मधि भ्रान्त, कनक मृगतृष्णा हतप्रिय। वचन सो वैदेहीति, साधु प्रतिपद प्रजल्पित किय ॥ कीन्हों लंकाभर्तृ, वदन परिपाटी वर्णना। मया प्रश्न रामत्व, कुशल वसु तासु निकुञ्जना ॥ इहि मध्य श्लेषत्रय चीनहै, प्रथम कीनरावण रचन। पुनि द्वितिय राम प्रवचन पठत, तृतिय काहु भिक्षुक वचन ॥ २४ ॥

इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपावरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविलापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेरावणभ्रमश्लोनामत्रयस्त्रिंशोल्लासः ॥ ३३ ॥

अथश्रीहनुमन्नाटकेदशमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ गिरि सुवेल थित कटक, बीच रघुराज विराजत। सहित भ्रात सुग्रीव, विभीषण युत छवि छाजत ॥ लङ्काधिप प्रतिजाय,जबै अङ्गद उतआयो। विधु वल्लभ वैदेहि, वाहि निज निकट बिठायो। युवराज दूत वर्णनकरहु, है संधी उपकारिणी। दशग्रीव निकट तुम्हरी गिरा, भइ अपकारानुपकारिणी १ ॥ अङ्गदउवाच ॥ अङ्गदयुग करजोरि, अरज कीन्हीं यहि रीती। अनुपकारिणी भइ, पुलस्त्य पोते परतीती ॥ उदाहरण हरिणाङ्क, भाल तिहि गुरु भव भाषत। उक्षारथ अरु अस्थि, माल भूषण परकाशत ॥ अरु अङ्गराग भल भस्म जिहि, खासवस्त्र गजचर्म है। एकालयस्थ धनपति सखा, जस गुरु तस शिष धर्म है २ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि विहँसे रघुनन्द, हुकम पुनि ताहि सुनायो। भो अङ्गद युवराज, समरवर अवसर आयो ॥ सब सैनिक सुग्रीव,

दीजिये आयसु ऐसे रहे शर्वरी बीत्त, सकल सावध हुइ जैसे । पुनि प्रात प्रभाकरके उदय, संगर उत्सवहै महा । तब कहि तथास्तु तारातनय, कपिन कपिन कपिवरकहा ३ सरस शर्वरी समय, राम लक्ष्मण दोइ भ्राता । कियो कटकमधि शयन, तहां त्रिभुवनजन-त्राता ॥ रावण पठई प्रबल, प्रभञ्जनि नाम एकसी । छाई छलबल सकल, छकी मद अछक छाकसी ॥ निर्भरशयान लखि राम को, तत्क्षण छुरिका करलई । गुरुभ्रमण सुदर्शन चक्र लखि, चकित-बराकी तकिरई ४ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ तिहि अवसर प्रति बुद्ध सु अङ्गदवीरहै । प्रभञ्जनी अधिगम्य सुअधिक अधीर है ॥ पुन-र्गंतुमुद्यता गर्वगति गोपहै । परहां । तब अङ्गद उच्चरत बचन साटोप है ५ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ तिष्ठतिष्ठ निशिचरी, क्षणक रहिजाउ अत्र है । फिरि जावहु निज स्वामि, असुर अधिपाल यत्र है ॥ आई अङ्गदबाहु, पाशमधि आक्रन्दत अब । हरिणी सिंहाधीन, तासको है त्रातातब ॥ इमि कहि उहिं अभिमर्दनकियो, भैरवरव चिक्कार किय । सो सुनत सकलकपिकटकके, जागिउठे अकुलायहिय ६ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ अकूपार इव पार यामिनी पायकै । प्रात होत कपि-व्रात चले सब धायकै ॥ दोर्दण्ड आस्फाल केलि अभिनीय है । अरिहां । उतपाटित साटोप शैल कमनीय है ७ ॥ दोहाछन्द ॥ गिरिवर तरुवर धारिकर, करि कोलाहल चण्ड । लङ्का कीन्हीं आकुलित, वानर ओघ उदण्ड ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ लङ्कामधि लङ्केश उदय रविहोतही । सुनि वानर वाहिनी कुलाहल श्रोतही ॥ असमय मूर्च्छित होय सुभट सुलवायहै । परहां । दीन्हों उतकट कटक भ-टिति पठवायहै ९ लङ्काचल शुभशिखर मञ्चधित आप है । मन्त्रि-महोदर पुरोभ ग महि य प है रघुवर बा ब दिनी विलोकन मानहै ।

परहां महिमा महद महान करत अनुमान है १० जलनिधि खेलत
हुते इतै बानर सबै। यातुधान की फौज उतै आइगबै॥ लीन्हें झटिति
उखारि वृक्ष बहु वृन्दहै। परहां। क्षण मधि कियो निकन्द निशाचर
वृन्द है ११ सचिव विभीषण डरन लगे कपि त्रासते। त्राहि त्राहि
रघुबीर उचारत आसते॥ तब तुरण हनुमान जिते जानत भये।
परहां। सकलहिये सम भाय भेद गावतभये १२ लङ्कामधि लङ्केश
महोदरते कहै। कब आये इत राम समय सुनिबो चहै॥ अविदित
आगम दिवस मोहिं रघुराज को। परहां। बन्दोबस्त नहिं कियो स-
मरके काज को १३ सीयसमर्पहि राम यही उरआनिकै। मन्त्रिमहो-
दरनाम सुकहत बखानिकै॥बानर बरबाहिनी नयनलखिलीजिये।
परहां। रामागम दिनकहत श्रवणगत कीजिये १४॥ महोदरउवाच।
षट्पदछन्द॥ धराहिगई नम्रता, धराधर घूजनलागे। क्षुभित अखिल
अम्भोधि, करण गिरि कूजनलागे॥ बरषागमसम बैरि, बधू बरषन्त
नयनपथ। बाहिनि पदप्रक्षेप, धूलि आच्छादित रविरथ॥ लङ्केश
आप जान्यो न किमि, रामजैत्र यात्रादिवस। भुवभोलधाम धूजन
लगे, शेषकमठ सँकुचित अवस १५॥ सपस्या॥ सूर्योदय के समय
रुदन चकई कियो॥ चन्द्रायणछन्द॥ जयप्रयान रघुनन्दभयो हो जा
समै। अतिशय धूलि कदम्ब उड़े हैं तासमै। शशिभ्रम छत्रनिहारि
नैनफाव्योहियो। परहां। सूर्योदय के समय रुदन चकई कियो १६
दोहाछन्द॥ सहायार्थ सुरपतिदिये, छत्र तुरग गजआदि॥ तिनकरि
शुभशोभित भये, रघुवर राम अनादि १७॥ कविरुवाच॥ पुनि रावण
बूझनलग्यो, कहहु महोदर कुत्र। किहिं किहिं ढिग का का करत,
रघुबर दशरथपुत्र १८॥ महोदरउवाच। षट्पदछन्द॥ कहत महोदर
भीत, लसत सुग्रीव गर्दमें; अक्षनिहन्ता अङ्ग, अंत्र विलसत

विनोदये चारु कनक मृगचर्म, उपरि आखिलाङ्ग विराजत अनु-
जार्पित धनुसज्ज, सशरकरधर छ बिराजत अति तीक्षण अक्षीण
कोपाकरि, वीक्षमान तव लङ्कपुर। संदत्तकरण त्वदनुज बचन, राम
धीर रणधीर उर १६ बद्धसेतु भ्रूमङ्गबन्दि, आवेदित रघुपति॥ तब
मातुलत्वचि विष्ठ, अनुज मन्त्रनदत श्रुतिगति॥ बाणदस हस्थर्द्ध,
लषणलखि कृतसास्मितमुख। श्रीवबाहु सुग्रीव, गोदसमर्पित समस्त
सुख॥ अरु अङ्गदके हनुमानके, अङ्कनमें अंघ्री उभय। लङ्केशनिहा-
रहु नयनते, लसत राम निजजन अभय २०॥ दोहाछन्द॥ गगनगि-
लित भूमीगिलित, गिलित दशहुदिशिदेख। प्लवंग पुञ्जपीता स-
रित, सीतापति भटपेख २१॥ समस्या॥ व्याधसदनसम लसत नभो-
मण्डलइते॥ चन्द्रायणाछन्द॥ देव महा उतपात मध्य दिन पेखिये।
क्वचित मीन कहुँ मेष दृष्टि दे देखिये॥ कित लम्बित कृत्तिका, सार्द्र
मृगशिरकितै। परहां। व्याध सदन सम लसत नभोमण्डलइतै २२॥
कविरुवाच। दोहाछन्द॥ साभ्यसूय रावण बदत, अहो महोदर पश्य॥
नहिं प्रताप तप सहि सकत, आफताबहू यश्य २३॥ रावणउवाच।
षट्पदछन्द॥ मम प्रतापतति तीव्र, ताप संतप्त प्रभाकर। पूरब पश्चिम
जलधि, बीच डूबत निशिबासर॥ प्रविशति बारिधि मध्य, नाथ
बैकुण्ठ निरन्तर। निवसत नित हिमगिरी, शान्तिहित सतत त्रिपुर
हर॥ क्षणमात्र कमल छोरत नहीं, कमलासन आसन कियो।
शिरछौनि छत्र लिये शेष, अहि कमठ तासु आश्रय लियो २४॥

इति श्रीमत्पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविशापितकवि-
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितश्रीवरविलासेरावणमहोदर-
संवादोनामचतुर्विंशोल्लासः॥ २४॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ इतने अन्तरमध्य सुबिपिन अशो-
कते। शरमा चतुर लुकाइ लङ्कपति लोकते सिय तत्रस्थ

विमान बीच बैठायहै परहां पीतम प्यारे राम दिये दरशायहै १ निमि नृपनन्दिनि नैन कलित कमनीयहै। रामरूप अभिराम परम रमनीय है॥ उभय न भयो मिलाप सरस शोभाभई। परहां। तरु तमाल पर जाय यथा मधु करिछई २॥ दोहाछन्द॥ इमि पिय दरश कराय कै, शरमा चतुर सुजान। पुनि अविलम्बित जानकी, पहुंचाई निजथान ३॥ कविरुवाच। बरवैछन्द॥ राम कटक बानर भट लङ्क निहार। करि उतपेक्ष अलंकृति बचन उचार४॥ बानरभटाऊक्तः॥ जघन कनक प्राकार रतन दुकूल। त्रिकुटाचल बनिता जनु लङ्कानूल ५॥ कविरुवाच॥ रावण लङ्कामधि इमि बचन उचार। अहो महोदर मन्त्री सुनिये सार६॥ रावणउवाच॥ कुम्भकरण सोवत है जाहि जगाउ। निद्रा रसिक निरन्तरउहिं इत ल्याउ७॥ कविरुवाच॥ कहि तथास्तु तित गवनेउ सचिव समस्त। कुम्भकरण सोवत जित निद्राग्रस्त ८ करि करि अति उच्चस्वर कूपुकार। कर्ण रन्ध्र मुख धरि धरि किय चिकार ९ तनक न सुनत निशाचर हारे हीय। तब तिन प्रति उचरत है ताकी तीय १०॥ समस्या॥ जिहिं गलकरन्ध्र मधि मशकइव, बानरयूथ प्रवेश किय॥ कुम्भकर्णाङ्गनोवाच। षट्पदछन्द॥ कहा करत उपचार, जगावन कुम्भकर्ण है। किये सवारम्बार, शब्दकरि पूर्णकर्ण है॥ कछु लीजै विश्राम, याहि निद्रा न तजत है। यहहु आठौयाम, निरन्तर ताहि भजत है। अब अवौं कवन उपाय बद, सुनि करिलेउ विवेकहिय। जिहि गलकरन्ध्र मधि मशक इव, बानरयुत्थ प्रवेश किय ११ गजाक्रमण अरु घोर, सचिव चिकार शब्दकरि। जब न जग्यो वह कुम्भकर्ण तब शङ्ख सकलधरि॥ अब किहि विधि जागिहै, अमित उर करत अँदेशा। बिना जगाये कूर, कोप करिहै लकेशा गन्धर्व यक्ष सुर सिद्ध बर,

किन्नर कामिनि कलितकृत। बरगायन गीतामृत सुनत, मौवि- निद्रचैतन्यघृत १२ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ उत्थापन अवलोक, कुम्भकरण बड़ विकटवपु । सभय भये कपिलोक, लखि मारुति आशिष बदत १३ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ जिहि जृम्भा संभार, भीम भृकुटी तट भ्रमत । कुम्भकर्ण अट्टहास, व्याकोश विकासत ॥ अद्भुत बदन बिलोकि, चकित चित प्राणि पुरायपद । मृदुल मृणाली मिथिल, सुता सँग राजहंसहद ॥ सिन्दूर पूर्ण गिरि शिखर शिर, शेखर श्रीरघुबर विमल । भय विकरयुक्त कपि कटक के, बर विभूतिमद होहुमल १४ ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कामधि जब कुम्भकर्ण सुप्तोत्थित दरश्यो । कवलितकृत पल शैल, जाल तीव्रा- सव परश्यो ॥ तृसभयो न तथापि, बचन मुख उचरत ऐसे । गङ्गा यमुना सिन्धु सुरापूरित हुवजैसे ॥ तब तृप्तिहोय मेरी कछुक, इतने ते का होत है। जिमि तप्तायस जलबिन्दुइव, अधिक अधिक उद्योत है १५ ॥ कविरुवाच ॥ निज कटकस्थित राम, निरखि वपु अद्भुत ऐसो । लङ्काशिरजिहिं जानु, अङ्ग अम्बरलौं तैसे ॥ वातात्मज ते बदत, मारुतेयहै कहा है। अष्टधातु संघटित, किधौं यह यन्त्र महाहै॥ तब युगलहस्त पुटजोरिकै, पवनपुत्र उचरन लग्यो। यह यन्त्र नाहिं महराजजू, कुम्भकरण सोवत जग्यो १६॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कुम्भकर्ण लङ्केश निकट जब प्राप है। सिय अर्पहु यह अभिप्राय उर आप है ॥ जउ आयसु क्षितिपाल प्रचर सर्वत्र है। परहां। शास्त्रदीप संचार करत नृप अत्र है १७ भ्रातृ बचन सुनि कह यथार्थ लङ्केश है। निस्संशय बच शास्त्र सु इष्ट अशेशहै॥ तदपि न तजिहौं सिया यहै अभिप्राय है। परहां। बदत बचन सावज्ञ सुनावत ताय है १८ ॥

फटिकाचल उच्छिष्ट,शिखर श्रेणी पृष्ठाङ्कद

भास प्रतिष्ठ परम, पै नतर भुज बिलसनहद्द ॥ सनर सुरासुर भयद्द कितहु पानन न पराजय । नरख नाहैं कहा प्रयाकमविहैप मोजय ॥ अति तोर भुजाडम्बर वृथा, भई त्वदाशा शिथिलसब । अति निद्रा बाधतहै तुम्हैं, जावहु निद्रानिलयअब १९ ॥ कपिरुवाच ॥ कुम्भकरण हुइभीम, भणत भारती भयङ्कर । बलवद्विद्विप शोक, शल्य संपूरण परिहर ॥ पावहुनाहिं निषाद, रहहु कल्याण समाश्रित । अहमहमिक या अहं तनक, नाहिं तुहिं तजिहौं इत ॥ कह काल विधाता है कहा, का अरिकुल भयकहा यन । यमदूत कहाको राम है, के कपींद्र रण कुपितमम २० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ सुनि शत्रुण सानन्द वचन उच्चरत भयो । कुभट संग बलखेउ पराक्रम प्रबलयो ॥ रण आङ्गण अवतरहु बन्धु उच्छाहते । परहां । शीतल करिये हीय रिपुनके दाहते २१ ॥ कपिरुवाच । षट्पदछन्द ॥ कुम्भकरण साक्षेप, यथारथ तिहिविधि कीन्हो । उरसि अमित उत्साह, समरवर मारग लीन्हो ॥ जिन भाजहु कपिमल्ल, सभय हुइकै संगरते । कुम्भकरण नाहिं भिरत, कदाचितहू बानरते ॥ जउ लघु जलधरको पात तउ, स्वल्प सरित नाहिं संचरत । पुनि मशककुटुम्बन केशरी, कबहुँनिकन्दन नाहिं करत ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवराविलासेकुम्भकर्णस्याङ्गणावतरणंनामपञ्चत्रिंशोल्लासः ॥ ३५ ॥

कुम्भकर्णउवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ नहिं बाली न सुबाहु, न खर त्रिशिरा अरु दूषन । नहिं ताटक अभिमान, तथा ताला वह रूपन ॥ नाकछु सेतु समुद्र, रुद्रधनु ना सुहिंमानो ।कुम्भकर्ण ममनाम, काल मूरति पहिंचानो ॥ रे रामप्रतापानलकवल, वीर मौलि नरशल्य सम संग्राम भूमि बिचरत फिरत, के पै तुलत नहिं तुल्यमम १

कविरुवाच तदनन्तरउत्पत्य, गगनमधि अविलम्बित अति बहु
मूल गहिलियो,लपकि सुग्रीव प्लवगपति पुनि भुजकरि रविकराह
देश दृढ़ पीड़ित कीन्हो। कुम्भकरण सानन्द, लङ्कपुर मारगलीन्हो॥
कपिराज तूर्ण भक्षण किये, कर्णघ्राण अतिहरापिहिय। कूर्पर प्रहार
करि उदरमाधि, पुनरागमनिज शिविरकिय २॥ दोहाछन्द॥ स्रवत नि-
रन्तर शूरपन, शूर्पणखा मलभ्रात। भागिनीसम अब इतउतै, आवत
जातलजात ३ आनन कहा बतायहो, कपिलै नाक कटाय। जग
मधि जीवनते जबहिं,लीन्हों हियो हटाय ४ कुम्भकर्ण बिन कर्णको,
बहुरिभयो बिन नाक। अब जीवन नहिं उचित है, उचरत गदगद
बाक ५॥ षट्पदछन्द॥ लम्बनिसासे डारि, बिलोचन बारि बहतहै। स्वा-
त्मजलांजलिदेय, चपलचित मरण चहतहै॥ छेलोकियो मिलाप,
होय सकरुण लङ्काते। गहि त्रिशूलकर चल्यो, समर विरहित शङ्का
ते॥ क्रोधान्ध कालमूर्त्तीनयन, प्रलयानल अङ्गारगण। संछिन्नघ्राण
अरु कर्णयुग, कुम्भकर्ण अवतीर्णरण ६ तिहिं बिलोकि संत्रस्त,
चित्त करि भूरि भये हैं। जीवितआश बिधपारि, कितक गिरि कुहर
गये हैं॥ केते प्रचलित चरण, बात आकाश उड़े हैं। भ्रमरचएड
दोर्दण्ड, परस पुनि पुहमि पड़े हैं॥ मुखघ्राण रुचिर चय वमत,तित
प्राण धरत संकष्ट है। फूत्कार करत अति बारबहु,मनो महा अहिदष्ट
है ७॥ कविरुवाच॥ त्रिनयनदत्त त्रिशूल, ताड़ित कोटी प्रभुपूरण।
मनो केतु संहार, कियो उच्छेपन तूरण॥ घोर प्रज्वलित महाताक्षि
तित उर तारापति। चपलचलायो चण्ड, प्राणहारक अद्भुतगति॥
जानकीकन्त जानत सबै,शरकरि छेद्यो बीचते। सुग्रीवसखा निज
प्राणसम, बचो निशाचर नीचते ८ गहि मुद्गर कपिकटक, बीच घट-
करण महातुर। क्रोधानल अरु जाठराग करि भयो क्षुधातुर " एक

कमलमधि लिये, कोटि वानर अति उतकट। वदन मध्यरासि सच-अदन कृतभट अति उद्भट ॥ कपिगरण पीसिहारे अमित, कर्णरन्ध्र केते कढ़े। पुनि पकरि पकरि चर्वितकरत, दावि दावि दशननबढ़े ॥ सव्य स्वकर करि सान्द्र, शिविर कपिकटक बिदारन। विद्यमान वर बिपुल, वीर वानर बनवारन ॥ प्राणकरनको हरन, हार सुग्रीव बिलोक्यो। कुम्भकर्ण अतितूर्ण, ताहि उरस्कर तोक्यो ॥ मम रपु बिरूप करता, यहै महावीर मनलायकै। लेचलेउ चपलताल्वि, गगन मग महाधूत धुवधायकै १० अङ्गदलखि निज तात, कुरु बेहान लपटिकै। कुम्भकरण प्रतिगयो, वीरवर भीरति भगटिकै ॥ गरुड़पास करि भुवि, निपात किय अरि अति तूरन। कछु सचेत सुग्रीव, होत उतनै उहि पूरन ॥ पापिष्ठ तनक बिसरत नहीं, खलु खिसानपन खीजको। नरसिंह पास बांधे युगल, काका अवर भतीज को ११ दुहुँन बद्ध लखि नील, सर्वंग निज अनलरूप करि। कुम्भकरण मुख कन्ध, मौलि श्रुति घाण उदरभरि ॥ तीव्र ज्वाल किय दाह, कुपित ह्वै सकल अङ्ग जिहिं। विकल भयो क्रव्याद, कुटिल खल कुम्भकरण तिहिं ॥ सुग्रीव अवर अङ्गद उभय, वानरेन्द्र प्रोत्थित तदा। कपि कटक बीच आनन्द अति, युगल जोय आयो यदा १२॥ कविरुवाच ॥ लङ्कावर शिखरस्थ, निहारत रावण रनको। भ्रात जरत लखि सुधा, बारि बरसाये घनको ॥ शीतल भयो शरीर, सचेतन कुम्भकरन है। भक्षण चह नलनील, यथा अहि युग सुपरन है ॥ गहि लिये लपकि द्वइ कपिन को, सब वानर देखतगये। जब जाम्बवान जर्जर जरठ, उग्रवेग आवतभये १३ जाम्बवान अति उग्र, बेप बिपदा बिदरन है। निज भुज गुरु मदयुक्त, निरन्तर कुम्भकरन है ॥ जानु बन्ध किय कण्ठ, गाढ़ रचि असुर भगगयो

जिमि गिरीन्द्र दम्भोलि, नील नल युगल छुटायो ॥ तब ऋक्षराज शिर ऊपरे, सुमन वृष्टि किय मरुतगन । करि क्रोध निशाचर तूर्णतिहिं, कियो गुल्फ आघात तन १४ आलम्बित रघुबीर, सलक्ष्मण चले मरुतसुत । कालान्तक सम शत्रु, विशङ्कित उरजाउतउत ॥ समरथान अवतीर्य, चार्य बहु धैर्य धुरन्धर । रम्य रुद्र अवतार, उग्र कपि कटक पुरन्दर ॥ अति अरुण अक्ष नरसिंह सम, निजकर पर गिरिवर लिये । किल कलश करण त्रिकरण निकट, बिकट सुभट हरपत हिये १५ पवनपुत्र पटुपाणि, पद्म पर्वत छबि कैसे । मेरु शिखर पर सरस, शोभ मैनाक जु जैसे ॥ कुम्भकरण के करण, मञ्जु सुद्गर सोहतहै । मनु मन्दरगिरि अग्र, अजनजन मोहतहै ॥ कलपान्त समरमधि मरुतसुत, गिरिगिराय शिर ऊपरे । सुद्गर प्रहार क्रव्याद करि, भूधर पटक्यो भूपरे १६ ॥ दोहाछन्द ॥ आञ्जनेय करिकोप उत, अद्भुत दई चपेट । द्रुत सुद्गर क्रव्याद को, लिय लंगूर लपेट १७ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ इहि अन्तर मधि राम, बिशिख संधान किये हैं । इन्द्रदत्त शर युगल, तीक्ष्ण तिहिं समय लिये हैं ॥ कुम्भकरण के निधन, काज रण बीच चलाये । एक हृदय अरु द्वितिय, बिशिख शिर छिन्न कराये ॥ नभ नमोनमो जयजय धुनी, सब सज्जनजन शरनभो । लङ्केश बाहुबल हरण भो, कुम्भकरणको मरणभो १८ मारुति चराड चपेट, गिस्यो मस्तक तुहिनाचल । जिहिं कपाल जलमध्य, डूबिहै भीम महाबल ॥ पुनि क्रव्याद कबन्ध, पुच्छ गहि गगन उड़ायो । चल्यो गयो आकाश, पेख पार न कोउ पायो ॥ आनन्द भयो कपिकटक मधि, दुसह दुरित दुख दरणभो । लङ्केश बाहुबल हरणभो, कुम्भकरण को मरण भो १९ दोहाछन्द । राम बीर्य अविजाग्नि उर, बरणत लक्ष्मणभ्रात ।

उच्चस्वर गम्भीर गिर, कह कबन्धवलुख्यात २०॥लक्ष्मणउवाच॥ षट्पदछन्द ॥ बाजू विबुध बिमान, दूरलीजे रविस्यन्दन । असुराधम अधराङ्ग, उछाल्यो अञ्जनिनन्दन ॥ रे रे वानर वीर !, अनुत्रय सुनहु बचन मम । रण प्राङ्गण परिहरहु, रहहु एकान्त चहत हम ॥ जनु अञ्जनादि प्रतिनिधि अवधि, बिस्मापक जु अनन्व है। आतङ्क हेतु लङ्का गिरत, कुम्भकरण कुकबन्धहै २१ ॥कविरुवाच॥ तनुतेभो उत्क्रान्त, प्रवर सुरबधु लिय भुज भरि । नारदादि संगीत, मधुर मृदु सुर जनरञ्जकरि ॥ नाहिं बिमान आरोह, करत जउ कृष्यमाण है । अभिलाषा उर रही, भर्तृ परित्राण प्राण है ॥ जिहिं पुनरपि समरच्छालसत, ध्रुव सङ्गर मधि धीर है। किमि शिव शिव शिव बर्णन करैं, कुम्भकर्ण बड़ वीर है २२ लखि लङ्का शिखरस्थ, बदत रावण बिस्मय सह । मरुत चन्द्र आदित्य, इन्द्रमुख हुतभुज जहँरह ॥ उपसर्पत अनुदिवस, भये संतत जिहिं मोपर । सकल सुरासुर करि, अजेय अविरत लङ्कापुर ॥ किय कोप बिकम्पित अधर तट, पुरु वानर भट बिकटकरि। अति समाक्रान्त त्रासित भई, शिव शिव शिव दशमुख नगरि ॥ २३ ॥

इति श्रीपिपलोद्पसनाधिपावरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे
कुम्भकर्णबधोनामषट्त्रिंशोल्लासः ॥ ३६ ॥

अथहनुमन्नाटकेएकादशोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ रावण भयो सकोप, तूर्ण सम्पूर्ण सेनसह । समरयज्ञ अध्वर्यु, इन्द्रजित अङ्गज किय वह ॥ कुम्भकर्ण बध श्रवनि, भयो आमर्ष बिमूर्च्छित । सीतापति बधबद्ध, लक्ष अवतीर्ण समरजित ॥ इत लक्ष्मण धनु गुण सज्जकरि, टणत्कार भरणी गगन । आपूरित कोपानल प्रबल ज्वाला बलिमाला मगन १ सुनासीर जत तितै, लषण नासीर

अग्रइत । लङ्का लङ्कापाल, सहित किय करण कमल चित मेघ-नाद लखि लक्ष,बचन मुख उच्चरत ऐसे । अल्पहु कारण नाहिं, कोप करियत इत कैसे ॥ थिर शुद्ध बुद्धि बिन हेतु नाहिं, कृपाक्रोध किलकरतकब । कृत संचित चञ्चल चितै नर, नेह कोह बिन काज सब २ हरि बिजहत संत्रास, भिन्न शक्रेभ कुम्भथल । लज्जा पावत बिशिख, तिहारे बपुप क्षुद्रबल ॥ तिष्ठ तिष्ठ सौमित्रि, त्वमपि नहिं क्रोधपात्र है । मेघनाद मम नाम, बज्रसम अखिल गात्र है ॥ भ्रूभङ्ग-मात्र नियमित जलधि, रामचन्द्र रघुबीर है । अति तूर्ण ताहि ढूँढ़त फिरत, वह मम संगर धीर है ३ अञ्जनिसुत सुग्रीव, नलाङ्गद नील प्रमुख कपि । घन घमण्ड थित मेघनाद नहिं लखत किंचिदपि ॥ दियो बरफ बर्षाय, बिपुल किय अन्धकार है । करत घोर शरघात, निरन्तर बारबारहै॥अधिरुह्य महद माया सुरथ,नभ थल थित गम्भीर गति। करि काल जलधि धुनि गर्जना, रावण बाल करालअति ४॥ दोहाछन्द ॥ यथामेरु मन्दरगिरी, वासव बज्र निपात । नागपाश शर बद्ध तिमि, राम लषण युगभ्रात ५ ॥ समस्या ॥ चन्द्रउदित चित च-कित, मुदित मन नितत चकई ॥ रोलाछन्द ॥ इहि अन्तर मधि पूर्व, बैर सुमिरण किय कोकी । सरवर थित वह दशा, भ्रात युग नयन बिलोकी ॥ शापतहौ मम दयित,राम रावनि हततकई । चन्द्र उदित चित चकित, मुदित मन नितत चकई ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ बन्धन दश-रथ नन्द, अकनि रावण आयसुदिय । सुमन बिमान बिठाय, बता-बहु पिय देवरसिय ॥ कहि तथास्तु लैगई, निशाचारि शरमा तित को । राम लषण युग बन्धुबध थित रण मधिजितको ॥ द्रुत देखि दुर्दशा दुहुँनकी, जानकि जिय शोचनलगी । बर बारिज से युग नयन ते, नीर निचय मोचन लगी ७ भार्गव गौतम च्यवन, शिष्ट

कश्यप वशिष्ठ मुनि। लोमश कौशिकप्रमुख, गिरामुख ज्योतिष मत चुनि॥ मुनि समीप आपके, मग्न चूचुका जिहिं तियतन। संतत सधवा रहैगहै, कबहुँ न बिरचापन॥ ते त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ ऋषि, सत्य वचन बक्ता सवै। तिन आशिष किमि मिथ्या भये, उर अचरज आवत अबै ८॥ चन्द्रायणछन्द॥ हा प्राणेश्वर राम फुरत सब अङ्गहे। बाहु नयन नहिं अनृत अशेष अभङ्गहै॥ तनक नाहिं सुखदेत माधुरी दृष्टिमें। परहां। भुजबिलास लुकि रह्यो कहौ किहि सृष्टि में ६ मात तात अनुजातरु अग्रज मानिता। मनसि तनक मुदलेत सकल सन्मानिता॥ पावत परमप्रमोद किंचिदारवा- सिता। परहां। जिमि रमणीय रमणीय रमण शिरवासिता १०॥ षट्पदछन्द॥ प्रत्युत्तर नहिं पटल, प्राणपति पीतम प्यारो। हाहा ल- क्ष्मण बन्धु, मोर अपनयन निहारो॥ रुष्ट भयेहौ कहा, कछुक उत्तर चाहत हम। भूरि भूभ्रमण कीन, कन्ज मम भयो भूरिश्रम॥ अब स्वर्ग सकल अवलोकिवे, सिद्ध करत किमि भ्रात युग। दुर्दशा देखि दुहि बीरकी, उर अन्दर अतिशय तरुग ११ लखि है नाहिं दिविलोक, माहिं विधिलोक सिधैहे। बिना किये मम शोध, उभय कितहुँ न थितिपैहै॥ कीजै प्राणपयान, स्वर्ग माधे संगम दीजै। कहा निहारत राह, प्राणपति मारग लीजै॥ लखि इमि अचेत अति जानकी, शरमा समझावत तबै। बैदेहि बदत कह बावरी, युग मूर्छित जागहि अबै १२॥ दोहाछन्द॥ सुनि शरमा शुचि बचन सिय, पुनि निज नाह निहार। शोच बिमोचन कीन कछु, लम्ब निश्वासे डार १३ रावण के भयभीत है, शरमा परम सु- जान। बन अशोक मधि लेगई, सियसह सुमन बिमान॥ १४॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका ... विश्रास॥ ३७॥

कविरुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है । सुन्यो है सुपर्ण शोर जाको विभु भौनबीच, क्रोधानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है॥ पन्नग पन्नग वृक्ष लक्षन खगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमधुक्र गवनि ग्रसायो है । स्वामिहि जिवायो सुधा बारि वरसायो सद्य, विनताको जायो वेग धामधाय आयो है १॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते, भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन ताप तनुत्रस्त २॥ षट्पदछन्द ॥ विरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । विलपत मुख हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ भो प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रवचन मुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश गिरिनिकुम्भिल,वटमूला स्थित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन निरख्यो मायासिय । उर्वीतल गिरि राम, परम गुर्वी मूर्च्छालिय॥ रघुवर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम, स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो श्रवणान धरिलीजिये ४ विकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज रसजलकरि । सिंचत धाराधारि,शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौमित्री पुनि पठत,कछू निश्चय ननिहार्‌यो । जामदग्नि मुनि शाप, मुग्धपन प्रकट प्रचार्‌यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप सकल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख । इमि करिकै आलाप कछु, विलपत लषण विशेख ६ ॥चन्द्रायणछन्द॥ कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै । अपर अक्षि प्रक्षेप

चले समर महि कोगजीव निर्जीव, निहारत ज्वलत् हनुकगादि। शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्छित भये सकलकपि। जाम्बवान उपविष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि॥ अनुगेश निहारत ऋक्षपति, धरि धीरज बूझतभयो। हनुमन्त विपुल बानरप्रवर, कहहु कुशल जीवतरयो ८॥ दोहाछन्द॥ सुप्रज प्रभञ्जन अञ्जनी, जेहिजाये जगजोय। कुशल सुनत कपिवरको, मम हिय हर्षित होय ९॥ विभीषणउवाच॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह। हनुमत मधि दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १०॥ जाम्बवानुवाच॥ जो जीवत दुर्धर्ष वह, हतबल अहतप्रमान। अरुण होय हनुमान तो, जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत बिभीषण, तुरत पहुँचे तत्र। पृष्ठभाग थित मरुतसुत, विलपत रघुपतियत्र॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितश्रीवरविलासेविभीषण जाम्बवान्संवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः॥ ३९॥

कविरुवाच॥ दोहाछन्द॥ राम निरखि लङ्केश वप, अति तीक्षण हतपीर। क्षण क्षण क्षण विलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १ श्रीरामउवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहैं। सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है॥ गहिहैं गिरि कपि कटक स्वरक हिय हायहै। परहां। पहै विभीषणवीर कहो कित जाय है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है। तदनन्तर तुम गहे अनुजकी गैल है॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहे। अरिहां। किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहे ३ मोको प्रथम सुनाय फेर सोवत रहे। क्रम न तज्यो किहि ठौर सुभग जोवतरहे॥ अबै स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये। अरिहां। हम इत अगलीगह चिप चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टप जाय है

कविरुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है । सुन्यो है सुपर्ण शोर जाको विभु भौनबीच, कोपानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है॥ पक्षन पवन वृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि ग्रसायो है । स्वामिहि जिवायो सुधा वारि बरसायो सद्य, विनताको जायो बेग धामधाय आयो है १ ॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते, भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन ताप तनुत्रस्त २ ॥ षट्पदछन्द ॥ निरख्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । बिलपत मुख हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ शो प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रवचन मुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ माधिगयो । ब्रह्मोपदेश गिरि निकुम्भिल, वटमूला वट्थित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन निरख्यो मायासिय । उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूर्च्छालिय॥ रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम, स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो श्रवणन धरिलीजिये ४ विकच नालिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौमित्री पुनि पठत, कछू निश्चय न निहास्यो । जामदग्नि मुनि शाप, मुख्पन प्रकट प्रचास्यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप सकल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख । इमि करिकै आलाप कछु, बिलपत लषण बिशेख ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै अपर आसि प्रक्षेप

चले समर महि । कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुल्मुकगहि ॥ शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्छितलये सकलकपि । जाम्बवान उपविष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि ॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि धीरज बूझतभयो । हनुमन्त विपुल वानरप्रवर, कहहु कुशल जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुप्रज प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये जगजोय । कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हिय हर्षित होय ९ ॥ विभीषणउवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह । हनुमत महि दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जाम्बवानुवाच ॥ जो जीवत दुर्धर्ष वह, हतबल अहतप्रमान । यरुण होय हनुमान तो, जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत विभीषण, तुरण पहुँचे तत्र । पृष्ठभाग थित मरुतसुत, विलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितश्रीवरविलासेविभीषण जाम्बवान्संवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः ॥ ३९ ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लङ्केश नृप, अति तीक्षण दुवपीर । क्षण क्षण क्षण विलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १ श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहैं । सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहैं गिरि कपि कटक खटक हिय हायहै । परहां । यहै विभीषणवीर कहो कित जाय है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है । तदनन्तर तुम गहे अनुजकी गेल है ॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहे । अरिहां । किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहे ३ मोको प्रथम सुवाय फेर सोवत रहे । क्रम न तज्यो किहि ठौर सुभग जीवतरहे ॥ अबै स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये । अरिहां । हम इत अगतीगति चिप्र चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टप जाय है

कविरुवाच । मनोहरछन्द हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है सुन्यो है सुपर्ण शोर जाको विभु भौनबीच, कोपानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है॥ पक्षन पवन वृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त गवनि त्रसायो है। स्वामिहि जिवायो सुधा बारि बरसायो सद्य, बिनताको जायो बेग धामधाय आयो है १॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते, भये सचेत समस्त। मेघनाद सङ्कट सहित, तीन ताप तनुत्रस्त २॥ षट्पदछन्द ॥ बिरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही। बिलपत सुख हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही॥ भो प्रवीर परयन्तु, पठत प्रवचन सुख पापी। कीन्हो खङ्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी॥ करि द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ भजिगयो। ब्रह्मोपदेश गिरि निकुम्भिल, बटमूला बटथित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन निरख्यो मायासिय। उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूर्च्छालिय॥ रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब। महि हिय भयो बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम, स्मरणरूप निज कीजिये। इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो श्रवणन धरिलीजिये ४ बिकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज रसजलकरि। सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि॥ सौमित्री पुनि पठत, कछू निश्चय न निहार्यो। जामदग्नि मुनि शाप, मुग्धपन प्रकट प्रचार्यो॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप सकल सप्रमाण है। गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण है ५॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख। इमि करिकै आलाप कछु, बिलपत लषण विशेख ६॥ चन्द्रायणछन्द॥

कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै अपर असे प्रक्षेप

चले समर महि। कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुल्मुकमाहि। शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्छितलये सकलकपि। जाम्बवान उपविष्ठ, एकअवलोक्यो यद्यपि॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि धीरज बूझतभयो। हनुमन्त विपुल बानरप्रवर, कहहु कुशल जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुपन प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये जगजोध। कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हिय हर्षित होय ९ ॥ बिभीषणउवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह। हनुमत मधि दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जाम्बवानुवाच ॥ जो जीवत दुर्वह वह, हतबल अहतप्रमान। अरुण होय हनुमान तो, जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत बिभीषण, तूरण पहुँचे तत्र। पृष्ठभाग थित मरुतसुत, बिलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेबिभीषण जाम्बवान्संवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः ॥ ३९ ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लङ्केश नृप, अति तीक्षण दुखपीर। क्षण क्षण क्षण बिलखत अधिक, धरत न किहुँबिधि धीर १

श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहै। सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहैं गिरि कपि कटक खटक हिय हायहै। परहां। यहै बिभीषणबीर कहो कित जाय है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है। तदनन्तर तुम गहे अनुजकी गेल है ॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहे। अरिहां। किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहे ३ मोको प्रथम सुनाय फेर सोवत रहे। क्रम न तज्यो किहि ठौर सुमग जोवतरहे ॥ अबै स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये। अरिहां। हम इत अगलीगह चित्त चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टप जाय है

कविरुवाच । मनोहरछन्द । हाहाकार होय ग्यो त्रिभुवन मध्य महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है । सुन्यो है सुपर्ण शोर जाको विभु भौनबीच, कोपानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है॥ पक्षन पवन वृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि न-सायो है । स्वामिहि जिवायो सुधा बारि बरसायो सद्य, विनताको जायो बेग धामधाय आयो है १॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते, भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन ताप तनुत्रस्त २॥ पद्धरछन्द ॥ विरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । बिलपत मुख हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ भो प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रवचन सुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश गिरिनिकुम्भिल, बटमूला बट्थित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन निरख्यो मायासिय । उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूर्च्छालिय॥ रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम, स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो श्रवणन धरिलीजिये ४ बिकच नलिनि निर्युक्त, मञ्जु मलयज रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौ-मित्री पुनि पठत, कछू निश्चय न निहारयो । जामदग्नि मुनि शाप, सुभपन प्रकट प्रचारयो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप स-कल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख । इमि करिकै आलाप कछु, बिलपत लषण बिशेख ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ।

कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहे अपर अक्षि प्रक्षेप

विरह पति स्वान्तहै॥ अस्त समय रवि पेखि चक्रई गति असमई। परहां । रुद्र करुण रस युगलरूप चल कनिकई ७॥ षट्पदछन्द॥ तत्र निकुम्भिल आदि, मूल निग्रोध अवट में। अति सत्वर घननाद, विभीतक समिध सुथटमें॥ अर्द्धचन्द्र आकार, कुण्ड निजपल आहुति दिय। शत्रुजय रथ अर्द्ध, कढ्यो लखि भो हरषित हिय॥ हनुमन्त तूर्ण तितजायकै, असुर यज्ञ भञ्जन कियो। भो सुधा मनोरथ दुष्टको, सिद्ध काज कछु ना लियो ८ रण प्राङ्गण मधि अस्र, लगायो लक्ष स्वच्छमन। शान्तितें लिय दशरत्थ, नृपति तें लियो लक्षमन॥ स्मरण कियो संहार, अस्त्र सानन्द बचन कह। रे रे माया रथारूढ़ सुन मेघनाद यह॥ करि छिन्नभिन्न माया विपुल, तोहिं पठैहौं शमनपुर। है सावधान संगर सजउ, असुर हूजिये गाढ़उर ६ दोस्तम्भन आस्फाल, केलि कुट विकट ध्यानकरि। ध्वस्त महातम घोर, प्रबल संहार अस्त्र करि॥ धनु संयोजन केलि, पानि आहत पुहुमीतल। धीर वीर क्रोधान्ध, उदगिरत अनल दृगञ्चल॥ सौमित्रि छेदि घननाद, शिर हीरक मण्डित मुकुटयुत। लङ्केश पाणिपुट युगल मधि, अर्पण कीन्हो आपउत॥ १०॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीबूलहासिंहजीविज्ञापितकवि-
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेइन्द्रजित-
बधोनामाष्टाविंशोल्लासः॥ २८॥

अत्र श्रीहनुमन्नाटकेद्वादशोऽङ्कः। षट्पदछन्द॥ सुत निज निधन निहार, निशाचरनाथ कुपित अति। अरुण बरण दशवदन, वदनदश नयन विरातति॥ एक वीरघातिनी, शक्ति प्रक्षेप कियो है। ललित लक्ष्मण वच्छ, स्वच्छ लखि लच्छ लियो है॥ हनुमन्त गाहि लई वै चमें, जलनिधि मधि क्षेपनकरी र बण सकोह है सद्य तब, बध

चले समर महि कोशाजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुल्कगाहि ॥ शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्छितभये सकलकपि। जाम्बवान उप-विष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि ॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि धीरज बूझतभयो। हनुमन्त विपुल बानरप्रवर, कहहु कुशल जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुमन प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये जगजोय। कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हिय हर्षित होय ९ ॥ विभीषणउवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह। हनुमत माधि दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जाम्बवानुवाच ॥ जो जीवत दुर्धर्ष वह, हतबल अहतप्रमान। अहत होय हनुमान तो, जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत विभीषण, तूरण पहुँचे तत्र। पृष्ठभाग थित मरुतसुत, विलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेविभीषण जाम्बवानसंवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः ॥ ३९ ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लक्ष्मण नृप, अति तीक्षण दुखपीर। क्षण क्षण क्षण विलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १ श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहैं। सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहैं गिरि कपि कण्टक खटक हिय हायहै। परहाँ। यहै विभीषणवीर कहो कित जाय है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है। तदनन्तर तुम गहे अनुजकी गैल है ॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहे। अरिहां। किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहे ३ मोको प्रथम सुवाय फेर सोवत रहे। क्रम न तज्यो किहि ठौर सुभग जोवतरहे ॥ अबै स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये। अरिहां। हम इत अगलीगह चित्त चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टप जाय है

इतै बिनाशि है राम भयो असहाय है॥ तुम्हरी गति बिपरीत पेखि सन्ताप है। परहां। प्रकट कियो सापत्न भाव किमि आप है ५ तारु सुरन करि सबै लखै रोवन लगे। रामचन्द्र मुखचन्द्र सकल जोवन लगे॥ भये बिपुल बेहाल कछू नाहिं अटक है। परहां। छाय रह्यो कपि कटक करुण रस कटक है ६॥ पट्पदछन्द॥ पुनि पुनि रोवत राम, कहत हा वच्छ लच्छमन। सेवन कियो सदैव, अहर्निश मोर स्वच्छमन॥ पवनपुत्र धिक्कार, तोहिं तजि भयो पराङ्मुख। तेहि ते संगरमध्य, आपभो अति दारुण दुख॥ मम अनुजभ्रात उद्धरत धनुप, इहिरण होतो जो भरत। तो शक्तिपात घनघाततें, सौमित्री कबहुँन मरत ७॥ दोहाछन्द॥ मुधा जुधारण शस्त्रभर, यौवन वृथा हमार। तजन चहत सबिशिख धनुप, हिय निर्बेद निहार ८॥ कविरुवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ निज अपराध निहारि त्रपा करुणा छये। साम्यसूय भुज भरत सबल सुनिके भये॥ कियो गारुड़स्थान हुमसि हनुमन्त है। परहां। पुरोभाग थितहोय बचन उचरन्त है९॥ हनुमानुवाच॥ पट्पदछन्द॥ सात अम्बुनिधि दिशा, दशौं गिरिगोत्र समन्वित। भुवन चतुर्दश पृथिवि, आदि नभमण्डल इकइत॥ एतावत परिमाण, मात्र ब्रह्माण्ड कटक है। इनमें तो कितजाय, निशाचर नीच अटक है॥ बिभु बिनय करत करजोरि युग, अधिक बदत अनुचर लजत। जित जाय तितै तकि मारि है, आप कहा कार्मुक तजत १०॥ कविरुवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ बचन प्रभञ्जन सुनत सुनत रघुबीर है। गद्गद गिरा गम्भीर महारणधीर है॥ श्रीराम उवाच॥ मारुति कथन यथार्थ, यदपि सब तथ्य है। परहां। यातुधान जागर्त्ति मोहिं उन्मथ्य है ११॥ कविरुवाच॥ मारुति कह यह बात, सदा स्मरणीयहै। नाहिं नीच नर नेह, कदा करणीयहै॥ दुष्ट

करत दुखृत, साधु ह्वै नद्ध है परहां हरी दशानन सीय, वारि निधि बद्ध है ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविदीक्षा-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरावेजासेश्रीरामसमीरसूनु-
संवादोनामचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४० ॥

श्रीहनुमानुवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ पाय कळू प्रारब्ध, योग जग माधि दुर्जन इत । हरत महज्जन मान, कथंचित क्वचित कदाचित ॥ पै उनके अनुज नित, गुण न धावत पामर नाहिं । पावहि किमि अधिकत्व, विलोकहु विपुल सकलमाहिं ॥ स्वर्भानु रश्मि शशि भानु की, समय पाय यद्यपि गहत । ब्रह्माण्ड खण्ड मण्डल विषे, नहिं ग्रहेश कोऊ कहत १ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ रावण किय उन्मथित रावरो मान है । दैवयोग जड़ तऊ होय किसमान है ॥ विनय करत करजोरि सुवारम्बारहै । परहां । धीरज धरिवो सार सकल संसारहै २ ॥ कविरुवाच ॥ राम कहत पुनि वचन समीरनसुत रहौ । कालान्तरगत सिया कहा कारज कहौ ॥ बन्धु करत उपभोग नाहिं सुख लेतहै । परहां । अरु अरिगण आतङ्क दुसह नहिं देतहै ३ च-ञ्चल लक्षण बञ्छ बञ्छथल मिन्न है । कृतमातिज्ञ हनुमन्त सविस्मय खिन्न है ॥ सुनहु नाथ पणमोर सुरीति सदैव है । हरिहां । अय-महोयमराजरुदेव अदेव है ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ करि प्रवेश पाताल, सुधारस सत्वर लाऊं । अथवा चन्द्रनिचोय, मधुर पीयूष पिवाऊं ॥ चन्द्र किरण उद्दण्ड, अखिल ब्रह्माण्ड निवारों । करि चूरणकी नाश, पाश शासन यम टारों ॥ जो होय हुकमसोई करौं, कीजे नाहिं बिलम्ब अब । रघुराज रावरी मेहरते, मोको है आसान सब ५ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि समीरसुत बचन, राम शोचन लागे उर । रुदत बदन महवीर, तथा तैसे करिहै तुर ॥ महामलय है जाय, अनवसर

इमि करिवेते इमि उर अन्दर शोधि, वचन उचरत हरवेते । स्वा-वहु सुखेन अभिधा भिषक, असुर ईश अनुचर यदपि करिहै न कपट है वैद्य वह, लखिहि चिकित्सावर तदपि ६॥ कविरुवाच ॥ कहि तथास्तु हनुमान, लङ्कपुर जाय त्वरित है । पट्ठ परियङ्क समेत, भिषक भल्लयाय अतित है ॥ सुप्तोत्थित लखि भिषक, राम सकरुण वचबोले । कहहु तरुण उपचार वैद्य, सुनि हिय निज लोले ॥ जीवि है भ्रात रघुराज तव, यह उपाय करिये अचिर । बल्ली विशल्लिवर द्रोणगिरि, चन्द्ररश्मि रजनी रुचिर ७॥ कविरुवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ राम बुलाये दूत बेगको आयहै । अपनो अपनो वेग वदहु मनलाय है ॥ सुनि रघुबर वरहुकम हुमासि बोले तबै । हरिहां । निज निज बल अनुरूप अवधि उचरत सबै ८ जावत आवत नलकहँ लगत त्रिरात्र है । तथा मैंद अरु द्विविद कपिन्द द्विरात्रहै ॥ एकरात्र सुग्रीव नील किय कौल है । परहां । यामचार युवराज वदत करि तौल है ९ ॥ कविरुवाच ॥ समय आर्त्त श्रीराम सुनत कपि बैन हैं । संकोचित मुख जलज सजल युगनैन हैं ॥ संगर संकट बिकट बीच भाशङ्क है । हरिहां । लखत रुद्र अवतार सुवदन मयङ्कहै १० सत्वर सकरुण गहो, गारुड़स्थानहै । युग अञ्जलि पुटजोरि वदत हनुमान है ॥ क्षणक धारिये धीर सकल भल होनहै । अरिहां । आवत हौं पहुंचाय भिषकवर मौन है ११ इमिकहि तिहि पहुँचाय तितै इत भाप है । आञ्जनेय उचरत बिमल बच आप है ॥ प्रभु हितकारक भवुर प्लवङ्गम पूरहै । हरिहां । दीजे आयसु अद्य अद्रि-मग दूर है ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावलजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेवानरवृन्द वेगवर्णनंनामैकचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४१ ॥

श्रीहनुमानुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ साठलाख योजन तो जावन जहा, पै वेग, साठलाख योजन को आवन जरूर है। मारुति बदूत नाथ शत्रर प्रताप पुञ्ज, उचरत ऐसे नाहिं मनमगरूर है ॥ अग्नितप्ततैल थित सरसों अनाज बीच, आवो उत जायके विशल्य बलिमूर है। कौन मगदूर द्रोण गौन मगदूर नहीं, पौन मगदूर पौनपुत्र मगदूर है १ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनत मरुतसुत बैन, हिय हर्षित रघुवर भये ॥ अवध कुशलपन लैन, अपर अमल आयसु दई २ करि बन्दन रघुनन्द, कियो चन्द उद्दीत कपि ॥ दुहिता अद्रि सानन्द, अञ्जनिनन्दन गवन कृत ३ ॥ कविरुवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ अब सुनिये वृत्तान्त, अवधपुर वार्त्ता तितको। भयो सुमित्रा स्वप्न, वाम भुज भुजग ग्रसितको ॥ कौशल्या प्रति कह्यो, तुरत उठि उहि वशिष्ठ मुनि। शांति करावत भरत, स्वपन भयप्रद श्रवणनि सुनि ॥ सब सामग्री मँगवाय शुचि, थल इकन्त कीन्हो गमन। ढिग सशर शरासन धारिधुर, आज्य आहुति कृतहवन ४ ॥ कविरुवाच ॥ जबै द्रोणगिरि गये, मरुतसुत तित अतिशयद्युत। प्रभा सुधाकर सदृश, बलिमाधि सब निहारउत ॥ निश्चय नाहिं ह्वै सकत, प्रमण चहुँघावहु लीन्हो। तब गिरिवर लेजान, मनोरथ मनमें कीन्हो ॥ जब उठ्यो न अद्री आपते, तबै तात सुमिरन्तयो। पढ़ु पितापुत्र युग जोरकरि, धराचरन धारत भयो ५ ॥ कविरुवाच ॥ इतै अवधपुर बीच, भरत अरु मुनि वशिष्ठ हैं। शान्ती मण्डप कुण्ड, निकट विलसत वशिष्ठ हैं ॥ हवन करत श्रीखण्ड, कारउ सतगर कुसुमा- दिक। जलजनाल कर्पूर, उशीराज्य मधुरादिक ॥ कृत नारिकेल पुण्याहुति, एते पै अवलोकिनभ। द्रुत आञ्जनेय आवत उतै, कर गिरिवर ज्वलदनलप्रभ ६ करनलगे सब तर्क, कहा यह इतमें

आवत ग्रसित सुमित्रा मात, वाम भुज बही लखावत अथवा मख संहार, कार यंग्रासुर आयो। इमि भ्रम करिकै भरत, तुरत शर तिनै चलायो॥ सो बाण भिन्न हनुमान जब, महाबीर धीरन धरत। हा राम लषण उच्चरत, प्रबलबली पुहुमीपरत ७॥ चन्द्रायणाछन्द॥ चिरंजीवी यह बीर, रहै क्षिति स्वच्छ है। विधि लिखिताक्षर पंक्ति, लोप परतच्छ है॥ चण्ड भरत दोर्दण्ड काण्ड निर्शंक है। परहां। भये मारुती महा मूरछायुक्त है ८ लाग्यो पट्ट ललाट भरत मस्थान है। गिरिलिय लांगुल अग्रबीर हनुमान है॥ संमूर्च्छित महिपरे बदत अभिराम है। परहां। हा रघुवर हा लषण गिरा गुणग्राम है ९ राम लषण वरनाम अमल आनन कहा। तित बशिष्ठ भरतादि भयो विस्मय महा॥ अति आतुर है अखिल तुरत गत तत्रहै। हरिहां। महद मूरछा सहित मारुती यत्र है १० गिरतभये तिहि चरण शल्य किय दूर है। गिरिजौषध करि मुनि बशिष्ठ क्षतपूर है॥ गई मूरछा सावधान हनुमन्त है। अरिहां। वितको वर वृत्तान्त स्वल्प वर्णन्त है ११॥ कविरुवाच॥ शक्तिभेद उर लक्ष भयो हो जा समै। राम बड़ाई भरतकरीही तासमै॥ वह करिकै इतयाद हीय हनुमन्तहै। अरिहां। साभ्यसूय करि रचन बचन उचरन्त है॥१२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकाधनाङ्कगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेहनुमद्भरतसमागमोनामद्विचत्वारिंशोल्लासः॥ ४२॥

श्रीहनुमानुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ चन्द्र चन्द्रिका चारु रहै रजनीय है। गिरि औषध गहि तुरत तत्र गमनीय है॥ हौं थकि गयो इहैव आप पहुँचाइये। परहां। ललित लक्ष्मण भ्रात जहां कुलजाइये १॥ कविरुवाच॥ सुनत समर संकष्ट राम अकलक्ष है। स्वच्छ वच्छ भल भरत प्रबल परतक्षहै भुजा ठोंकि टंकार शरासन शोरहै।

परहां लङ्का ओर निहार सुमुच्छ भरोगहे २ ॥ रूपछन्द ॥ तिहिं समर माधि राम, बिबिध बिलपत उच्चरत हे । मन्द मन्द उसिछ, गहहु धनु रिपु प्रचरत है ॥ सैन्य हनत तव अनुग, ताहि ननक न तुम जोवत । प्राप्त सीय रिपुजीति, तथा निर्भय किमि सोवत ॥ प्रति वचन देत नहिं भ्रातकस, प्रीति छिन्न नहिं कीजिये । केकयी मात प्रिय साहसे, होय कृतारथ रीजिये ३॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ इतै सुनत कपि वचन भरत साटोप हैं । अद्रिसहित गुन मरुत विशिख आरोप हैं ॥ कृत कुण्डलि कोदण्ड प्लवग विस्मितभयो । परहां । लगे करन वरतवन गर्व मनको गयो ४ उतरि विशिखते भरत भुजन पूजनकियो । कुशलखेय ततकाल सङ्कमारगलियो ॥ जिमि दरिद्र मन गमन दृशन्त दिगन्त हैं । परहां । पहुँचे अति अविलम्ब वीर हनुमन्त है ५ ॥ पद्धरछन्द ॥ अद्रिरुद्र अवतार, मलय रवि द्वादश समुदित । सदृश द्रोण दोर्दण्ड, धारि अम्बनिधि आगत तित ॥ दत्तदृष्टि दिगभाग, पूर्व सूर्योदय भ्रमवस । तीरतरल तरसिन्धु, तार सुरकिय रोदन तस ॥ पर्वत उद्योत रविउदय भ्रम, सरत्ररथित विकासित कमल । कपि लखत अमित लज्जित सवत, अक्षिन मग आंशू अमल ६ ॥ कविरुवाच ॥ तदनु निरखि दिगभाग, प्रभाकर उदय न पेख्यो । गिरि प्रकाश करि जलज, मुख्य विकसन्त बिशेख्यो ॥ भोरहोन भ्रम भग्यो, सूरिहिय भयो सहर्षित । गये वाहिनी बीच, राम सुग्रीव हुते जित ॥ पहुपुत्र प्रभञ्जन अञ्जनी, रम्य रुद्र अवतार है । गहि द्रोण अद्रि अविलम्ब उत, आनत करी न बारहै ७ ॥ कविरुवाच ॥ मारो माय महर्षि, कालनेमी रजनीचर । ग्राहीरूप उदग्र, कन्द काली मारीत्वर ॥ राक्षस बल संमर्दि, सर्व रावण पे रतिहारि इन्द्रपठ ये प्रवल, को रिगन्धर्व विजयकरि

मणिज्वाल जटित आदाय गिरि, झटिति उतै आवत भये। श्री-
हनुमान कपि कटकमधि,हिय सबही हर्षित भये ८ मैंद द्विविद कपि
प्रमुप, वनूचय रक्षाकारक। गय गवाक्ष नल नील, प्रबल अरिदल
संहारक॥सीतातङ्क महान्धकार हारक परभाकर। पवनपुत्र संग्राम,
हरीहर उत्सव आकर॥ कपि कटक सुभट संघटन में, यहै गल्लगो-
पाल है। इतद्रिशातु विराद्वर लक्ष्मी, लक्ष वक्षथल हाल है ९॥
श्रीरामउवाच। दोहाछन्द॥ एकहि इहि उपकार पर, प्राण समर्पित
तोहिं। अपर अखिल उपकृतिनको, मानहु ऋणियां मोहिं १० तुम
उपकृत आपत्ति वह, जीरन ममतनु होहिं। पुनि प्रत्युपकारार्थ हित,
ह्वै न आपदा तोहिं ११॥ षट्पदछन्द॥ हनुमत कृत आलेप, अद्रि
औषध करितूरण। धरणि धरन आतमा, मूर्च्छात्यज संपूरण॥
तरणि राम अरविन्द, लङ्कपति कुपित कालसम। आददान धनुष
शर, क्रोधकरि भये अरुणतम॥ प्रोत्फुल्लखदिर अङ्गारचय, टण-
त्कार कोदण्ड किय। मुखमारमार उचरन्त उत, लक्षउठे प्रोच्छाह
हिय १२॥ चन्द्रायणछन्द॥ सहरष सपुलक साश्रुभये श्रीराम हैं।
लक्ष्मण हृदय लगाय गहे गुणधाम हैं॥ हावच्छल हावच्छ वच्छ-
थल अङ्क है। परहां। तव परिश्रम परिहार हेतु पर्यङ्क है १३
शक्ति भेद खलु खेदभयो तव पूर है। शयन थान मम हृदय महा
मुदमूर है॥ मेघनाद कुलकमल वर्ष प्रालेय है। परहां। प्रबलभई
वेदना न आनन गेय है १४॥ कविरुवाच॥ कह लक्ष्मण करजोरि
कछुक मम खेद है। सम्पूरण श्रीराम वेदना भेद है॥ प्रभुउर पीड़ापरम
प्रतक्ष प्रचार है। परहां। किंकर केवल कथन मात्र क्षतधार है॥१५॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपाजरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविशापिलकावि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीकपविलासेश्रीलक्ष्मणो-

अथ श्रीहनुमन्नाटकलक्ष्मणशक्तिभेदोनामत्रयोदशोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ।

प्रात भये लङ्केश, बुलायो लोहितलोचन । कहहु राम प्रति जाय, करत तब मैथिलि मोचन ॥ जामदग्नि निर्जित्य, परशु प्रमथाधिप लीन्हो । वहई तुम्हरे निकट, चहै रावणको दीन्हो ॥ कहि तथास्तु लोहितनयन, तूरण नभ मारग लियो । इत शिबिरबीच किय आगमन, रघुनन्दन बन्दन कियो १ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ रावण दूत निहार, रघुबर बतरावन लगे । तित अधिराज तिहार, कहा करत लोहित नयन २ ॥ लोहिताक्षउवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ लङ्क निशङ्क जराय गयो अविलम्बहै । लंघन कीन समुद्र प्रतक्ष प्रलम्बहै ॥ औषध आन विशल्य जिवायो लक्ष है । हरिहां । मारुति ऊपर पीसत दन्त तनक्षहै ३ ॥ कविरुवाच । बरवैछन्द ॥ सुनि बिहँसत श्रीरघुपति बोलत बैन । किहि कारण आगत इत लोहितनैन ॥ कर युगजोरि कहत तब लोहितअक्ष । देशदेश लङ्कापति पठव प्रतक्ष ४ हरप्रसाद परशा तुम भृगुपति जीत । वह रावण को दीजै राखि सुरीत ॥ करहिं समर्पण रावण रावरसीय । सब बिरोध मिटिजैहै निरसङ्कहीय ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ बिहँसि बचन कहराम, दूत देखहु रत लोचन । पेखि प्रणय पौलस्त्य, सुमिरितब मति मोदत मन ॥ हरप्रसाद यह परशु, तदपि नहिं देनयोग है । दिये गलानी गहहिं, लङ्कपति लखहिं लोगहै ॥ सब दई बसुंधर द्विजनको, असुर रसातल लीजिये । निर्जित्य निशाचर लेय क्षिति, किमि बलासिद को दीजिये ६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूत दशानन असुरपति, मम बचनन इमि वाच्य । हरप्रसाद बर परशु यह, लङ्काधीश अयाच्य ७ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ येते अन्तर बीच, पुरन्दर पट्ठ पठवायो । शत्रुञ्जय रथ प्रवर, मातुली सारथि लायो रघुबरहू हनुमन्त, ध्वजाग्रारोपण दीन्हो अरि

उत्साह समेत, आप आरोहण कीन्हो॥ तब लोहिताक्ष निष्क्रान्त तित, लङ्काधिप सन्निधि गयो। निज शिर नवाय कर जोरियुग, सब वृत्तान्त वर्णत भयो॥ ८॥

इति श्रीविपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रलोहिताक्ष
रावणदूतसंवादोनामचतुश्चत्वारिंशोल्लासः॥ ४४॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ कह लङ्काशिखरस्थ लङ्कपुर कन्तहै। ध्वजपर सुतदशरत्थ कौन बिलसन्तहै॥ यह सुनि लोहितअक्ष बचन उच्चरन्तहै। परहां प्रबल पराक्रमपुञ्ज बीर हनुमन्त है१॥ षट्पद छन्द। लोहिताक्षउवाच॥ हेलोल्लंघित सिन्धुग्रस्त, अंशुन मण्डलधर। सियवियोग सहराम, दैत्य उद्घाटन पटुतर॥ निशिचर नायक नगर, निखिल निरदग्ध अचलचित। संजीवित सौमित्रि, औषधी अद्रि आनि इत॥ उपमा अनन्त हनुमन्त यह, जिहि मग अवर न अनुसरत। अतिप्रबल प्रभञ्जन पुत्र वर, रघुबरध्वज गर्जन करत २॥ कविरुवाच॥ मन्दिर मन्दोदरी, गयो रावण अति तूरण। बूझन लग्यो विचार, चारु मति नयसंपूरण॥ विनिहत राघव विशिख, त्रिदिवपुर करौं मैं। अथवा सीय समर्पि, राम संकष्ट हरौं मैं॥ मम मात्ररह्यो अवशिष्ट बल, कौन पक्ष है तोर प्रिय। सो सपदि सुनावहु स्वामिनी, धारण करिहौं हर्षि हिय ३॥ दोहाछन्द॥ बिहँसि वदत मन्दोदरी, पहिले सुनी न एक। प्राणनाथ लङ्कापती, अब किमि भयो विवेक ४॥ मन्दोदरिउवाच। षट्पदछन्द॥ दैत्यभगिनिको देखि, खरादिक निधन श्रवण सुनि। मातुल लख्यो विनाश, ताल भेदन श्रुतिगत पुनि॥ कपिवर बालीदहन, बद्ध सुग्रीव सख्यसुत। जलधि तरन उद्यान, भङ्ग बध विदित अक्षसुत॥ धर पत्र पौत्र परिवार जन, नष्ट भये कुलके सबै कृतसेतु विनि-

गैत नीरसम, उर विवेक आयो अवै ५ ॥ रावणउवाच । मनोहरछन्द । धिक धिक इन्द्रजीत जाग्यो कुम्भकर्ण वृथा, स्वर्ग ग्राम लुण्ठन वि-त्रच्छ भुजवीशहै । लाखन धिकार मोहिं मेरे सुनि शत्रुहोय, तामें तुच्छ तापस सहाय संग कीशहै ॥ सोहू अत्र आयकै प्रहारै कुल राक्सको, जीवतहै रावण निहारै नैन बीशहै । एक अङ्क शीशनार पीसडारे यातुधान, बीसौविसा अधिक धिकार दश शीश है ६ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ सकरुण मन्दोदरी कहत लङ्केश हैं । नहिं पावहु कछु शोक स्वभान सलेशहै ॥ त्रिया तदपि अनियाहु-कमहुम दीजिये । परहां । समर मध्य ममनाथ हाथ लखि लीजिये७ रावण वदत विदीर्यमाणिनु निज हीय है । तरुणाय करुणानाहिं किंचदपि तीय है ॥ प्राणरक्ष नहिं पीय तोर जिय होत है । परहां । तज लङ्का निश्शङ्क समर उद्योत है ८ ॥ कविरुवाच । पद्धरछन्द ॥ गहि आयसु श्रीराम, सकल कपि भट निकसे हैं । लङ्का उत्तर मार्ग, रुन्धि अति उर विकसे हैं ॥ उत्तुंगलत्लुत्य, करत हदगढ़ आरोहन । शैल शिखर करधारि, छटा छाहत अति सोहन ॥ दिगपाल कुलाहल वहलमद,उग्र अवग्रह तारवल । देदीप्यमान दिशि विदिश,दिशि दशग्रीव उदग्रीव लख ६ ॥ कविरुवाच ॥ रावण रामनियुद्ध, निहारत रुद्र निरन्तर । संवेष्टित कपिकटक, लङ्क अवलोकि दिगन्तर ॥ उच-रत मरुदादित्य, शम्भु शतमख मुख सुस्वर । अनुसर्पत अनुदिवस, समय जिहिंपुर दुवारपर ॥ वह समाक्रान्त वानर भटनि, दशग्रीव नगरी रुचिर । अति लखहु कालमहिमा प्रबल, उर आनत अच-रज अचिर ॥ १० ॥

इति श्रीपिथलोद्भवत्ताथि राजरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-रामाकृष्णगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रवानर कटकग्रहाक्रमणोनामपञ्चचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४५ ॥

कवित्वाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ प्लवगाधिप सुग्रीवमुक्त बहुवृक्ष है । सपदि पाय संघट्ट लङ्कपति वक्ष है ॥ प्रकटत पावकपुञ्ज भूमिरुह दहतहै । परहां । दिपत दवानल सदृश समरमधि महत है १ रावण निजगिरि शिखर उखारि प्रचार है । पिष्टपानि चयपरस कुण्डजल धार है ॥ निर्भर पयजनु होत, पिण्ड जम्बाल है । परहां । लगत हृदय सुग्रीव सुमन मनु माल है २ उतपाटित कैलासभये भवतुष्ट है । इहि उतपाटन किये तथा सन्तुष्ट है ॥ रणमधि रक्षा करहिं देव करिकै दया । परहां । इहि कारण लङ्केश शिखरगिरि करलिया ३॥ षट्पदछन्द ॥ रावण होय सक्रोध, रथारोहण किलकीनो । भेरी मर्दल शेष, ताल निकरस्वनभीनो ॥ काहलखनिस्सान, श्रवान परिपूर्ण कर्णकिय । दशकन्धर युद्धार्थ, नगर निकसत बिकसतहिय ॥ माणिक्य मौलि मञ्जुल महा, यशोदीप दीपित दशत । बिधि कर्म वश्यजु अवश्य उत, लङ्कपाल अति उल्लसत ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ परिमिति पवन प्रचार मन्द रवितापहै । निकस्यो जब मग गगन निशाचर आप है ॥ प्रणमत सब सुरसंघ नम्रहुइ अङ्ग है । परहां । थगित सरित गति भङ्ग उतङ्ग तरङ्ग है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ जब लङ्का भट सुभट, शरासन शिखर नील थित । क्रोध आशुगिरि प्रस्रव, सहित पर्वतकर बिलसित ॥ मृगतृष्णा जलयुक्त, अचल अविलोकि चकित चित । दिग मण्डल जुपदेव, सुमति उत्प्रेक्ष करत तित ॥ बहु वृन्द वृन्द वृन्दारका, बाणी बिपुल वदन्त है । धनुशृङ्ग भृङ्ग तदुपरिगिरी, तत्र जलधि बिलसन्त है ६ राम मध्य साश्चर्य, सपदु भट मुख अवलोकत । व्यथा सहित सुर तौर्य, शान्तरस तत्र बिलोकत रघुवर युधि साशङ्क, कपिन मधि स बिनय सरसत

सामूयहुव, आत्मकृन्य सन्नप लखत दशयक बक्र चयचक्र सब: भिन्न भिन्न भावन रखत ७ दृढ़ बांधे दशतूर्ण, शक्रहय सटाकेश करि। धुनत वाम दोर्दण्ड, धनुप दश विपुल वेगधरि ॥ दक्षिण भुज दश विशिख, सुतीक्षण आददानहै। छोड़त क्रीड़ा करत प्रकुप्यत यातुधान है ॥ अभिभवत भूरि प्रसरत अमित, गर्जत तर्जत ओघअति। खिद्यन्त निरन्तर मदन श्रीः रणप्राङ्गण मधि अवतरति ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ समराङ्गण श्रीराम निशाचर कन्त है। तरुण कुण्डली भिन्न वपुष अगिनन्त है ॥ करीकुम्भ संलग्न लखति बिलसन्त है। पवै हेकामिनि कुचयुग परस यथा सोवन्त है ९ ॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द ॥ गगन गगन परमान, सागरसम सागर लसत। रावण राम समान, संगर रावण रामको १० ॥ षट्पदछन्द ॥ सारनाम क्रव्याद, बीर हयचढ़ि उत आवत। अरवमध्य हुव खण्ड, चढ्यो पूर्वार्द्ध सिधावत ॥ पश्चिमार्द्ध युवराज, तुरङ्गम गह्यो क्रोध कर। कीनो प्रबल प्रहार, असुर शिर ऊपर सत्वर ॥ निज शिबिर बीच पहुँच्यो न वह, अङ्गद ताड़ित महि पर्यो। शिव शिव शिव अति संकट विकट, चमू निशाचर उच्चर्यो ॥ ११ ॥

इति श्रीगिपलोद्पत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका- रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे साराह्वतमिचर- वधोनामषट्चत्वारिंशोल्लासः ॥ ४६ ॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ निशिचर महद शरीर, अल्प वपुवानर बिलसत। किहि प्रकार है बिजय, राम संशय हिय हुलसत ॥ कहै अङ्गद करजोरि, कलश शिशु पियो अम्बुनिधि। अद्री परम उतङ्ग, पुरन्दर पक्षछिद जिहिबिधि ॥ अति प्रथुल वपुप किहि काजके, कोऽपपकुल असमर्थ उत। निजनाम धेय प्रभुराम इत, लसत सकल सामर्थ्ययुत १ कविरुवाच र वण रखचर निरखि, बचन उचरत हैं

ऐसे। ताटक नतु तियमात्र, रामशुचि द्विजहौ तैसे॥ भीति भवन मारीच, हिरनवालीहौ वानर। वृथा विकत्थन करत, काहि काकुत्थ अधिकतर॥ कहु कौन वीर वर विजय किय, रखत गर्व दोर्दण्डकर। कोदण्ड अबै आरोपिये, तारमोर हूहै समर २॥ कविरुवाच॥ अङ्गद उत्तर देत, अरे सुन निशिचर नायक। वन्द्य महज्जन चरित, कछू नहिं संशय लायक॥ सुन्दर तिया किय दमन, तौन दरशात कुण्ठितयस। अरु जिहिबिधिहो बालि, ताहि तुम जानत जियजस॥ पुनि सुनिबो चाहत औरहू, विदित वीर जय बिमलगिर। खरखण्डन दूषण दलन किय, त्रिशिर कियो रण भिन्न शिर ३॥ कविरुवाच॥ सुनि अङ्गद के बैन, वचन रावण पुनि उच्चरत। रे रे मानव राम, समर लङ्कापति प्रचरत॥ शङ्करगिरि कैलास, किया कन्दुक क्रीड़ाइव। मानव निशि दिन दर्प, जासु देवेश्वरहू दिव॥ असुरान्तत सुन्द सुन्दरिकदन, शाखामृगपति अन्त कृत। जाघोस करहु धिय धीरधरि, दोर्दण्ड कोदण्ड धृत ४॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ तदपि न रावण हनत सदपि श्रीराम है। आनन अम्बुज नम्र कियो अभिराम है॥ जब किंचित थित लज्ज सहित सियकन्त है। परहाँ। विहँसि तबै लङ्केश बचन उच्चरन्त है ५॥ रावणउवाच॥ तव पूर्वज अनरण्य हुतो बरजोरहै। कीन्हो ममकर कदन जंगमधि घोरहै॥ तिहि सुमिरण करि व्यथित परम सन्ताप है। परहां। जिहिते लज्जावन्त होत अति आप है ६॥ श्रीरामउवाच। पद्धरीछन्द॥ कहत राम निरशङ्क, निशाचर नीच निहारहु। कहा लज्ज अनरण्य, भूप निज जिय निरधारहु॥ जय अथवा है मरन, शूरवीरन को रनमें। तिहिको हरषरु शोक, तनक लावत नहिं मनमें बन्धनागार अ-

मुनि पुलस्त्य भिक्षुकभये ७ चन्द्रायणाछन्द ममभुज भृगुपति बिजित जासु बध कौन है। तिहि हैहय के हाथ बन्ध तुम कीन है॥ सङ्कट कारागार सहे अगिनन्त है। परहां। तन सन्मुख धरि शस्त्र सुलज्जावन्त है ८॥ कविरुवाच॥ रावणहिया वसन्त सुसन्तत सीय है। मोर निरन्तर ध्यान जानकी जीय है॥ मम उर निवसत सकल सृष्टि संघात है। परहां। हनत न शरहिय असुर डरत जग घात है ९॥ षट्पदछन्द॥ रावण रोष निहारि, बिहित अहंकार आपउर। द्रुतदृढ़ संगर यद्ध, दिश विभु सज्ज भये तुर॥ शरणागत भयहरण, निरदबर विलसत अविरत। छायो बिपुल उछाह, प्राण तृण तुलित विशेषत॥ रघुबंश राज महाराज सुर, अवध नगर अधिराज है। बधकरन काज असुरेश को, रणमधि बिबिध बिराज है १०॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ प्रिया बिरह अर्दितप्रभु, लहत नाहिं रति तत्र। सत्यरम्यरमनीयता, थिरमन बिलसत यत्र ११॥ कविरुवाच। मनोहरछन्द॥ बाण इहि ताटकाके शोणित सनान कियो, भगिनी के कानन प्राण प्राणायाम कीन्हो है। दूषण त्रिशिरखर आहुति अशेशदई, हिरनमारीच बलिदान बेग दीन्हो है॥ आचमन आन्योहै अनन्त अम्बु अम्बुनिधि, भोजनावकाश अबै चारु चितचीन्हो है। मार्गण क्षुधित मोर मार्गन करत तोर, आमिष असुर लङ्कनाथ चहै लीन्हो है १२॥ दोहाछन्द॥ जितचाहत जो संधितौ, सीय समर्पहु सद्य। नातर ममनाराच तव, आमिष भखिहैं अद्य॥ १३॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाह्वजगोविन्दरामविरचिते श्रीअरघिलासेश्रीरामचन्द्र रावणसंवादोनामसप्तचत्वारिंशोल्लासः॥ ४७॥

——— । चन्द्रायणाछन्द । तउरावण सावज्ञ बचन उचरन्तहै।

प्रकट प्राण परित्राण हेतु वर्णन्तहै मूर्खनको मूकत्व सभा मधिहै

यथा । परहां । क्लीवन को रणबीच संधि बच है तथा १ ॥पट्पदछन्द॥ इमिकहि गगन बिलोकि, दशानन बदत वचन है । रे रे काल अकाल, लब्धतव बिसत्र रचन है॥ हूजै स्वैरसकाम, शम्भु भूषय तू तन तव । शिरोमाल्य निज अङ्ग, भूरि भूपित भ्राजहु भव ॥ रचिये विरञ्चि सृष्टि अपर, लङ्केश्वर कटिबद्ध है । करवाल गही भीषन भुजन, युद्धकाज सन्नद्ध है २ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ पुनि करि रामाक्षेप सुनावत बोल है । मन्दिर माधि मैथिली अलाप अमोल है ॥ रण दारुण मधि होय पलायन प्रान है । परहां । मधुर अधर मम गिद्ध करहिंगे पान है ३ ॥ कविरुवाच ॥ त्रिजटा शरमा दोय बिमान बिठायकै । बैदेही लेगई चतुर चितचायकै ॥ रघुवर रावण युद्ध बतावत सीयको । हरिहां । निमिनृपनन्दिनि नीक निहारत पीयको ४ चढ़ि लङ्काचल शिखर उच्च मन्दोदरी । निरखत सङ्गर शोभ निशाचर सुन्दरी ॥ एकचरणथितभये अगाध समुद्र है । परहां । शोभा समिति समग्र निहारत रुद्र है ५ बरविमान आरूढ़ बिबुध बहुवृन्दहै । अवलोकत संग्राम सकलसानन्द है ॥ कालरुद्र सम रामकियो अतिकोप है । परहां । जनु भैरव संहार सुअद्भुत ओप है ६ ॥ श्रीरामउवाच । पट्पदछन्द ॥ रे निशिचरपति नीच, करत अब तेरो चूरन।बाणासन शिर त्रिदश, दर्पहर गाहिये तूरन ॥ बेग बुझावत मोर, प्रिया बिरहागि बिलोकत । मन्दोदरि युगनयन, नीर करि तव अवलोकत ॥ जो करनहोय करिलेहु सो, मनकी मन रह-जायगी । लङ्केश रिंदगी जिंदगी, एकहि सङ्ग नशायगी ७ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ इमि काहिकै श्रीराम लिये कर बान है । सो लखि मन्दोदरी लगी घबरान है॥ म॰ हुते बालतर

रूप तबै ताटकहती। परहां। अरै तरुणतम लखत कितक मेरे पती ८॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ आकर्षण किय धनुष, जबै रणमाधि श्रीरघुवर। तबै वामसुत वदत, अहो सुनिये दशियकर॥ दानदेन अरु लेन, मिलै मनभावन भोजन। अरुहोत उहिंठौर, अरै कृत पृष्ठ नियोजन॥ तब दाहन कह मोको न भय, बूझत निजस्वामी श्रवन। दशवदन वदनसब सहकदन, किमि इक इक करुणाश्रवन ९॥ कविरुवाच॥ दृष्टमन्त्र दिव्यास्त्र कुशिक, सुत शुचि सेवनकर। योद्धा भृगुपति वीर, भुजगपति भोग दिभुजवर॥ विभु दिनकर कुलकेतु, कृतक उत्तान हगञ्चल। बहुमत रिपुकुल कर्म, कौतुकी राम अ-चंचल॥ जो कर्मत्रय कर कारिकरत, रावण रणमधि अचलचित। सो कर्म दोष दोर्दण्ड हुत, दाशरथी दरशात तित १० राघव करी प्रतिज्ञ, समरमुर्द्धनि ऐसी उत। रे रावण तव सहित, होयगो अर्क अस्तहुत॥ अस्तअचल अनलम्बि, भयो आदित्य समय जिहि। मन्दोदरी चकोर, बधू समहुइ औसर तिहि॥ जानकी चितचकई सदृश, समय भङ्गभयजानि जिय। अरुनिशाबीच निशिचरनको, प्रबल होत बल हेरि हिय॥ ११॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतामन्दोदरी वचनवर्णननामाष्टचत्वारिंशोल्लासः॥ ४८॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ कहत राम लङ्केश, तोर शिर बहुत वि-लोकत। भिरत महामुद माथ, एकनव इक अवलोकत॥ विनि-पातित इकमाथ, कोप उपशान्ति कहौ किमि। निरखत नाहिं निज निधन, भिन्न वाञ्छिन्न होत जिमि॥ निज छिन्न छिन्न मस्तक नि-रखि, बिलखत दुर्नय निखिल फल। जग एकमत्य के राघुते, दश मस्थनको शत्रुमत १ छन्द इकशिर लखि उच्छिन्न अप

इमि बदत है माखिभी माखिषि गिरा मुख गदत है ॥ एकमत्थ अरिहनै यहै नहिं लेख है। परहां। दुर्नयफल दशमत्थ परत सब पेखहै २॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ अति दुनतर श्रीराम, बाण संघात घातहुव। रावण ताड़न व्यग्र, ग्रीव नहिं गिरनदेत भुव॥ छिन्न धनुष निस्त्रिंश, आदि प्रहरण करि कोपित। निज मूरध दशवदन, रामशर आत दलित तित॥ कर इकइक शिर गहि गगन मधि, उच्छरत झट भुजबीस भट। जनु अतिशय नरसंघटन में, बटा उछारत सुघर नट ३ बाण शाण उत्तीर्ण, समर प्राङ्गण मधि रघुबर। सम कलपान्त कृतान्त, लिये नव एक संगकर॥ नवमूरध उच्छिन्न, किये पुनरपि नवीन लखि। है मुहूर्त्त चित चकित, बिपुल बिस्मय बिवहियरखि॥ बिधि दियो वाहि बरदान यह, जब लौं छिन्न न मध्यशिर। उच्छिन्न कियेहू अन्यमथ, पुनि पुनि प्रकटहिंगे अचिर ४ कुम्भज मुनि संदत्त, बिदित ब्रह्मास्त्र प्रबलतर। अभिमन्त्रितकरि बाण, प्रहार्यो हृदि दशकन्धर॥ शोणित शोण शरीर, बिशिख बर पञ्चबाण गहि। अतिशय सत्वर तीक्ष्ण, धार शर भो प्रबिष्ट महि॥ रण रावण बिद्रावण बिबुध, सकल लोक रावण रहा। भौ पतन तास पुहुमी प्रबल, भयो मोद मङ्गल महा ५ सब सुन्दर सुन्दरी, सहित मन्दोदरि परिवृत। गलदर्बिल जलधार, नयननीरज पुरनिस्सृत॥ सियपति निजपति बिरह, प्रतापानलहि बुझावत। त्रिकुटाचलते चपल, समरभूमी मधि आवत॥ अतिकरत घोर फुनकारयुत, हाहाकार पुकार मुख। संप्राप्त महानिद्रापती, गिरीचरण चित अमित दुख ६॥ मन्दोदरिउवाच ॥ सुरसिन्धुर बर बधू, कुम्भ प्रस्फोटन निखत। त्रिभुवन बिजय प्रशस्त,

[illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible]

इमि बदत है म छिंघी मार्छिधि गिरा मुख गदत है ॥ एकमथ अरिहनै यहै नहिं लेख है । परहां । दुर्नयफल दशमत्थ परत सब पेखहै २॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ अति द्रुततर श्रीराम, बाण संघात वातद्रुत । रावण ताड़न व्यग्र, ग्रीव नहिं गिरनदेत सुत ॥ छिन्न धनुष निस्त्रिंश, आदि प्रहरण करि कोपित । निज मूरध दशबदन, रामशर व्रात दलित तित ॥ कर इकइक शिर गहि गगन मधि, उच्छरत भ्रट भुजबीस भट । जनु अतिशय नरसंघट्टन में, बश उछारत सुघर नट ३ बाण शाण उत्तीर्ण, समर प्राङ्गण मधि रघुवर । सम कलपान्त कृतान्त, लिये नव एक संगकर ॥ नवमूरध उच्छिन्न, किये पुनरपि नवीन लखि । है मुहूर्त्त चित चकित, विपुल विस्मय चितहियरखि ॥ विधि दियो वाहि बरदान यह, जब लौं छिन्न न मध्यशिर । उच्छिन्न कियेहू अन्यमथ, पुनि पुनि प्रकटहिंगे अचिर ४ कुम्भज मुनि संदत्त, विदित ब्रह्मास्त्र प्रबलतर । अभिमन्त्रितकरि बाण, प्रहास्यो हृदि दशकन्धर ॥ शोणित शोण शरीर, विशिख बर पञ्चबाण गहि । अतिशय सत्वर तीक्ष्ण, धार शार भो प्रविष्ट महि ॥ रण रावण विद्रावण विबुध, सकल लोक रावण रहा । भो पतन तास पुहुमी प्रबल, भयो मोद मङ्गल महा ५ सब सुन्दर सुन्दरी, सहित मन्दोदरि परिवृत । गलदर्विल जलधार, नयननीरज पुगनिस्मृत ॥ सियपति निजपति विरह, प्रतापानलहि बुझावत । त्रिकुटाचलते चपल, समरभूमी मधि आवत ॥ अतिकरत घोर फुनकारयुत, हाहाकार पुकार मुख । संप्राप्त महा निद्रापती, गिरीचरण चित अमित दुख ६ ॥ मन्दोदरिउवाच ॥ सुर सिन्धुर बर बधू, कुम्भ प्रस्फोटन निरत । विलिखन विजय प्रशस्त, [illegible] मौक्तिक [illegible] ॥ [illegible]

स्वक लङ्कापति। नाकान्तःपुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति॥ वर बिरचित तित काश्मीरका, पत्रांकुर शोभा अमित। तिहि नाशक भुज भीषन प्रबल, भो किहिं विधि संगर शमित ७ हा लङ्केश्वर प्राण,नाथ जिय जीवन मेरे। मन्दोदरि पतिव्रता, वदन बहु चुम्बत तेरे॥ आलिङ्गन भुज भूरि, करत एकान्त कान्त जब। कहतहुते करिकौल, वहै सब बिसरिगये अब॥ वर लम्बोदर कल कुम्भथल, मौक्तिक मणि एकावली। करिदेहुँ तोहिं आवत अबै, करजदार निद्राभली ८ इककर करि कैलास, धस्यो दूसर त्रिभुवन जित। अष्टादश अवशिष्ट, नाहिं आयो अवसर कित॥ भूरिभव्य क्रव्याद, बीर रणधीर महाबल। रिपु यह द्विभुज मनुष्य, तिया विरहित बानरदल॥ अतिप्रबल देखिये देवगति, वह बिनिहत निज नगररन। बहु वृथा होत सामग्रि सब, उलटि जात जब नियतिजन॥ ९॥

इति श्रीपिपलोदणसनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवपविलासेमन्दोदरी
विलापोनामैकोनपञ्चाशत्समोल्लासः॥ ४९॥

कविरुवाच। मनोहरछन्द॥ वृष्णिकुल जाति जासु अग्रज कुबेर कैसो, कुम्भकर्ण भ्रात पुत्र इन्द्रजीत पायो है। आप दशमत्थ समत्थ हत्थ बिंशति है, काम चार दैत्य रथ विजयी बतायो है॥ लङ्क जैसो गढ़ हद्द परिखा पयोधि पूर, गोबिन्दजू देव दैव दुर्बल दिखायो है। सोसि सोसि खायो खूब खीझि खीझि सारो जग, कोशलकिशोर ताहि क्षणमें खपायो है १ एक काल बीच जाने बिश्व को बिजय कियो, जाही भुजबीस ईश अद्रि को उठायो है। ताको अग्निदाह संसकार समै आयो अब, राम बिन आयसु सो कपिन्द्र कायो है गावत गोविंद अति आचरज भावतहै, अद्भुत अवश्य

खक लङ्कापति । नाकान्तपुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति ॥ बर विरचित तित काश्मीरका, पत्रांकुर शोभा अमित । तिहि नाशक भुज भीषन प्रबल, भो किहिं बिधि संगर शमित ७ हा लङ्केश्वर प्राण,नाथ जिय जीवन मेरे । मन्दोदरि पतिव्रता, बदन बहु चुम्बत तेरे ॥ आलिङ्गन भुज भूरि, करत एकान्त कान्त जब । कहलहुते करिकौल, वहै सब बिसरिगये अब ॥ बर लम्बोदर कल कुम्भथल, मौक्तिक मणि एकावली । करिदेहुँ तोहिं आवत अबै, करजदार निद्राभली ८ इककर करि कैलास, धस्यो दूसर त्रिभुवन जित । अष्टादश अवशिष्ट, नाहिं आयो अवसर कित ॥ भूरिभव्य क्रव्याद, बीर रणधीर महाबल । रिपु यह द्विभुज मनुष्य, तिया विरहित बानरदल ॥ अतिप्रबल देखिये देवगति, वह बिनिहत निज नगररन । बहु वृथा होत सामग्रि सब, उलटि जात जब नियतिजन ॥ ९ ॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविश्राणितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीरघविलासेमन्दोदरी विलापोनामैकोनपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ४९ ॥

कविरुवाच । मनोहरछन्द ॥ वृष्णिकुल जाति जासु अग्रज कुबेर कैसो, कुम्भकर्ण भ्रात पुत्र इन्द्रजीत पायो है । आप दशमत्थ समरत्थ हत्थ विंशति है, काम चार दैत्य रथ बिजयी बतायो है ॥ लङ्क जैसो गढ़ हद्द परिखा पयोधि पूर, गोबिन्दजू देव दैव दुर्बल दिखायो है । खोसि खोसि खायो खूब खीझि खीझि सारो जग, कोशलकिशोर ताहि क्षणमें खपायो है १ एक काल बीच जाने बिश्व को बिजय कियो, जाही भुजबीस ईश अद्रि को उठायो है । ताको अग्निदाह संसकार समै आयो अब, राम बिन आयसु सो कपिन कारायो है गावत गोबिंद अति आचरज आवतहै, अद्भुत अवश्य

बच सुनि सुनि सीय । चहचितही माँधे चुनि चुनि पुनि पुनि पीय १० ॥ अथ मैथिलीमानसविचारः । मनोहरछन्द ॥ तनुभूत तीनताप छेदन छपाकरसो, क्रोधानल अम्भोधर उपमा अनूप है । सार औ असारके बिवेककौक शोकहूको, भ्राजतभवन हर्ष बीजाश्रय कूप है ॥ कालव्याल विषको गोबिन्दहै गरुड़मणि, धैर्य वृक्षवनभूमि मोषप्रद रूप है । सुकृत समूहते समागम चरत राम, बिना पुण्य मिले नाहिं औधपुर भूप है ११ ॥ दोहाछन्द । कविरुवाच ॥ इभि उर अन्दर आनिकै, मैथिलिमत्यमलिन्द । रघुनन्दनपद द्वन्द्व को, गहन चहत मकरन्द ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
दीक्षारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमैथिलीमानस
विचारवर्णनंनामपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५० ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ अलग होय श्रीराम वचन उचरन्तहैं । सुनहु महज्जन सकल सुसन्त महन्तहैं ॥ श्रीरामउवाच ॥ यद्यपि प्रिया पतिव्रता विदित बिन दोष है । परहां । दिव्य शपथ बिन तदपि न मन संतोषहै १ पर मन्दिर माँधि सिया रही चिरकाल है । दिव्य शपथ बिन परस करत किमि हाल है ॥ यह निश्चय बच सुनत बिरञ्चादिक सबै । अरिहां । अम्बर ते अवतरत त्रिदशततिते तबै २ ॥ दोहाछन्द ॥ प्रिया बिरह अर्दित यदपि, तउन लहत रतिराम । रम्यन की रमनीयता, सत्य स्वच्छधिय धाम ३ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ जलदि जाय जानकी, ज्वलित अति जातवेदजित । पावक पावक परम, बिनन्ती बर बितरत बित ॥ मन बच तनु करि मोर, स्वप्न जाग्रत माँधि अबिरत । भयो होय पतिभाव, राम बिन अन्य पुरुषप्रत ॥ तो दह दह दह मम देह हुत, दहन दुसह द्युति दाप है सब सुलखित फल भागीन के, कर्म साखि इक आप है ४

दोहाछन्द॥ दुहिता दिव्य बिदेह की, इमिबानि बचन बिशेश । कीन्हो पूरण प्रज्ज्वलित, पावक पुञ्ज प्रवेश ५ ॥ मनोहरछन्द ॥ कालानल जीहज्वाल साहितहै लीलासर, शोभित सरोजसीय बदन बिशुद्ध है । हर्ष औ अमर्षसने बानरके बृन्दबहु, फूफूत्कार शब्द सर्व अम्बर निरुद्ध है ॥ परमप्रबुद्ध महाराजराज रामचन्द्र, शुद्धिके निधान जियजानी अबिरुद्ध है । चारहु बदनते उचारतहैं चारमुख, पतिव्रत सीय शुद्धशुद्ध शुद्धशुद्ध है ६ ॥ श्रीरामउवाच । दोधकछन्द ॥ शुद्ध सिया मन कायक वायक । देवनते बरणौ रघुनायक ॥ आननको उपमान अतुलित । पङ्कज पावक पुञ्ज प्रफुल्लित ७ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द॥ दिव्य शपथकरि सिया, प्रबल पावकते निकसी । बहुल बरानन बिभा, बिदित बारिजबत बिकसी ॥ बनिता बिपुल बिनोद प्रीति प्रकटित प्रसेदकन । आवृतास्य श्रीराम, निकट निवसी समोद मन ॥ भलभक्ति भाव भ्राजित हृदय, करत न पद पङ्कज परस । करकङ्कण मणि पुनिरमणि, सममत प्रकटहु सुन्दरिसरस ८ ॥ मल्लिकाछन्द ॥ गौतमांगना प्रकार । चारु चित्तमें बिहार ॥ जानकी रही निहार । बार बार बार बार९ हीय होत है सहर्स । पै न कीन पादपर्स ॥ भाव भाम हेरि राम । चित्तभो अनन्द धाम ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेमैथिली
दिव्यशपथवर्णननामैकपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५१ ॥

कविरुवाच । मल्लिकाछन्द ॥ आइकै इतेकबीच । नाथ रामके नगीच॥ हाथ जोरि होय दीन । बीनती सुकण्ठ कीन १ ॥ सुग्रीवउवाच । हरिगीतिकाछन्द ॥ लङ्केश कामिनि नेकनामिनि देह दामिनिसी दिपै । जननी पुरन्दरजीत कीनिधिनीतिकी सितिनाछिपै ॥ बृन्दारकावलिबन्दिता मयनन्दिनी बन्दनकरैं सेवित सुरासुर सुन्दरी

मन्दोदरी बिनतीरैं २ ॥ बरवैछन्द ॥ मन्दोदरी निहोरत युगकरजोर बिनयकरत गतकरिये अवधकिशोर ३ ॥ कविरुवाच ॥ सुनिसुग्रीव सखाके वचन रसाल। बोले दिनकर कुलमणि दीनदयाल ४ नम्रानन है रघुबर वचन वदन्त। महभागिनि मन्दोदरि कहा कहन्त ५ धन्य जनक रघुबर तव जननी धन्य। धन्यबंश नहिं निरखत नारी अन्य ६ साधु साधु सीताबर बिनवत तोय। अब आगे बिभु मेरी कसगतिहोय ७ देखि दशा अतिदुर्बल भरिजलनैन। कृपासिन्धु करुणाकरि बोलत बैन ८ ॥ श्रीरामउवाच ॥ पतिसँग सती न होनो निजकुल धर्म्य। भव्य बिभीषण भर्त्ता हरहर रम्य ९ अचल राज लङ्काचल करु चिरकाल। प्रबल बिभीषण भर्त्ता तव प्रतिपाल १० ॥ कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर रघुबर चित्तचीन। असुरेश बिभीषण भक्तिलीन ॥ किल कृपासिन्धु बिभु बन्धुदीन। लङ्काधिपत्य अभिषेक कीन ११ तदनन्तर वर पुष्पकबिमान। जानकी युक्त चढ़ि किय पयान ॥ संग्रामभूमि लागे दिखान। पेखहु मम प्यारी पद्मपान १२ इहि ठांह भयो फणि पाशबन्ध। पुनि अत्र नचे कैयक कबन्ध ॥ बिधिशक्ति वक्षलक्ष्मण बिदार। इत आयो हनुगिरि द्रोणधार १३ शर दिव्य लषण हरकारि सभीत। प्रापत लोकान्तर इन्द्रजीत ॥ कीन्हो इत कण्ठाद्रिनिकृन्त। केनापि रात्रिचरपति असन्त १४ उपकृति हनुमत बरणत अशेष। जिहिकारि रावण भो भय बिशेष ॥ प्रहरत यह सुनि प्रज्वलत पाप। कुश कपि इत लज्जितभयो आप १५ लीलाबलिहृत वह वाहिनीश। यह सुनत घुमावन लग्यो शीश ॥ सुनि रामदूत तनु छयो ताप। कलुपत ईर्षायुत भयो आप १६ ओपिये तोरहित हनूमन्त। प्रापतकिय दशमुख दुख अनन्त ॥ असुरेश अवस्था कौन कौन। क्षण क्षण माधि

पत जौन जौन १७ ॥ कविरुवाच ॥ सह बिस्मय सिय बूझत सु- नाथ। इतआये किमि तुम प्राणनाथ॥ तब राम सहर्षित हीय होय। वृत्तान्त सुनावनलागे सोय १८॥ श्रीरामउवाच ॥ उपकार सकल सु- ग्रीव केर। हरपत हौं निज हिय हेरहेर ॥ कान्ते निवास कान्तार क्रूर। प्रियजन वियोग उर आधिभूर १९ धनुमात्र त्राणरिपु मनुज भक्ष। तसवास सिन्धु दाहिने कक्ष ॥ घन अघटित अघटित हुती बात। इत अरिमतिकृति की कहा बात २० रावण हरिगो बनराम सीय। इतनी रहिजाती कथा सीय॥ सुग्रीव सखा मम नाहिं होय। मिलतो किमि बदला लैन मोय ॥ २१ ॥

इति श्रीमपलोद्यत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि श्रीरामभक्तगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतारामचन्द्र संवादोनामद्विपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५२ ॥

कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ इहि अन्तर माधि इन्दु, उदय लखि राम कहत्वच। देखिदोष दिनमणी, वियोगी मनुजयहै सच॥ दीशा- मधि शृङ्गार, मदन अहिमस्तक मणिबर । चूड़ामणि चण्डीश, कामीजन कामिमणीश्वर ॥ तिमितारा मौक्तिकहार मधि, नायक- मणि दिखरात है। तरुणीचकोर चिन्तामणी, उपमा याहि अ- नन्तहै १ ॥ कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ इकटक निरखत निशिनाथ शीत। प्राणेश विरह सिसु व्यथा भीत ॥ करयुग मूंदें दुइदृग स- प्रीत। कीन्हीं लीला कुतुकादिमीत २ ॥ प्रश्न ॥ मैथिली के नयन श्रीरामचन्द्र ने क्यों मूंदे ॥ याको उत्तर॥ पहले तितदण्डक बिपिन बीच। मांग्यो हो मैथिलि मृग मरीच॥ मांगहि मृगाङ्कमृग लखि अयान। ताको करिहौं का समाधान ३ ॥ कविरुवाच ॥ इहि अवसर सबजन निशाजान। सुखपूर्वक सोये यथास्थान ॥ परभात बिभी- षण उठै आय। अभिवन्दन कीन्हो शीश नाय ४ ॥ विभीषणउवाच।

षट्पदछन्द ॥ उपकारक अम्बुधी, सदा सेवित अरामगृह । पराक्रम रघुवंश, कथा तिहिबीच थली यह ॥ देवछिन्न दशमस्त, मस्तदश अनाखि अत्र है । शतमख दशशत नयन, मुदित अतिहोत यत्र है ॥ इमि इकइक शिर शत शत नयन, प्रभु प्रमुदित कीन्हे परम । लङ्कानिवास किमि सुखद है, जहां अमित आसुरधरम ५ ॥ कविरुवाच ॥ पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर बिभु ततकालयोग । चामरछत्रादिक राज-भोग ॥ संभाव्य बिभीषण प्रेमठान । पुष्पकरथ सिय लखन किय पयान ६ सुग्रीव बदत भो सुनहु देव । रणभूमि दिपत यह वारि सेव ॥ बहु वाजिब्रात खरखुर प्रहार । हत भये भूरि बिभु बारबार ७ जिहिं रज कारि छायो आसमान । कलकण्ठ कबूतर जासमान ॥ करिकुम्भ निकर भो मदस्राव । घनवृष्टि सदृश अति दुसहद्राव ८ बहु ठौर ठौर महँ मची कीच । सन्तत इहि संगर अवनि बीच ॥ मन्दानिल परिमल मिलितजात । अद्यापि सद्यइव रण प्रकात ९ इमि सुनत विमल सुग्रीव बैन । चितमधि रघुनन्दन चढ़्यो चैन ॥ शुभ सेतु-बन्ध किय कज्ज उत्त । बैदेहि बदतभो अज्ज उत्त १० प्रिय आर्य-नाथ रघुवंशकेतु । तुम कित करवायो बहे सेतु ॥ चित चकित होय इत उत निहार । इतकिय उतकिय इति कह निहार ११ कित किय कित किय कहि बारबार । बूझत बैदेही बहुप्रकार ॥ पट तानि लियो मुसकाय मन्द । तब सेतु बतायो रामचन्द्र १२ आनन बैदेही पूर्ण चन्द । लखि सिन्धु भयो आनन्द बृन्द ॥ शुभ सेतु दाबिआयो उफान । इहिं हेतु भई नाहिं तासभान १३ सुन्दमुख सुख राशि छिप्यो अत्र । अम्बुधि आयो निज थान यत्र ॥ इहिं हेतु सिन्धु मधि बहे सेतु । नाहिं लख्यो लख्यो रघुवंशकेतु १४ तेहीसम हैं सिय सेतु शैल औषध प्रकाश जित नाहिं तैल दीपक सत तम

निशि निशि समूह बानरन लगहि कपि बिमल व्यूह १५ गिरि सिन्धु सलिल मधि किय समान। सुखदरी कियो कीलालपान॥ द्रुत द्विगुणित निर्झर झरतजात। पयकरि पयोधि पूरत पिसात १६ मैनाक बन्धुते भो मिलाप। चुत प्रौढ़प्रीति चष अश्रुआप॥ कपि शिबिर नीर थित निरखि सोय। अगली सब बातैं स्मरण होय १७॥ शिखरणीछन्द॥ जबै दूरापाती बिबुध युवती नैन सुगहा। सरिद्भर्त्ताहारावलि बलय शोभा किय महा॥ तबैये माणिक्य स्फटिक कर्काश्मनिसनो। अशून्यात्मासेतू बिलसत महानाटक मनो॥ १८॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावलजीश्रीसूबहसिंहजीविज्ञापितकवि दीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनिमिलन्दिनी रामचन्द्रसंवादोनामत्रिपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५३॥

कविरुवाच। पद्धरीछन्द॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु। पहुँचे निजपुर रबिबंशकेतु॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत। मग मग मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय। अभिबन्दि अंघ्रि लीन्हे बँधाय॥ मुनिराज पट्ट अभिषेक कीन। सिय संयुत श्रीवर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला एक। सब लोकपाल अवली अनेक॥ उन उत्तमंगिबर अलङ्कार। मणिगण बटोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान। सिंजित मञ्जुल गिर करत गान॥ बिक्रम आडम्बर हेर हेर। लज्जत नहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छज्जत प्रताप। अरु भुवन चतुर्दश बिदित आप॥ यश जूह जासु जानत जनेश। अस राम अमल अभिधान वेश ५॥ कविरुवाच। तोमरछन्द॥ करिकोप अङ्गद आय कपि ओघते अलगाय उचरयो बकारि बक रि

निशि निशि समूह। वानरन लगहि कपि बिमल व्यूह १५ गिरि सिन्धु सलिल मधि किय समान । सुखदरी कियो कीलालपान ॥ द्रुत द्विगुणित निर्झर झरत जात। पयकरि पयोधि पूरत पिसात १६ मैनाक बन्धुते भो मिलाप । जुत मोदप्रीति चप अश्रु आप ॥ कपि शिखिर नीर थित निरखि मोय । अगली सब बातैं स्मरण होय १७॥ शिखरणीछन्द ॥ जबै दूरापाती बिबुध युवती नैन सुगहा। सरिद्वर्त्ताहारावलि बलय शोभा किय महा ॥ तबैये माणिक्य स्फटिक कङ्काश्मनिसनो । अशून्यात्मासेतू बिलसत महा-नाटक मनो ॥ १८ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनिमिनन्दिनी
रामचन्द्रसंवादोनामत्रिपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५३ ॥

कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु । पहुँचे निजपुर रबिबंशकेतु ॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत। मग मग मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय । अभिबन्दि अंघ्रि लीन्हे बँधाय ॥ मुनिराज पट्ट अभिषेक कीन । सिय संयुत श्रीबर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला एक। सब लोकपाल अवली अनेक॥ उन उत्तमंगिबर अलङ्कार । मणिगण बटोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान । सिंजित मञ्जुल गिर करत गान ॥ बिक्रम आडम्बर हेर हेर । ल-ज्जत नहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छज्जत प्रताप। अरु भुवन चतुर्दश बिदित आप ॥ यश जूह जासु जानत जनेश। अस राम अमल अभिधान बेश ५ ॥ कविरुवाच । तोमरछन्द ॥ करिकोप अङ्गद आय कपि ओघते अलगाय उचरयो बका रे बकारि

माथ　मुहिं आप आयसु दीन　तस सबै कारज कीन ७ नित
हीयमें लिय हेर। नहिं छांड़िये पितु बेर॥ सुनि लेहु श्रीरघुबीर। अब
हूजिये रणधीर ८॥ षट्पदछन्द ॥ सह सुकण्ठ सौमित्रि, पवनसुत
आदि सुभटयुत। आवहु यह रणरङ्ग, रसा दरशावत बल उत॥
निरपराध मम जनक, हन्यो तुम ताको फल अब। आप होहुगे आप
यहां अबिलम्ब सपदि सब॥ करि याद बापको वैर बड़, इकक्षण धिय
धीर न धरौं। दोर्दण्ड दूसरो लाउँ ना, इक कर करि मन्थन करौं ९
समर प्रतिज्ञा परम, महत सुनि अङ्गद आनन। क्षोभित अति कपि
चमू, राम लक्ष्मण सहसानन॥ अनपराध बध समझि, अखिल अनु-
कम्पाआई। ह्वैगइ गदगद गिरा, प्रचुर पुलकावलि छाई॥ सौमित्रि
तबै करजोरि युग, तारासुत सन्मुख गये। अपराध क्षमहु इमि उचरि
बच, उर अनुकम्पांकित भये १० भई गिरा आकास, दास ह्वैहै बाली
वह। राम होहिं मथुरावतार, निज सब परिकर सह॥ सो हनिहैं उत
इन्हैं, आप निज बदला लैहैं। अनुचित कृत जो कर्म, प्रभू ताको
फल पैहैं॥ असबाणी सुनि अम्बर उदित, उर अङ्गद मसुदित भयो।
पुनि सकरुण लखि रामादि सब, अबिनय तजि सबिनयरयो ११॥
पद्धरीछन्द ॥ होयगो पितुबध प्रतीकार। सानन्द भयो ताराकुमार॥
युग हाथ जोरि तजि कोप तत्र। आयो इतमें रघुराज यत्र १२ अति
ह्वै सबिनय नुति करत राम। सुनिलेउ दयानिधि धर्मधाम॥ जिन
जिनके तव गुण परत कान। तिन तिनके मस्तक डुलागान १३
चतुरानन चित मधि यह बिचार। इक शिरप्रति युग श्रुतिकिये सार॥
अहिराजबरानन सहस चीन। चहिये द्विसहस तित इकन कीन १४
गुणग्राम राम सुनिहै जु शेष　हु लिहै तब उहि आनन अशेष

यह अभिप्राय विधि उरसि अस्ति। संसार रहौ सब सदा स्वस्ति॥ इहि हेत विधाता बुद्धिमान। सहसानन किय नाहिं एक कान॥१३॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपाखरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेतारात्नय स्तवनवर्णनोनामचतुःपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५४॥

कविरुवाच। पद्धरीछन्द॥ तदनन्तर नुति किय हनूमान। सुनि लेहु राम करुणानिधान॥ वरविनय वदत विसुयुत विनोद। ब्र ह्माण्ड होतहै पीलसोद १ आनहु उहि कच्छप अधोपात्र। अरु मध्य दण्ड अहिराज गात्र॥ ऊपर भाजन भलभूत धात्रि। मच्छर मो हादिक महारात्रि २ शुभ सिन्धु सकल तित तैलपूर। वरमेरु वर्ति काइ जरूर॥ चण्डांशुशोचि उहिं अर्चिआन। कज्जल अम्बर श्या मतामान ३ अरिओघ अमित उपमा पतङ्ग। इत आय करत निज अङ्गभङ्ग॥ रावर प्रताप प्रभु पट्टु प्रदीप। विख्यात निरन्तर सकल द्वीप ४॥ अथ कीर्तिवर्णनम्॥ कैलासनिलय शिव सखा स्वच्छ। उपवेशनथल हिमिगिरि प्रतच्छ॥ स्वर्नदि जिहिं गृह वापिका रूप। चन्द्रोपल दर्पण अति अनूप ५ क्षीरब्धी नवपूर्तक निहार। शुनि शेष देह दीपति विहार॥ करि तितदाकल्लि कोशलेश। बिस्तार जासु बहु देश देश ६ दशवदन दमन सिय रमण राम। कीरति हंसी तव धाम धाम॥ भ्रम भूरि सकल पाई न थाप। सव लोक होय विधि लोक पाप ७ तित ब्रह्महंस को भयो सङ्ग। गार्भिणि ह्वै आ व्योम गङ्ग॥ विश अंकुर वर कुन्दावदात। जायो सुत हिमकर नाम दिखात ८ श्रीराम राम भूण महावीर। हम किमि गुण वर्णन करौं धीर॥ कलाकिचि कामिनी भव्य भार। कस्तूरि तिलक सम नभ विसार ९ निवसति नित प्रति तव निलय लच्छ। पुनि वचन बीच सरसुती स्वच्छ किहि कारण कीरति कपित कन्त नित भ्रमत

रहत दशहूँ दिगन्त १० दोर्दण्ड शुण्डि डिम डमतकार। जिहिसुक्क प्रतापानिलज्ज्वार ॥ जर्जर कीरति पारद चटीसु। फुटि बुन्द बृन्द अवली अटीसु ११ भोगेन्द्रकितक तारक कितेक। कति क्षीरसिन्धु प्रालेय केक ॥ कति पाञ्चजन्य कति कम्क कुन्द। कर्पूर कितक शशि कितक बुन्द १२ अत्युक्ति अकनि जिन कुपित होहु। मत मानहु मिथ्या वचन सोहु ॥ तव तरुण प्रतापानलज्वाल। शोषित सबसागर जल बिशाल १३ पुनि पूरित अरि तिय नयन धार। अति खार सलिल भो इहि प्रकार ॥ कोशलकिशोर को यश अपार। बहुविबुधबृन्द पावैं न पार १४ सविता खद्योतद्युतिमातनोति। जीर्णोर्णनाभि गृहशशी ज्योति ॥ मच्छरसम तारागण अपार। इमि बरणत नभ तव यश बिहार १५ अम्बरअनेक भ्रमरायमान। इहिविधि अनन्तयश जूहजान ॥ मुद्रित मुखवाणी रही मोर। रघुवर बर महिमा महत तोर १६ सानन्द होय दिगवधू बृन्द। गिरि मेरु उलूखल किय स्वछन्द ॥ सुरगङ्गा मञ्जुल मुसललीन। तव कीरति शाली निचयचीन १७ क्रीड़ित कीन्हो बहु बार बार। तिहि राशि यहै है गिरि तुषार ॥ ताकेगण तारागण अनन्त। प्रद्योत सुधांशु प्रांशूभनन्त ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ इहि प्रकार निज हिय हुलासि, तवन कियो हनुमन्त। अङ्गद अमित अनन्दयुत, रघुवर भुज वर्णन्त ॥ १८ ॥

इति श्रीकविगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीमद्धनुमत्कृतश्रीरामचन्द्र स्तवनवर्णनोनामपञ्चपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५५ ॥

अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द ॥ रावण यश शशि रवि, प्रताप धनु शिवमद अहिपति। चारहु थित एकत्र, प्रलयकारक अरिछ्याति। तासु शान्ति शुचिहेतु, खड्ग तव तीरथ सुन्दर। सकल भये ते नष्ट जबै धर्योकर रघुवर ॥ मद धनुष तृतिय [illegible]रत प ये, भङ्गभये अ[illegible]

निशि निशि समूह । वानरन लगहि कपि बिमल व्यूह १५ गिरि सिन्धु सलिल मधि किय समान । सुखदरी कियो कीलालपान ॥ द्रुत द्विगुणित निर्भर झरतजात । पयकरि पयोधि पूरत पिलात १६ मैनाक बन्धुते भो मिलाप । सुत मोदप्रीति नृप अश्रुआप ॥ कपि शिबिर नीर थित निरखि मोय । अगली सब बातैं स्मरण होय १७॥ शिखरणीछन्द ॥ जबै दूरापाती बिबुध युवती नैन सुगहा। सरिद्वर्सांहारावलि बलय शोभा किय महा ॥ तबैये माणिक्य स्फटिक कङ्कारमनिसनो । अशून्यातमासेतू बिलसत महानाटक मनो ॥ १८ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीकूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरत्रिलालेनिमिनाङ्कितनी
रामचन्द्रसंवादोनामभिपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५३ ॥

कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु । पहुँचे निजपुर रविबंशकेतु ॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत । मग मग मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय । अभिबन्दि अंघ्रि लीन्हे वँधाय ॥ मुनिराज पट्ट अभिषेक कीन । सिय संयुत श्रीवर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला एक । सब लोकपाल अवली अनेक ॥ उन उत्तमंगिबर अलङ्कार । मणिगण बरोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तरसों सिय सयान । सिंजित मञ्जुल गिर करत गान ॥ बिक्रम आडम्बर हेर हेर । लज्जत नाहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छज्जत प्रताप । अरु भुवन चतुर्दश बिदित आप ॥ यश जूह जासु जानत जनेश । अस राम अमल अभिधान वेश ५ ॥ कविरुवाच । तोमरछन्द ॥ करिकोप अङ्गद आय । कपि ओघते अलगाय ॥ उचरयो वका रे बकारि

माथ ॥ मुहिं आप आयसु दीन। तस सबै कारज कीन ७ नित हीयमें लिय हेर। नहिं छांड़िये पितु बेर॥ सुनि लेहु श्रीरघुबीर। अब हूजिये रणधीर ८॥ षट्पदछन्द ॥ सह सुकण्ठ सौमित्रि, रवसनसुत आदि सुभटयुत। आवहु यह रणरङ्ग, रसा दरशावत बल उत! निरपराध मम जनक, हन्यो तुम ताको फल अब। प्राप होहुगे आप यहां अबिलम्ब सपदि सब॥ करि याद बापको बैर बड़, इकक्षण धिय धीर न धरौं। दोर्दण्ड दूसरो लाउँ ना, इक कर करि मन्थन करौं ६ समर प्रतिज्ञा परम, महत सुनि अङ्गद आनन। क्षोभित अति कपि चमू,राम लक्ष्मण सहसानन॥ अनपराध बध समझि, अखिल अनु-कम्पाआई। ह्वैगइ गदगद गिरा, प्रचुर पुलकावलि छाई॥ सौमित्रि तबै करजोरि युग, तारासुत सन्मुख गये। अपराध क्षमहु इमि उचरि बच, उर अनुकम्पांकित भये १० भई गिरा आकास,दास ह्वैहै बाली वह। राम होहिं मथुरावतार, निज सब परिकर सह॥ सो हनिहैं उत इन्हैं, आप निज बदला लैहैं। अनुचित कृत जो कर्म, प्रभू ताको फल पैहैं॥ असबाणी सुनि अम्बर उदित, उर अङ्गद प्रमुदित भयो॥ पुनि सकरुण लखि रामादि सब, अबिनय तजि सबिनयरयो ११॥ पद्धरीछन्द ॥ होयगो पितृबध प्रतीकार। सानन्द भयो ताराकुमार॥ युग हाथ जोरि तजि कोप तत्र। आयो इतमें रघुराज यत्र १२ अति ह्वै सबिनय नुति करत राय। सुनिलेउ दयानिधि धर्मधाम॥ जिन जिनके तव गुण परत कान। तिन तिनके मस्तक डुलागान १३ चतुरानन चित माधि यह बिचार। इक शिरप्रति युग श्रुतिकिये सार॥ अहिराजबरानन सहस चीन। चाहिये द्विसहस तित इकन कीन १४ गुणग्राम राम सुनिहै जु शेष। डुलिहै तब उहि आनन अशेष .. मस्तक जिहि सब ब्रह्माण्ड भ र शिर कम्प भये ह्वै भंगस र १५

यह अभिप्राय बिधि उरसि अस्ति। संसार रहो सब सदा स्वस्ति॥ इहिहेत बिधाता बुद्धिमान।सहसानन किय नहिं एक कान॥१६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेतारातनय स्तवनवर्णनोनामचतुःपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५४ ॥

कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर नुति किय हनूमान। सुनि लेहु राम करुणानिधान ॥ बर बिनय बदत बिभुयुत बिनोद। त्रय टूक होतहै पीलसोद १ आनहु उहि कच्छप अधोपात्र। अरु मध्य दण्ड अहिराज गात्र ॥ ऊपर भाजन भलभूत धात्रि। मच्छर मोहादिक महाराति २ शुभ सिन्धु सकल तित तैलपूर। बरमेरुबर्ति काहे जरूर॥ चण्डांशुरोचि उहिं अर्चिआन । कज्जल अम्बर श्यामतामान ३ अरिओघ अमित उपमा पतङ्ग। इत आय करत निज अङ्गभङ्ग ॥ रावर प्रताप प्रभु पटु प्रदीप। बिख्यात निरन्तर सकल द्वीप ४ ॥ अथ कीर्तिवर्णनम् ॥ कैलासनिलय शिव सखा स्वच्छ। उपवेशन थल हिमिगिरि प्रतच्छ॥ स्वर्नदि जिहिं गृह वापिका रूप। चन्द्रोपल दर्पण अति अनूप ५ क्षीराब्धी नवपूर्त्तक निहार। पुनि शेष देह दीपति बिहार॥ करि तितंटाककिल कोशखेश। बिस्तार जासु बहु देश देश ६ दशवदन दमन सिय रमण राम। कीरति हंसी तव धाम धाम॥भ्रम भूरि सकल पाई न थाप।सब लोक होय बिधि लोक प्राप ७ तित ब्रह्महंस को भयो सङ्ग। गर्भिणि ह्वै आई ब्योम गङ्ग॥ बिश अंकुर बर कुन्दावदात।जायो सुत हिमकर नभ दिखात ८ श्रीराम राम भृगु महावीर। हम किमि गुण बर्णन करैं धीर ॥ कलकिंचि कामिनी भव्य भार। कस्तूरि तिलक सम नभ बिसार ९ निवसति नित प्रति तव निलय लच्छ।पुनि बचन बीच सरसुती स्वच्छ किहि कारण कीरति कुपित कन्त नित भ्रमत

रहत दशहूँ दिगन्त १० दोर्दण्ड शुण्डि डिम डमतकार। जिहियुक्त प्रतापानिलज्वार॥ जर्जर कीरति पाण्ड अंशु। फुरि कुन्द वृन्द अवली अंशु ११ भोगेन्द्र कितक तारक कितेक। कति क्षीरसिन्धु प्रालेय केक॥ कति पाञ्चजन्य कति कम्बु कुन्द। कर्पूर कितक शशि कितक कुन्द १२ अत्युक्ति अकनि जिन कुपित होहु। मत मानहु मिथ्या वचन सोहु॥ तव तरुण प्रतापानलज्वाल। सोखित सबसागर जल बिशाल १३ पुनि पूरित अरि तिय नयन धार। अति खार सलिल भो इहि प्रकार॥ कोशलकिशोर को यश अपार। बहुबिबुधवृन्द पावैं न पार १४ सविता खद्योतद्युतिमातनोति। जीर्णोर्णनाभि गृहशशी ज्योति॥ मच्छरसम तारागण अगार। इमि बरणत नभ तव यश बिहार १५ अम्बरअनेक भ्रमरायमान। इहिविधि अनन्तयश जूहजाल॥ मुदित मुखवाणी रही मोर। रघुवर वर महिमा महत तोर १६ सानन्द होय दिगबधू वृन्द। गिरि मेरु उलूखल किय स्वच्छन्द॥ सुरगङ्गा मञ्जुल मुसललीन। तव कीरति शाली निचयचीन १७ क्रीड़ित कीन्हो बहु बार बार। तिहि राशि यहै है गिरि तुषार॥ ताकेगण तारागण अनन्त। प्रद्योत सुधांशु प्रांशुमनन्त॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ इहि प्रकार निज हिय हुलासि, तवन कियो हनुमन्त। अङ्गद अमित अनन्दयुत, रघुवर भुज बर्णन्त॥ १८॥

इति श्रीकविगोविन्दरामविरचितेश्रीचरविलासेश्रीमद्धनुमत्कृतश्रीरामचन्द्र स्तवनवर्णनोनामपञ्चपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५५॥

अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ रावण यश शशि रवि, प्रताप चन्द्र शिवमद अहिपति। चारहु थित एकत्र, प्रलयकारक अरिश्रति। तासु शान्ति शुभहेतु, खड्ग तव तीक्ष्ण सुन्दर। सकल भये ते नष्ट जबै धारयोकर रघुबर मद धनुष तृतिय प्रताप ये, भङ्गभये अरि

अङ्गसह अवशिष्ट सुयश सो प्रथमही, सीय हरत भो नष्ट वह १ किञ्चित कोपकला, विश्राम बहु विभव विभूषित मञ्जुल मूरति राम, भवरुसुज भ्राज अदूषित ॥ रावण इन्द्रजिदादि, हनन करि कियो असुरबल । क्रन्दत फेरु शिवा, कफेरु कंक रटत बिरटंत वि- टपभल ॥ फुर भकर गुग्गुलू धूपधुव, क्रीड़त कपिकाणि निरखसत। आक्रोशत कोणप कुलबधू, भ्रमत द्वीपि रणभू हसत २ ज्ञामाभि मिहिर मयूख, शिशिरसम सैन रेणु करि । वृत्रबैरि बाहिनी, बिलो- कन कीन धीर धरि ॥ बासव जय जिन कियो, रावणादिक न भयोरुज । तेपि भये भयभीत, रावरे निरखत युग भुज ॥ जिन आश्रय पाय प्लवंग वर, सरितनाथ उत्तीर्ण तित । दोर्दण्डप्रचण्ड खण्डनठयो, अरि उदण्ड परचण्ड जित ३ ॥ कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर रघुबर मुदितहोय । आभरण यथोचित जोय जोय॥ सुग्रीव सुग्रीवाभरण दीन । अङ्गद सुज अङ्गद चारु चीन ॥ हनुमन्त हीय दिय हीरहार । इमि यथायुक्त जिय धार धार ॥ सत्कार कियो सब कपिन केर । करि याद सकल हिय हेर हेर ४ बहु बिलसत बर बानर अनीक । किष्किन्धा जावन दई सीक ॥ सिय लषण युक्त बिभु यथायोग । उपभोग करत सम्राज भोग ५ ॥ कविरुवाच । मनोहरछन्द ॥ दाशरथी राम रविबंशमें उदय भये, बनिता विदेह- सुता जासु योग जानी है । छद्मकरि बनते लेगयो लङ्क लङ्का- धीश, करिकै कपीन्द्र सख्य पूर्ण प्रीति ठानी है ॥ पर्वत के पुञ्जकरि कीन्हो सिन्धु सेतुबन्ध, असुर सँहारि औधपुरी वाहि आनी है । निज महारानी निकलङ्क पहिंचानी प्रभू, तदपि कलङ्ककी कहानी ना सुहानी है ६ ॥ कविरुवाच । बरवैछन्द ॥ बालमीकि मुनि आश्रम लषण निहार सँय रखी श्रीरघुबर आयसु धार ७ तजि सिय

लक्ष्मण बिलपत बारम्बार। नैन नियहत निरन्तर अँसुवन धार ८ जो रण मधि न जिआवत मारुति मोय। लखते नाहिं दारुण दुख लोय न होय ६ कियो बैरबड़ हनुमत मोहिं जिआय। हेरत हिय हहरत है हर हरहाय १० मृगपति गज्ज चकित चित मृगपशु जाति। प्रसव समय निज प्रमदा छिन न जहाति ११ अस निर्दय हिय रघुकुल भयो न होय। अरघुराम अस उर निज आवत मोय १२ रघुबर बिरह भयेहु जीवत सीय। नाहिं जनक जायेहु जानतजीय १३ जो न जियत उत रघुबर सीय बियोग। तबै बिधाता निर्दय निन्दायोग॥ १४॥

इति श्रीकविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेलक्ष्मण परितापवर्णनोनामषट्पञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५६॥

कविरुवाच। रोलाछन्द॥ भङ्ग कियो भवधनुष, समर किय जामदग्नि जय। गुरुगिर तजि बसुमती, सेतु कीन्हो पयोधि पय॥ दशकन्धर क्षयकार, रामको कोकहियो गुन। बर्णन करियो दैव, कियो उहिं कथा शेषछुन १॥ षट्पदछन्द॥ श्रीरघुबर भुज प्रबल, बृहत ताण्डव सुन्दरबर। काण्डसौण्ड ब्रह्माण्ड, भाण्ड मण्डित प्रचण्डपर॥ रण शिरनाटक महा, पाठ्याम्बुधि पावनअति। आञ्जनेय प्रविरचित, सुनत नर है निर्मल मति॥ वह सकल पापनिर्मुक्त है, पहल पुण्य पद प्रापहै। प्राप्नोति अखिल अरिभट बिजय, श्रीरघुबर जिमि आपहै २॥ दोहाछन्द॥ यह नाटक हनुमतरचित, निर्मल ब्रह्म निहार। अङ्क चतुर्दश कलित करि, भुवन चतुर्दश धार ३॥ षट्पदछन्द॥ पवनपुत्र यह चरित, नखर करि लिखित शिलन पर। बाल्मीकि लखि कह्यो, रत्नसम रखहु सिन्धुबर॥ आञ्जनेय तसकीन, यथा मुनि हुत आयसु दिय। तदवतार नृप भोज, कियो उद्धृत हर्षित हिय। अरु द्विज दामोदर मिश्र शुभ, ग्रथित कियो क्रमकरि

कलित। श्रीहनूमान नाटक महा, करहु निरन्तर लखित ४॥ अथ श्रीहनुमन्नाटकेचतुर्दशोऽङ्कः १४ ॥ अथपद्धरीछन्द ॥ सोहत सुहिन्द। दूलह महिन्द ॥ राज पिपलोद। मानस प्रमोद ५ धीवर धरेश। रावत नरेश ॥ आयसु उचार। आशय निहार ६ जाहर जहान। नाटक महान ॥ हेरि हनुमान। हीय करिमान ७ पन्थ चितचीन। ग्रन्थ जु नवीन ॥ होइ इकत्यार। सो शिरसिधार ८ टीकम कु-बिन्द। अङ्गज गोबिन्द ॥ नागर सुविप्र। धीय धरि क्षिप्र ९ ये रचित ग्रन्थ। प्रेमिन सुपन्थ ॥ हे हियहुलास। श्रीवर बिलास १० संशय बिलोपि। जो पढ़ै कोपि ॥ चेतसि चहन्त। वांछित लहन्त ११ श्रीरमण राम। धूलसत धाम ॥ पावत सुप्रेम। है सकल क्षेम १२ श्रीवर बिलास। अभिधान जास ॥ कीन्हे प्रकाश। सतपन उलाश १३ सतपन बिशेष। मेटत अशेष ॥ सतपन रखन्त। सतपन पिखन्त १४ ॥ सोरठाछन्द ॥ अति उदार गम्भीर, ललित लसत लखलूटमन। धर्मधुरन्धर धीर, दिन दूलह दूलह नृपति १५ दूलह नृप अभिराम, प्रतिपल पालक पुण्यपथ। निशिदिन रातारास, गुणज्ञाता दातार तरि १६ ॥ मनोहरछन्द ॥ पुर पिपलोद प्रजापुञ्ज प्रतिपाल प्रभु, दूलहनरेन्द परताप हिन्द छायो है। थोरे बयबीच जाने जोरहे सुयशजूह, सुगुण समूह स्वच्छ सुख सर-सायो है ॥ रावरो दशपाय अमित अनन्द भयो, बुद्धि अनुसार यों गोबिन्द गुण गायो है। ऐसो और तेरे जोड़तोड़ को मरोड़-वारो, ठौर ठौर ठाकुर करोड़ में न पायो है १७ छायो है प्रताप पर-चण्ड खण्ड खण्डन में, सुयश समूह दूना स्वच्छ छविछायो है। ऐसे गुण ज्ञान धिय ध्यान दिलजान जैसे, आसमान खानपान सुख सरस यो है　गावत गो बिन्द सुनो दूलह नरेन्द आप, यादि

हेत डोड़िया सुबंश मनभायो है। ऐसो और तेरी ओड़ तोड़
मरोड़नारो, ठौर २ ठाकुर करोड़ में न पायो है १८ ॥ सवैयाछन्द
तीरथ तोमतमाम किये जगदीश सुदर्शन काज सिधावत। ठौर
ठौर सनान किये बहुदान दिये निगमागम गावत ॥ लाट मिला
भयो भलठाट निराट विनोद विशेष बढ़ावत। रावत साहब दूलह
सिंह समान जहान न आन लखावत १६ हाकम हुक उठा
दियो द्रुत काज समस्त स्वहस्त करावत। लन्दनलौं खलुख्या
विख्यात दसावधता अँगरेज सरावत ॥ गावत है गुण गोबिंद य
तित तस्करनाकित में सतरावत। रावत साहब दूलहसिंह समा
जहान न आन लखावत २० आमदको अवलोकत नित्य नि
हारि विलोचन खर्च करावत। नीति विहाय रसे नहिं पायँ सहा
यक सङ्कट में सरसावत ॥ याचकको लखिकै रखिकै गुण हेरि हमेश
हिये हरसावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आ
लखावत २१ मङ्गल सङ्ग उमङ्ग भरे जिहि अङ्गन अङ्गन में नि
आवत। दान सुतोय तरङ्गनते निशिबासर ओघ अरिष्ट वहावत
गावतहै गुण गोबिंद यों जित याचक जे उर इच्छित पावत
रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २
गाहकहैं गुणके गणको द्रुत दाहक दारिद दर्शी दिखावत। बा
रिद सों बरसावत वित्त कवित्तनपै चुनि चित्त लगावत ॥ गाव
है गुण गोबिंद त्यों कवि पण्डित पेखि महामुद पावत। राव
साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २२ आवतहैं
अति आदर अर्पि सुनावत मिष्ट गिरावत रावत। खानरुपान सं
सनमानदरावत मोद महा मनपावत ॥ गावतहै गुण गोबिंद यं
जिहि के चितको कित पार न पावत रावत साहब दूलहसिं

समान जहान न आन लखावत २४ कोष कुबेर सुमेरु परैं करत-च्छिन बेर करैं न जुटावत। उन्नतते अति उच्च उदार गँभीरनते गहरो दरशावत॥ गावत है गुण गोबिंद यों जिहि के बितको कित पार न पावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २५॥ मनोहरछन्द॥ मञ्जुल मन्दील मनोरञ्जन समर्प्यो शीश: पुरट पटासो दिव्य दुपटा दिवायो है। गावत गोबिन्द विप्र पावत महान मोद, रावत धरेश धीय पार नाहिं पायो है॥ रोकरुपैचारसै बिचार से रखेहैं गोद, दूलह नरेन्द्र बित्त बारि बरसायो है। हीय हरसायो सर्वसुख सरसायो प्रेमपुञ्ज परसायो उर अ-छक छकायो है १ दिल दरियाव दिव्य दूल दुलहसिंह, राजनीति रीतिमध्य सुमति सनीरहो। साम दाम भेद दण्ड चारहु उपायनते, रय्यत तमामहू गरीबरु गनीरहो॥ गावत गोबिन्द गिरा कीरति सुधाकरसी, देश देश दिपत दिगन्तलौं घनी रहो। वाह वाह वाह गिरिनाद बादशाह तेरी, जौलौं शशि सूर तौलौं साहिबी बनी रहौ २॥ सोरठाछन्द॥ पुर पिपलोद अधीश, पन्द्रह बीघा प्रेमकरि। क्षिति कीन्ही बखशीश, अति मञ्जुल मालोत्तरू १ श्रीवर श्रीहरि हेत, पुण्यारथ पुहुमी प्रवर। द्विज गहि आशिष देत, मनबांछित है सर्वदा २ शतगुनीस पैंतीस सह, आश्विन सित दल स्वच्छ। सौरि वार दशमी दिवस, पूरणभयो प्रतच्छ ३॥ इति ग्रन्थ पारितोषिक वर्णनम्॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थपारिपूर्ति
वर्णनंनामसप्तपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५७॥

श्लोकः। श्रीरस्तु मङ्गलं चास्तु प्रशस्तं शस्तमस्तु ते